चस्मदीठ गवाह

[कहाणियां]

प्रकाशक

राजस्थानी भाषा-साहित्य संगम [अकादमी]

बीकानेर

लेखक मूलचन्द 'प्राणेश'

प्रकाशक राजस्थानी भाषा साहित्य संगम (अकादमी)
बीकानेर

पैली बार वि० 2037, ई० 1980

मोल सादी जिल्द 11 25
आधी रंगीन जिल्द 15 50

मुद्रक अजन्ता प्रिन्टर्स घी वालों का रास्ता जयपुर

चस्मदीठ गवाह [कहाणियां] **CHASMADITH GAWAH [STORIES]**

पोथी री बात

'चक्वा ! कह बात, घट ज्यू रात ! क घरबीती क्वू क परबीती ? क घरबीती तो नित सुणा, आज तो परबीती कह !'

परबीती सुणनो अर उण म रस लेवणो मिनख रो आदू सुभाव है। इण रो दूसरो पख श्रो भी है क लोग आपबीती सू दूर भागण री चेस्टा कर। उण सू जूझण रो दम-खम बिरळा ई राख। आं बिरळा लोगा न जगावण, चेतो करावण अर त्यार करण रो काम लिखारा र जिम्मै है। ब चाये परबीती लिखो भले आपबीती, उण न इण ढग सू पेस कर जिण सू आपा न सोचण समझण पर मजबूर होणो पड, अर उण व्यवस्था, बा विचारा अर कामा रो विरोध करण खातर कमर कसणी पड जिका बा परिस्थितिया री जडा मे हुव।

साहित्य री कोई भी विधा, कविता हो या कहाणी, नाटक हो या उपन्यास, या श्रौर भी बिना नाव ठाव री जूनी नुवी कोई भी भात, उण री परख इण बात मे ई है क उण म काई कयो है, किया कयो है अर उण री छाप आपण मन पर किसी-क पडी है। जळ मे हळकी सी काकरी भी फक तो एक हलचल हुव अर बा समूच जळ मे घेरा बणावण नै खस। जित्तो वेग हलचल रो हुव बित्ता ई छोटा-बडा घरा बण। कुछ इसी सी ई बात साहित्य री भी कयी जा सक। जिको साहित्य मिनख र मन म जित्ती ऊडी हलचल उपजासी, अर उण रो जित्तो विस्तार जित्ता बडा घेरा म हूसी, उण मे ई उण री कसौटी है।

अठै एक सवाल फेर उठ। हर मिनख मे भला बुरा सस्कार उण र मनरी मायली परता मे सूत्या रवै। साहित्य बा म सू किसा सस्कारा न जगावण मे सुफळ हुव आ मुद्द री बात है। बुराई रो रस्तो ढळाण अर तिसळण रो रस्तो हुया करै। इण रस्त चालता जार नी आव। एक दो पग धर्या पछ थट गडका चढ। इस रस्त म आधेट रुकणो या बावडणो घणो मुसकल काम हुव। फेर भी, पक्का इरादा अर दिमागी ताकता रा लोग इसी मुसकला भी आसान कर लेवै। साहित्य री सार्थकता इण मे ही है क बो मिनख नै ऊचो चढणै री ललक देव। वो बुराइया अर बुरा लोगा सू जूझण री ताकत देवै। जिण साहित्य मे श्रो महान गुण नी है बो साहित्य रै नाव रो हक्दार नी कैयो सा सक। दुनिया रो जित्तो भी अमर साहित्य है बो इणी रीत भात रो ई साहित्य है।

यथार्थता रै नांव पर जिका लिखारा इसी बातां करै, इसा दरसाव मांडै अर इसा सब्द काम मे लेवै जिणां नै दूजै सब्दां मे कारीगरी रै ढंग सूं भी कथा बताया जा सकै, वै आपरै साहित्य नै गिणती रा लोगां रो साहित्य बणावै। वै चला'र आपरा दायरा सिकोडै। जे साफ सीधी-सट्ट बात ई कवणी है तो गळी बगत आडै मिनख मे अर लिखार मे काई फरक है? कलम रा कारीगरां नै धुण बावन साचण री जरूरत है।

मूलचंद 'प्राणेश' रै इण संग्रै री कहाणियां कठई आपबीती अर कठई परबीती रै रूप मे कथीजी है। असल मे लिखार री तारीफ इणी मे है कै वो हरेक परबीती नै भी आपबीती रै दरद मे भिजोय देवै। लिखार रा मन दरद ई उण रै साहित्य रो रस है। औ दरद जित्तो ऊंडो पूगै, जित्तो ऊकळ आवै बित्तो ई उम्दा रसायन त्यार हुवै। औ रसायन ई सगळी जीरण अवस्थायां नै काट अर उण रोगी रा काया-कल्प करै। प्राणेशजी री कहाणियां मे औ दरद, औ रस लाधसी, इण विस्वास सूं औ संग्रै राजस्थानी प्रेमियां रै साम्हैं राखतां हरख हुवै।

—रावत सारस्वत
सभापति,
राजस्थानी भाषा साहित्य संगम (अकादमी)
बीकानेर

दीवाळी
2037 वि०

कहाण्या री कहाणी

"चसमदीठ गवाह" म्हारी मौलिक कहाण्या रो दूसरो सकळन है। इण सू पला एक सकळन "ऊकळता आतरा सीळा सास' र नाव सू "राजस्थानी भाषा प्रचार प्रकाशन, बीकानेर" सू प्रकाशित हुयो हो। इणा सकळना री सगळी कहाण्या सन् 1962 ई० सू लगाय'र सन् 1975 ई० ताई रै लाब समय मे लिखीज्योडी है। म्हारी पैल पातरी कहाण्या आगळ्या ऊपर गिणोज जितरी पण ही नही। लोग, लोक-कथावा, प्रवादा, झटूक्ला इत्याद नै आधार बणाय'र कहाणी र नाव सू वेचवाण जरूर किया करता। आज री थिति न्यारी है। आज राजस्थानी री कहाणी, किणी भी प्रादेशिक भासा रै कहाणी साहित्य सू टक्कर लेवै जिसी है। इणा लारला दोय दशका मे जितरो कहाणी साहित्य सिरजीज्यो, जितरो जे प्रकाश मे आय जावतो तो निस्चै ही थिति सरावण जोग हुवती। पण प्रकाशन री कमी रै कारण केई दीपता कहाणीकार मातृभासा नै छोड र बीजी भासावा म लिखण लागग्या।

कहाणी वतमान साहित्य री एक महताऊ विधा है। इण री सुरूआत तो कदाच् मिनख रै मिनखपणै र साथै हीज हुई। सस्कृत साहित्य री कहाण्या तो चमत्कारी पण है। जिकै राजकुमार बरसा ताई कक्क रो काळो आक तक नही सीख सक्या, प० विष्णु शर्मा कहाण्या र परताप छव महीना मे राजनीति मे पारगत बणाय दिया। मध्यकाळ मे कहाणी मनोरजन रो साधन बणी। बातपोसा रो एक इसो वग तयार हुयो, जिको फकत वाता ही वाता मे आपरी उदरपूर्णा अर लोगारो मनोरजन कर्या करतो। राजस्थानी रै पुराण साहित्य मे आज भी इसी सकड् कहाण्या लिखी मिलै।

पण जिकी कहाणी री वात अठै करीज रैयी है, उण रो जनम अठै नही हुय'र समदरा पार हुयो। अग्रेजी सू बगाली अर बगाली सू हिन्दी तथा बीजी भासावा म साहित्य री आ धारा पहुची। राजस्थानी भासा में कहाणी री प्रवेश मोडो हुयो। लारलै दोय दशका सू छुट-पुट कहाण्या लिखीज रयी है। थोडा घणा कहाणी सकळन भी प्रकाश मे आया है, पण राजस्थानी भासा र प्रयागात्मक सरूप न देखता अ कोई घणा कोनी।

प्रस्तुत सकळन री सगळी कहाण्यारा पात्र गावरा है अर गाव र परिवेश रो ही जिकरो ज्यादा हुया है। जे कठ कोई सहररी बात कवण मे आई है तो वा पण गावाऊ ज्ञान र ओळी-दोळी रवण आळी है। सगळी कहाण्यारा पात्र अर घटणारा

मनोकल्पित है। केई र नाव अथवा घटणारो मेळ बैठ ज्याव तो उणनै एक संजोग ही जाणनो वाजिब है। इण संकळन री कहाण्यां आजरी विचार अनुरूप बणी है अथवा नहीं इण बाबत हूं खुद'र मूंहडै मियां मिठ्ठू नहीं बण'र सगळा भार पाठकां उपर छोडूं हूं।

राजस्थानी भाषा साहित्य संगम (अकादमी) बीकानेर रा सभापति श्रीरावतजी सारस्वत जे इण कहाणी-संकळन ऊपर निजू ध्यान देय'र कार्यवाही नहीं करता तो कदाच् ओ संकळन पाठकां ताईं पहुंच ही नहीं सकतो। इण सारू धन्यवाद अथवा कृतज्ञता ज्ञापन इत्याद सब्दांरो प्रयोग कर हूं म्हारै तथा सभापतिजी रै बिचाळै जिको हेत भर्‌या संबंध है, उणनै कम करणा नहीं चावूं। आशा है राजस्थानी-प्रेमियां नैं म्हारो ओ प्रयत्न जरूर दाय आसी।

बीकानेर   मूलचन्द 'प्राणेश'
दसरावो 2037 वि०

टीप

दोय कूकरिया

कातीर पछल पख मे एक कुतडी ब्याई। वैर खातर बासर तीन च्यार टाबरा भेळा हुय र घरा मायसू आटो, गुड अर तेल माग माग'र भेळो कर्यो। कुतडी नै सीरो कर परो र नाख्यो। छोरा घुरीन थोडा ऊडी करी अर उणर ऊपर छज दय र तयार कर दी। इण धध सू निरवाळा हुया पछ छोरारी मीट कूकरिया कानी गई— कूकरिया फक्त दाय हीज। 'थोडी ताळ पला तो तीन कूकरिया हुता, पण इतरी ताळ म एक न कुण उठाय'र लेयग्यो ? —एक छोरो बोल्यो।

बीजोड छोर घुरी मे मुहडा घाल र सावळ निग करी—कुतडीर कन ता कूकरिया दायादोय हीज हा। बोल्या— हा भाई ! तू साची कव है एक कूकरिय न तो कोई न कोई लेयग्यो।'

तीजोडो छोरा घुरी सू थाडा अलायदो ऊभा हो। बो उठ सू हीज कवण लाग्यो— लेय थारो माथो गया ! मा कया कर है क कुतडी ब्यावती वेळा एक कूकरिय नै खाय जाया कर है।"

'हैं आपर जायाड न ही खाय जाव !'—पलड छोरै इजरच भरय सुर म कयो !

"काई जोर कर बापडी, भूखा मरती ! मा कया कर है क—जे कुतडी नै ब्यावती वेळा कोई रोटी टुकडो लाय र न्हाख देव तो वा आपर बचिया न को खाव नी। —तीजोडा छोरो बोल्यो।

जण हीज भूख न बच्चा खावणी कव हे।—बीजोड छोर कया।

पलडो छारो इण बात सू झेंप्यो अर आपरी झेंप मिटावण खातर बोल्या— 'आपान किसी बहस करणी है—चाव कोई उठाय'र लयग्यो हुव अर चाव उणन कुतडी खायगी हुव ! आपा र ऊबर्‍या जिक ही चाखा।

"चोथा भू डारो म्हन पतो का है नी, इणा माय सू एक कूकरिय न तो हू पाळूला।' चाथोडो छोरो बोल्यो।

'तू पाळ तो थन पाळत नै कुण मना कर है, पण काळिय कूकरिय न तो हू केई न हाथ ही को लगावण दू ला नी। पलड छार अधिकार र सुर म कया।

अरे भाई ! तू थन पसद आव जिक न पाळ लेईज। म्हनै ता कूकरिया जोईज, रगन कोई चाटणो थोडो ही है। —चोथाडो छोरा बाल्या।

आपू आपरा कूकरिया बुधवार'र छोरा घरै गया।

कुतडी नै ब्याई न खासा दिन हुयग्या। वा हमैं किणी रै सा'रै नहीं— अटीनल उठीनल घरा म फिर घिर'र आपरी पेट भगई फेर सेव अर पाछा घुरी मं आय र कूकरिया नै चू घाय चटाय'र सारो दिन उणार कनै सूती रव। खास आळा घरा'रा छोरा अर छाऱ्या कुतडी री घुरी र ऊपर बण्या ही रव। कदे ही काई छोरो केई कूकरिय न घुरी मांयसू काढ र आपरी गोदी म उठाया फिर, कदे ही कोई। कोई छोरो आपरी मांमू छन रोटी रा टुकडो लाय र कूकरिया न न्हाख, कद ही काई छारी खीचडो अथवा रावडी लाय'र उणानैं खुवाव। कुतडी र सूवावड दूध अर छोरारी पाळखेट सू कूकरिया दिन दूणा अर रात चौगुणा बधण लाग्या।

एक दिन दानू कूकरिया च् डा चाट र आपरी मा र पसवाड सूता। सूता सूता ही एक कूकरिया बोल्या— मा ! अ मिनख जमार आळा कितरा भला है। व आपां नैं कडा सोरा राख है।'

कुतडी सूती सूती कूकरिय री बात सुण'र आपरो मुहडो थाडा ऊपर न कर्‌या अर घुरी र बाहरन कानी झाकती बोली—'बेटा ! तू घज ताईं भोळो है। अ मिनख जमार आळा ऊपर सू दीस है ज्यू है कोनी। अ मुतलबर बिना कदी आगळी ऊपर मूतिया तक को करनी।'

'पण पण आपा सू इणारो काई स्वारथ सझ ?'

"स्वारथ सझ है बेटा ! इणार घरारी सारो दिन रुखाळी कर टू जद अ बासी-कूसी दोय बगळ रोटी रो टुकडो आपानैं न्हाख है। नहीं तर अ लोग इतरा खाटा हुव है क स्वारथ सझिया पछ आपर सागी बापनै भी टेमसर टुकडो नहीं देव।

'पण मा ! म्हे इणारै कांइ काम आवा हां।"

'थे भी काम आवो हा बेटा ! आज जे एक चाबीदार रमतियो मोलाव तो दुकानदार रुपिया दस बार धराव पण इणारा छोरा छोरी मुफ्त म सारा दिन थासू खेळ करता रव। दोय आगळ टुकड सट्टू इणार टाबरा रो मनोरजन हुय जाव ता इणा मिनखा र काइ घाटो है ?

पण फेर भी आपारी पाळखेट तो अ हा जेकर अ नहीं हुवता तो ।'

अै नहीं हुवता तो आपा इणार आसर भी नहीं हुवता ! जीवणरा हजारूं मारग होता बेटा ! आपरा बडेरा आपा आळ दाइ इणांरो आसरा नहीं तकता। वै आपरी पट भराइ रो साधन आप खुद जुटावण री ताकत राखता पण सजाग ? अ पा नी बयू बेटा ? इणां मिनखा आपर बराबरिय भायां नैं भी आपां आळी हालत मैं पटाय राख्या है। उणा रा एक टक भी बिना गुलामी र नहीं टळ सक। अै

दुस्टी रोटी रो लालच देय'र भाई मनै सू भाई रो गळो कटावण मे भी नही चूक।"—कुतडी आग भी कइ कवती पण उणनै आपर बीत्य दिनारी कोई बात याद आयगी। उणर कारण उणरा कठ गळगळा हुयग्या अर आख्या आसुवा सू डबडबाईजगी। पण भोळा कूकरिया इण बात सार काई समझता !

डील म नो काळियो कूकरियो कबरिय सू कई सठो हो पण बोलाकडो कम हुतो। ब आपरी मा तथा भाई री बात चीत सुण र मन मे धारणा बाधी क आपा तो इणा मिनख जमार आळा' नही ता फाकी म आवा अर न ही गागळ दोय आगळ टुकड र सट्ट बराबरिय भाईरा गळो रोसा। जलमिय जीव नै तो एक न एक दिन मरणा हीज पडसी पछ थोड स जीवण खातर क्यू किरतब गाठा।

कबरियो कूकरियो डील म दूबळा हो त्यू हीज दिमाग रो भी ठस हो। मार खवण र उपरात भी उणर बात हिय ढूकी कोनी। मन म विचारण लाग्यो क मा क्वो भता ही पण वापडा मिनख जमार आळा है भला जीव ! आपा जे इणा र आग थोडी सी पूछ हलावणी कर दवा तो आपारी किसी पूछ घसीज है ! बापडा सगळी उमर रोटी रो जुम्मा तो ओढ।

बामर छारा र कूकरिया थुथकारियोडा तो हा हीज दोनू छोरा एक साथ धुरी ऊपर ढूक्या अर एक एक कूकरिय न गोदी म उठाय र लेयग्या।

कबरिय कूकरियै नै छोरे दिन भर रमाव मेलाव। वा भूखो हुव जद आपरा च्यारू पग ऊपर न कर'र पेट बताव चू चू करतो पूछ सू लटका कर अर जीभ सू लपर लपर धणीरा पग चाट। छोरा मन ही मन घणो राजी हुव। वा आपरी मासू छान रोटी तेल म चूर चूर र कूकरियन खुवाव। रोटी खुवाया पछ वा आपर कूकरियरी गुद्दी झाल र काळिय कूकरिय ऊपर हाख। ओ कूकरिया काळियर ऊपर पडतो ही घोरको कर र उणरी गुद्दी झाल लेव अर नीच हाख'र फपेडा देव। जद काळियो धूळ म आधो सा कळीज जाव तद उणनै छाड र आपर पूछ आळी झटी ऊची कर र धणीर खोळ म आय बड। छारो इण कूकरियरी लडाक वत्ति दख र मन मन म फूलीज अर काळिय आळ धणा न अगूठा बतावता बोल— देख्या नाडा ! म्हारलो कूकरियो कडाक लडाक है !

काइ बताऊ भाईडा ! ओ ता बडा रही निरड्या र ! राटा तो सारी दिन मळकतो रव अर ढिस्स आळ दाइ पडया मरवा कर। लडणा लडावणो ता अळगो रयो केई न भुस तक कोनी बाळणजागा । काळिय रा धणी रीसा बळता कव।

काळिय न मारी बाता रो पलडो प्रत्यक्ष प्रमाण मिलग्या। मन म माच्या— मारी कयोडी आ बात जद साच निकळी ह ता बोजाडी भी कूडी कानी। आपारी

प्रतिना तो भगवान पुजासी। छोरा रोटी रो टुक्डो हीजको देवनी, बलाय जाण! आपामू तो टुक्ड र खातर भाई जड भाईरा कठ को मौसीज नी।"

कबरिय न तो रोटी सोटी मिल जाव पण कालिय नै आपरी पट भराई खातर खासी न्हासा दौड करणी पड। वो जीमणवारर बखत घरर कवळ आय'र बठ जाव। काई छोरो छापरो राटी लेय र आगण म आव उण वळा कडकडाय र पड अर छोरर हाथा मायसू रोटी खोस र वो जाय जो जाय। लार सू छोरो कूक—मा मा! म्हाळी ळोटी तो कुकळियो लेयग्यो।'

वळण दे आगडो ही बेटा! तू ले आ राटी भळ लेय जा। ओ पीटए पड्यो इण पाप नै उठाय र घर लायो, जिक दिन ही म्हे जाण लिया ही क आ लीतडी टावरा न सुख सू टुक्डो को तोडण देवली नी, पण।"—छोर री मा चूल्है कन बठी गडवा कर।

इया करता करता दोनू कूकरिया छक जवान हुयग्या।

कबरियो कुत्तो हमें आपर धणी र घर आगली बाखळ मे बठ्यो रव। कदे ही कोई बाहरलो मिनख अथवा आपरो डागर ढोर बाखळ म पग देय देव तो ओ उठ सू ही हो हा कर र उणर सामो न्हास अर बाखळ सू बाहर कर र ही पाछो फिर। ज कोई बीजा कुतियो अथवा कुतडी भूल चूक'र बाखळ मे आय बड तो पछ कबरिय रो पूछणो ही काई! वो एकी सीकउी जाय र उणरा कठ पकड'र आडो न्हाख लव अर पछ उणर ऊपर चढ र जगा जगा सू बटका भर भर र तोड। पगा हेठलो कुतियो अथवा कुतडी घणा हा रोव डाड अर विणती भर्य सुर म दीनता देखाव पण कबरियो तो उणन जद हीज छाड जद कोई बीजो आदमी बिचाळ पड र छुडाव। छोगे आपर लडाकू कुतियरी जिक तिक आग बडाई कर जिक न सुण र कबरिय रो काळलो सवागज उरळो हुय जाव। उणा राटी वखतोवखत मिल।

कालियो कुत्तो दिन रा तो सगळ दिन गवाड आळ पीपळरी छिया सूत्यो रव अर रात पड या पछ कई हुवतगाळ घर मे जाय बड। घर मे ढकी उघाडी जिकी भी रोटी रावडी मिल जाव उणसू चोखी तर पेट भराई कर र पाछो गट्ट र कन आय सूव। भखावट रा लुगाया उठ र आपूआपरा ओटाणा सभाळ। ओटाणा कव म्हार तो कन ही मत आवो। व पेट-बळती कुतिय रा सापो घाल। कुतियो गट्ट कनै सूत्यो सूत्यो सगळी बाता सुण पण पट पापी जिणन भरण खातर सिंझ्यारा सागी रो सागी हीलो उठावणो पड।

एक दिन रातरा सन्ना आळ टाइ कालियो कुतियो एक चौधरी र घर म उपराडा कर र बड्यो। घररा सगळा जणा आगण म सूत्या। वै आगण मे बड र कई ताळ ओम्नायो—केइ री भणकारो तक नही पड्यो जद वो बीदपगनिय—बीद

पगनियैं ओटाणै कनै गयो अर थू डी मू ओटा गो अळगो करण लाग्यो । ओटाण र असवाड पसवाड कासी अर पीतळरी थाळ्या ऊभी कर्योडी । कुतिय री थू ड र हलक सू थाळया एक बीजर ऊपर पडी । उणा री आवाज सू घर मे जाग हुयगी । कुतिय मिनखजमार आळा र चजनै आळग्या । तुरत फुरत उठ सू निकळण री विचारी, पण पागोथिया र आडी चौधरण पलां सू ही तयारी कर्या सूती । वा उठ र बोरटीरो एक लाठो सारो दुग लेय'र पागोथियां र आडी ऊभगी । काळिय चकासो देख्यो अर मन मे सोच्यो—धणी ताळ लगायां घर आळा सगळा जणा जाग जासी अर आपूआपरै हाथा रो बट काढसी, जिण सू तो चौधरण र हाथरो एक भचीड खावणो चोखो ! कुतिय आख्या मीच र अधारो कर्यो अर पागोथिया कानी एकीसीक गडगडिग्रो । कुतिय र सीध मे आवता ही चौधरण सोट फटकार्या । सोट पाधरो कुतिय रै कमर र बिचाळै पड्या । जोर री धायोडी जाटणी र हाथरो सोट चाकी ता काइ छोडतो, पण कुतियो दांत भींच'र उणन सयग्यो अर पागोथिया री नाळ चढ र बाहर आयग्यो । वो बस बाहर बाहर हीज आयो । उण पछ उणसू ऊभो रईज्यो कोनी खाय तिवाळी र उठ हीज पडग्यो । उण उठ र गट्ट ताइ पहुचण री धणी ही कोसिस करी, पण पेट म भूख अर कमररी पीड उणनै उठ सू हालण ही को दियो नी । वो चौधरण र जीवन रोवतो उठ ही पडरयो ।

काळियो आपर कारनामा र कारण जग चावो नही तो गांव चावो तो जरूर हो हुयग्यो । जठ कठ ही दोय आदमी मिल भेळा हुय र बठ काळिय कुत्त रो जिकरो जरूर चालै । आज भी पीपळ आळ गट्ट ऊपर गवाड मे सूत्य कुतिय न दख र बात हाली—"अर ! आज ओ अठ किया पड्यो है कोई माल चेपग्यो दीस है ।

'बडो हराम गिडक है दिन अर रात सुख सू सास ही को लेवण देव नी ।'

'हरामपण मे तो आड ही आक है । काल म्हारो घी आळो कुलडियो ज्यू रो ज्यू उठाय'र लेयग्यो । पूरो ड्योढ किलो घी हो ।"

'अर भोळा भाई ! थार तो ड्योढ किलो घी घणै सू घणो बीस पच्चीस रुपिया रो हीज हुसी, पण म्हार तो इण गिडक सधाण आळ सगळ लाडुवा रो सित्यानास कर दियो । पूरपूर तीस रुपिया अर सित्तर पीसा लाग्योडा हा ।'

'बस ! थार तो तीस इक्कतीस रुपिया रो हीज रोजणो है । कठ ही बापड चोखिय री छाती नै ही देखो—अणतर अजमरा र खातर वणायोड मादळिय री जात सीर रो मिनट एक म नास कर न्यो । बापड धण काड सू इग्यार किलो देसी घी रो सीरो करायो हो ।'

"हां हां ओ गोळनीलाग्यो गिडक है हीज बाळणजागा ! म्हारी छारी र सासर सू सावण री तीज ऊपर गोथळियो आयो जिक न राटजाया है ज्यू रा ज्यू उठाय र लेयग्यो ।'

जरा बस, म्हार आळी आट आळी गोथळी भी इण गिंडक सू टळी कानी। पूरो पाच किलो देसी गहुवा रो हाथ सू मद री जात पीस्याडो आटो हो। म्हा सारी रात राडजाय र जीव न रोवता काढी। गाड आळ यवत बटाऊ बताया।

अड गिडक र ता गाळी मार देवणी चाईज।'

अर भाइ! गोळी मार'र क्यू माथ पाप चढावो हो हमक नगरपालिका आळा आव जद पकडाय क्यू नहीं दवो! वा र बापडा र तो पान-बीडी आळा पीसा बापर जासी अर मडिकल कालेज आळा न चीर फाड सीखण सारु कुतिया हाथ आय जासी।

पकडाव काई इणन तो अगरबत्ती मवणी पडसी! बडा है नी गऊरो जाया जिका गगा न्हावणो पडसी मारो नी माळ र करम म साटरा भचीड।

कुतियो सगळा री वाता सुण अर मिनखजात र कपटी रूप न मनरो मन म तोल। ज उण वळा कुनिय न मिनखा आळी बोली आवती ता उणा सगळा नै वूमता जरूर क थ ता कया करो हो नी क कुत्तो झोळीवायरो फकीर हुया कर है तो पछ हू किसो कुत्ता कोनी।

इणा आदम्या म बगची आळा बाबा भी हा। वा बोल्या— भाया! य कुतिया दीसतव्या ता भला दीसता ह ज्रर भूखा मरता गाचळी मारता है। इसकी एक कदर हम तुम सू बतावता है।

निहाल करो महाराज! सगळा जणा एक साथ बोल्या।

देखा भाया! कुत्त री जात है रानी तो करगा स रया? पट का करडा दिन म नाय बार कूरणा पड। मेरी ता या सलाह है क इण क लिए किलो किलो धान सगळ घरा सू भेळा करक बगचा म डाल दो। मैं अपणी रोटी क साथ साथ इस कुतड की भी एक रोटी सक देऊगा।

महाराज री बात सगळा जणा र हाडाहाड लागी। धान भेळा करण सारू एक आदमी न मुकर कर दियो। महाराज कुतिय न चुचकार र आपर साथ बगची लेयग्या। कालिय न रोटी दानू बखत नियम सू मिलण लागगी। वा रोटी खाय र सगळा दिन बगेची मायल नीमड र हेठ सूत्यो रव। कइ दिना बाद जिक आदमी इण कुतिय न भूडो बतावता व सागी ही आदमी आपर मुहड स कवण लागग्या — अर! ओ कुतियो तो बडा शान्ति आळा जीव है। ओ तो भूख र विख हीज तरळा मारतो हो।

ववरियो कुत्तो हमे बूढो हुयग्यो। उणरा दात खिरग्या अर आख्यारी सोझी भी मोळी पडगी। सरीर म खतरो कटग्यो क पूरा सुसीज तक नहीं। इणरी आ

आ हालत देख र घर आळा छोटकियै छोरा नै कैयो —"रै ! ओ कुतियो तो हमैं निकारो हुयग्यो, कोई बीजो कूकरियो लाया ।"

कबरिय ओट र ऊपर सूत्यै सगळी बात सुणी । उणरो जीव घणो ही दोरा हुया, पण जोर काइ कर—धाप'र बूढापो।

छोरा कठै सू एक छाटो सो गुलरियो भळै उठाय लाया । उणरा सैगळ घर आळा लाड कर । कबरिय रा कोई दांत तक नहीं पूछै । भूख र कारण उणरी काया पडण लागगी । वो फेर भी दोय च्यार टक तो मरतो हो घर रै आगै पड्यो रयो, पण भूख तो आपरै नाव सू ओळखीज ! उणरा उठ सू पग छटग्या । वो चेताचूक हुयोडो वासर घरा म ढबळैसा खावतो फिर्‌यो पण केई लव भी लागण दिया नहीं । छेवट फिरतो फिरतो बगेची आय ढूक्यो । बगची आळ नीवड हेठै काळिय कुत्त न सूत्यो देख'र उणरै पगा र घट्या सी बधगी । वो बगीची आळी पिरोळ मे देवळी सो ऊभो ।

काळियो कुत्तो जदकै उमर म तो कबरिय र बरावर रो हीज हो, पण खडसण कम करण र खातर अज ताई ढील साबत । व पिरोळ म बडता ही कबरिय नै ओळख लियो । बाल्या— भाईजी ! उठ ही क्यू कर ऊभग्या आगा पधारो । डर भय छोडो, हू थार आळो ही छोटकियो भाई काळियो हू ।"

काळिय री बोली सुण र कबरिय र जीव मै जीव बापर्‌यो । वो उठ सू तिगतो तिगतो काळिय र कनै तो पहुचग्यो, पण थाक लर कारण उणसू ऊभो नहीं रइग्यो अर तिवाळा खाय'र उठ हीज पडग्यो ।

आपर भाई री हालत दख'र काळिय री आख्या मे आंसू आयग्गा । वै गळ गळ हुवत पूछ्या— भाईजी ! इया किया ?'

मरत न दिन सात हुया है हाडा रो मत सगळा टटग्यो ।" कबरिय पड्य पड्य ही बतायो ।

जितर बगेची आळा बाबो रोटी लेय'र आयग्यो । वै दोय कुतिया नै बठ्या देख र रोटी न गाधी आधी कर र दोनुवा र आग हांखदी ।

कबरिय र पट में कइ मसवाणा पहुची जद थोडो सत बापर्‌यो । वा उठ र गावळ वठग्यो ।

कबरिय री हालत देख'र काळिय नै आपरो मा रो कैयाडो सगळी बाता याद आयी । बोल्यो—'भाईजी ! मा कया करती जिकी बाता साची निकळी या कदी ?

साळ आना साची ही भाया ! मिनख जात बडी स्वारथी । स्वारथ सम्या पछ दाळिया ही नही देव । म्हारी हालत देख--हू इण लोगारी फाकी म आय र इणा र आग लटापरी करतो रयो, इणारी एकी सीटी र ऊपर विना साच्या बिचार्‌या भायारा गळा कर्‌या अर अनेक जिनावरा न दुख दिया । हू इणा रा हुकम मानता रयो जितर तो दाय वगळ रोटी रो टुकडा टकोटक मिलतो रयो अर जद म्हारा हून थाकग्या अर उणार हुकमा म नही हालीज्यो तद वा स्वारथिया वा दोय वगळ टुकडो देवणो भी बद कर दिया । हू जगा जगा डाक्‌या अर कवळ कवळ टोया, पण अन्नवाणी तो अळगी रई केई धावण रा पाणी तक आन्या नही बताया । आज पूर सतवाड र बाद अन रा दरसण हुया है । कवल कवत कबरिय र कठा म आयाडी वाता कठा म हीज रई अर उणरी आख्या मू चौसर आमुवा री झडी लागगी । वो पाछा आटाळ पडग्यो ।

oooo

आतम-बोध

सेठा र रामपुरो माम्हो आयो। दूकानदारी चाली तो इसी चाली क बाही लक्डी भी नहीं पड़ै। सेठा र मन मे रय रय र धोखो आव क आ उक्त पली क्यू नही आई ! जे आज सू दस बरस पला आ विध लाग जावती तो आजरी जिंदगी वोजी तर री हुवती। सेठा नै आपर सगळिया रा घर वार याद आवण लाग्या अर साथ ही उणार टावरा रा गुलाब रा फूल हुव जडा चरा !

'सुखी रैवो जजमान ! चौरग लिछमी बगस भगवान।"—पिंडतजी र अचाचूक र आशीर्वाद सू सेठा री विचार लडी टूटी। वा र मुहडै सू रट्या रटाया आखर तिसळ'र निक्ळ्या— *पाय लागू गुरा !"*

'जीवता रवा ! दूधा न्हावो अर पूता फळो ! धधो बाडी कडो काई चाल है ?'

'आ तो आपरी कृपा है सा ! आपरा वचन सफळ हुया ! दाळ रोटी आळा पीसडा मुख सू बापर जाव।

'सगळी भगवती री कृपा है—सेठा !"

'हा आ वात तो खरी है ! म्हार तो बळिहारी उणारो हीज आसरो हे।"

'मेवा कर सो मेवा पाव।"

सेठ आपर गोड हेठल गल्ल माय सू एक रुपिय रो अधराणो सो लोट काढ र गुरु महाराज नै झलावतो बोल्यो—"म्हा काळसिग्यिा बदा सू तो कायरी सेवा ताब आव है पण ।'

"ठीक है, भाई ! जितरी ताब आव उतरी ही चोखी। बीज केई री बराबरी थोडी ही है।'—कवता क्वता महाराज रुपिय रो लोट जेब म घाल र दूकान सू हेठ ऊतर'र बामणा आळ वास कानी टुरग्या।

❖❖

'वधाई है सेठा ! वात चीत पक्की हुयगी है।'—दलाल श्रीकिसन कयो।

'आ तो था भायागी कृपा है ! लोग तो कया कर है क—साइ हुव सामूकूल तो अवळा हुवो अनक पण म्हारो निजरो ओ मानणो है क—भाई हुव सामूकूल तो सगळा काम मध जाव।"—सेठा लच्छो फटकार्यो।

"मानिय री वात तो है हीज। रामायण म तुळसीदासजी कया भी है—जाकी रही भावना जसी प्रभु मूरत देखी तिंह तसी।'

"वार मुहड तो साक्षात् सरस्वती जी ही बोलता हा !"

"पलड पोहर रा आदमी हा, बापडा ।

'और कोई घोचा बाजी तो को हुई नी ?'—सेठ मुद्द री बात ऊपर आया।

'और ता सगळा जणा राजी है पण बाई री मा थोडी नाका थोथी कर है क उमर कइ ज्यादा है ?"

'पछ ?'

"पछ आ बात ही तय रई क बाई री मारी छाती म हजार पाचसौ रुपिया छान बाळणा पडसी।"

रुपिया ता हाथ रो मल है। —सेठ गरज भर्‌य सुर मे बाल्यो।

"रुपली हुव पल्ल तो वा रोही मे ही चरल ! सेठा, रुपिया दख्या मुनिया रा मन भी थिर को रवनी। वा बापडी तो लुगाई री जात है !"—दलाल श्रीकिशन वखाण सा दियो।

"पछ तो कोई घोचा-बाजी को हुवनी का कठ ही अडी नही हुय जाव क रुपिया भी वळ जाव अर लोगा म मानखो ।

'सठा ! श्रीकिशन अ धोळा तावड मे को कर्‌या है नी घणी दुनिया दखी है।'

आ तो थे जाणा सा।"

म्हे काई जाणा थे खुद देख लिया, घोड जितरी बीन्दणी घर म आव क नही।'—दलाल श्रीकिसन सेठा न धीरज दिराया।

□□

श्रीकिसन दलाल री बात पक्की निकळी। सेठा र घर मे बीदणी आयगी—घाड जितरी ! पण रुपिया भी छाटी एक वळग्या। सठा र जदपि रुपिया अठ री कमाई रा ही हा, कोई दिसावर री कमाई रा नही पण सठा र मन म लोभ जागग्यो—पाछा रुपिया भेळा करण रो ! एकलहट्टो बाणियो ता हो हीज मनरा जाण्या करता कुण पालता ? सठ दुकान आळी जिसा म रळावट करणी पळायदी—पडन राखी। दुकान ऊपर काम करणिया लाग जद छुट्टी कर र आपर थान मुकाम वूहा जावना तद सेठ लार सू—रणका म नदी आळी रत, गगाजळ म कूव आळा पाणी, घी म टालडा, खर मोया म कलचरिया मोती गुलाब म चूनो छडछडील

मर वासवाळी मे घोडामोय अर हिरणचवो—रळाय मिळाय'र गट्टुम-गट्टु कर देवता। लट्टा, बनायता दुसाला ग्राढणा ग्राद हळक्ट मातरा लाय'र मल दिया। वाम मिणिया अर मूज, बाजार म मस्त सू सस्ता मिलता जिका मगवाय लिया। भाज म सहर म जितरा भी खाटा सिक्का मिलता, उणानै ग्राध पडघ पोसा मे खरीद र नियावता अर खरी भाज र साथ रळाय दवतो। सेठ रो अदाज साचो निकळ्यो—लोग रोवता डाडता ग्रावता अर जिकी जि स जडी भी मिलती अर जिक भी भाव मिलती लेय'र बूहा जावता। परखण जाचण नै किणनै बखत मिलतो, लोगा न ता रावा कूक सू ही फुरमत को मिलती नी! सठा रै मनगे चायो हुयो।

ㅁㅁ

सेठा र माथरी बायली हुती। छारी अकूरडा री फूस बधै ज्यू बध्या करै है। बायनी नै बधती देख'र सेठाणी नै चिता रवती क कठ ही साख सगपण पक्को हुय जाव तो ठीक रव! बखत भडो है। बखत रो भडापणा वा खुद भुगत चुकी हुती, इण खातर दूध रो बळ्या छाछन फूक देय र पीव। पण सठाणी जद-कद ही बाई र साख सगपण री बात सठा र आग टारती तद सठ एक ही उथळा दवता— बाई मोडो हुव है! अज ताइ ता बायरी पूरी तर बरसा री भी ता को हुई नी। थे क्यू चिता करो हो। छारा रा कोई घाटा कानी। घाटा पीमरा माडो हुव ह। आपा र ऊनै भगवान रो दियो सव कुछ है। काइ दाम हजार ज्यादा लसी, बस!'

सेठाणी र पाचवा टाबर ग्रावतू। घर मे किणी बात री कमी नही पण सठाणी तो दिन दूणी अर रात चौगणी पीलरीजती जाव। नवा महीनो बीतग्यो। सेठाणी रा पग सूज'र हाग हुव ज्यू हुयग्या। डीलरी नाडा शिळकण लागगी। सठ जठ कठ ही काई मण समझण ग्रथवा वद हकीम रो सुग उणन तड र लाव। वो वताव जितरा पावडा भर पण सठाणी रो डील ता दिना दिन कटता ही जाव। सेठ दौडा-न्हामी कर कर र धापग्यो। छेवट न्सव महीन रा काई पाच सात दिन निकळ्या हुसी क सठाणी र पट म दरद उठयो। सेठ खुद न्हास र दाइ नै बुलाय र लायो। दाई घर म पग ही पूरा को दियो नी, जितर बाळक पाधा बाहर आय पड्यो। एक कानी बाळक बाळमाद न्यिो अर एक कानी सठाणी जीव। रावण भेळा रोवणो। मान आगण म पडी देख र टाबर सगळा डाडण लागग्या। इण चकासनै देख'र सेठ सतरो-बतरो हुयग्या।

रावा-कूका सुण र वास-मुहल्ल रा लोग भळा हुयग्या। सठा न समझावणा दव— सेठा हुई घणी ही खोटी! पण किण र सार! भगवान री मरजी! इनरा ही लेख-सस्कार हुतो, बापडी रो इण घर म! हर करी मा सिर धरणी पडसा।

सेठ गुम-सुम सो हुयोडा सगळा री बाता सुण। जितर केई ग्राय'र कयो— सठा दिन थाडो ही है सो दूकानरी चाबी झलावो सो हलाव चलाव रो सामान लावा।"

हलाव चलाव र सामान रो नांव सुणता ही सेठा र मन म एक हीक सी ऊपडी। उणानै नदी ग्राळी रेत, कअ ग्राळो पाणी, डालडा कलचरिया माती, चूनो, घोडामोथ ग्रर हिरणचबरा पत्ता, ग्रसल जि सा र ऊपर तिरता सा दीख्या। सठ नै बूच ग्रायगी ग्रर वो उठ ही निस्त हुय र पसरग्यो।

लोगा बारी बारी सू सठा री अटी सभाळी, दूकान ग्राळी चाबीर खातर, पण चाबी तो हार मोर हुयगी नही लाधी सो नहीज लाधी।

✿✿✿✿

विरतेसरी

डोकरडी कदाच् कई ताळ भळ भी उडीकती पण जठ र कळकळन तावडियै अर बळबळती लू उणर धीरज रो बधो ताड दियो। उण घणा ही आपरा हाड गोड काछबो भळा कर ज्यू कर परा र ओटलियरी सरण कर्या पण ओटलियो राडजायो मिनट पाचेक म गली राड गाभा फक ज्यू छियान फक र नागो ततूड हुय र ऊभग्यो। डाकरडी उण टटपू जिय ओटलिय न छोड छिटकायो अर उठसू उठ र ऊभी हुई। उठता ही उणरी मीट सामल दुकोसिय धोर ऊपर पडी। डोकरडी नै धार री ढाळ सू ढळतो एक आम्मी रो झबको सो पड यो। उण झबक उणरी टूटयोडी आसा रा तार साध दिया। वा ओटलिय सू पावडा दसक अळगल मूळ री जडा म जाय बठी। पाणी आळो कुबिया खाल र उण आपरा सूखता कठ आला कर्या।

डोकरडी नै आज काल री चलगत ऊपर रीस आवण लागी। उण मन म विचार्या—दखो राडजायो जमानो आयो है। आज म्हन अठ तपस्या करती न पूरो अठवाडियो हुवण लाग्या है, जजमान री बात तो अळगा रई केई बवत बटाऊ तकरा दरसण नही हुया। जमानो ता बापडो पला आळो हो—जिक न्निा म्हार वा (पलड स्वर्गीय पति) न सास खावण नै भी फुसत नही मिलती। जजमान ऊपर जजमान। ओटलिय र आळो दोळो मगरियो सो मड्याडो रवता। म्हार सहर देखण रो मौको सपलडो हीज हो, पण अळगी गावडिय म जलमी-ऊपनी एक छोरी न अठ आया पछ कद ही मा बाप वन भाया री रवाड तक नही आई। आवती भी क्यू कर? पीहर म जिकी जिसारा नाव नाव हीज सुण्या उणान दखा ही नही परोटी पण ही उण घर मे धान दाणरा तो किसा बखाण। चावळ चीणी री भी काई गिणतकार नही ही। लाड जळेब्या, पेठा इत्याद मिठायारी भडळा भरी रवती। लापसडी र कूच अर सीर र कव नै तो पूछतो ही कुण। इसी जिसा तो गाया र बाट म काम आवती। दूध दही री नदिया ववती। पण पम्ली रा भाग तो पुटिय जोगो। औ सुख इण काया न कठ? मतर खरक्स म ब मागीनग्या अर ।

"क्यू सा! लालरो ओटलिया आ हीज है?"

००

अचाचूक र सवाल सू डोकरडी आसकी अर सावचेत हुय'र आयाड आदमी र मास्ट्रो जोयो। वा लालर गे पल्लो खाचनी बोली— 'हा जजमान ! आप नाव लियो उणारो ओटलियो ओ हीज है।'

'लाला तो को नीस नी ?"

इण सवाल डाकरडी र काळज न हलाय न न्यो अर उणरी आख्या सू चौसरा आसू ववण लागग्या। उण डुसका खावती वतायो— काइ बताऊ जजमान ! वा (बीजाड स्वर्गीय पति) न तो विलाईग्या न आज तीन बरसा र अड गड हुयग्या !"

भगवान री मर्जी है सा०, काइ जोर ?'

जोर कामरो नागलो जजमान ! घडी म घडियाळ वाजगी। दोय तीन लोही री उळट्या हुयी। लोग बापडा हकीम वगा न लय र आया जितर जितर तो उणारा हंस ही उडग्यो !'

'साची बात है, डोकरी ! आ काल री हीज बात ह—म्हारलो भतीजो (बडोड भाइ रो वटो) राजी खुशी दिनुग रा सत गया हा अर उठ पहुच्या ही कानो, जिक सू पला ही मारग म पान लागग्या। टव टब आळा बापडा तुरत फुरत गाडी ऊपर घाल र उणन घर लय आया। घणी ही भाड फूक करवाई पण उण तो आप रा आगलो घर सिवरयो अर म्हे सगळा हाती हाती करता ही रया !

साची बात है खूटी र बूटी कोनी।'

'हुवा सा वा मायो तो मारगो लागो, पण लारला न तो जमडड भरणा हीज पडसी। वा लार एक लूतडा छाडग्या ह। सवार दिना लाग्या बो भी तो जवान-मोट्यार हुसी अर आज आळो काचो काळपा माय रया काल लाग महणा मोसा दवणा सुरू कर देसी। आ जाण र एक गडरा पुंजिया फाड्या है।

'साची है, जजमान ! आज तो एक गड र पुंजिया सू हा बाळक रो मुहडा ऊजळा हुय जासी पण दिना लाग्या च्यार गड करिया भी पिडा छूट कोनी।

'आ बात तो ह हीज ! आज ता इण काच मरण ऊपर न्यात बिरादरी आळा छोट मोट टाबर टीगरा न हीज मजसी ता मलसी, पण काल दिना लाग्या बूढा-ठेरा भी जीमण न आवना सक कोनी।'

"बस न्यातडिया र सगळा सू मोटा दुख आ हीज ह।'

पण न्यात बिरादरी न छोड र जावा भा तो जावा कठ ? हा, ता क्रिया करावण नै कुण हालसी ?'

"ग्रौर तो कुण हालसी, जजमान ! वसीरा बीजा सगळा लोग तो कुसमैर कारण ग्रापरा ढोर डागरा ग्रर टावर टीगरा नै लेय'र पजाब कानी गयोडा है, गाव मे फक्त हू एक जणी था जजमाना रो काम काढण नैं रई हू। थे ग्रठ ग्रोटलिय ऊपर सामग्री लेय ग्रावता तो हू केई छोर छीपर कनै सू सहारो लगाय र दोय लोटा पाणी प्राणी रै नाव ऊपर ढळवाय देवती पण ।"

पण न्यातडिया तो क्रिया ग्रापर ग्रास्या र ग्रागै कराया बिना पतीज कोनी। जे इण तर मान लेवता तो म्हे क्रिया गगाजी रै घाट ऊपर कराय ग्रावता !"

'गगाजी ग्राळी क्रिया तो नाव मात्र री क्रिया ह, जजमान ! बठ तो ठग बैठा है।"- डोकरडी गगागुरुवा ऊपर रीसा बळती बोली।

'कई हुवो सा लोगा र तो चाले है पण म्हानै तो गाव म हीज करावणी पडसी !"

००

मा ! ग्राज तो कोई ग्रायो हुसी ? --मोच र ऊपर सूत डोकरडी र छोर पूछ्यो।

'हा, बेटा ! ग्राज भगवान निवाज्या तो है पण !"

तो ला रोटिय ग्राळो चूरमो। तू कवती ही नी कै जजमान ग्रावतो पाण हू तनै चूरमो खुवासू।'

'पण बेटा ! जजम न तो क्रिया ग्रापर गाव मे करासी।' 4.31 / 1483

'गाव म करासी ? —छोरै ग्राग्या म चमक लाय र पछ्यो।

'हा बेटा ! जजमान रै बिरादरी गाळा करडा ग्रादमी है सो सगळो काम ग्रापरी ग्रास्या र ग्राग करासी। थारो बाप भी घणी बार गावां म जाय र क्रिया कम कराया करता। जजमान ऊठ लेय र ग्राया है।'

"तो तू गाव जासी ?'

"ना र बटा ! हू राड रूडी कठ जासू ! तू थोडी हिम्मत कर लेव तो काम पार पड जाव।'

"पण मा ! म्हार सू तो सावळ सर उठीज बैठीज ही कोनी, ऊठ ऊपर ठरीजसी किया ?'

'ग्रा तो म्हनै ही दीस ह म्हाहा बटा ! पण गया बिना सर भी तो कोनी। गाव मे जे कोई बीजो छोरो ग्रापरो डवतो तो हू ग्राधणो ही मेल दवती पण गाव मे तो नर नाव चिडी रो जायो तक रयो कानी !'

"म्हारी मरधा तो बिल्कुल नहीं है, पछ तू कव है तो दोरा सोरा जासू परा।'

००

'ओ काई क्रियागुर लाया हो !' गाव आळा गा गो करी।

'पण थान कामसू मतलब है क क्रियागुरु र ताज मोट डील सू ।"—मृतक र शाई सफाई यस करी।

चाखो, भाई ! म्हानै किसो वहम करणो है, काम पार पड जासी जद न्यत लेसा।'

'हालो हालो । —गाव आळा सेजडी कानी टुरिया।

००

वापरै मरणर उपरात विग्त रो सगळा छोटो मोटो काम छोरो हीज करया करतो पण करतो आपर श्रोटलिय ऊपर । कठ ही जे छोटी मोटी चूक भूल रो अदेसो हुवतो तो छोर री मा पलामू ही सहारो लगाय दवती। इनरी वडी यात विरादरी र वठा थका क्रिया करावणरो मौको छोर र सपनडो होज हो। वो सेजडी र हठ ग्रामण ऊपर जच र वठ तो गयो पण वठा पछ उणर हाथा पगा म कपकपी हुवण लागगी। कई तो बीमारी र कारण छोर गो सगीर रटियोडा हा अर कई पण मार लोगा रो डर इण कारण सू उणरो सगी" पसीन सू तरातर हुयग्यो। पण फर भी छोर मृतक र काव री वात राखण खातर हिम्मत सू काम लियो अर क्रिया री तयारी म लागग्यो।

क्रिया रो सगळो सामान उण आपर आसण र श्रोळा दाळा जचाया। मृतक र छोटकिय भाई नै पिंडदान करावण वास्त आपर सामन वठाय लियो। सपलडा काम सुरू हुया मृतक र प्रतिनिधि डाभर पूतळ सू। छोर डाभरा दाय तिणकला आग्र ऊभा एक-बीज र ऊपर मल र पूतळ री धड करी अर उणर विचाळ एक तिणकलो ऊभो अर दोय तिणकला हठ ऊपर आडा जचाय र पूतळ न पूरो करयो। काच सूतरी जिन्नोई अर कोम्पाण पिछावडी रा गाभा पराय'र उण पूतळ न आपर अर मृतक र छोटकिय भाई र विचाळ मल दियो। छोर रो चतराइ अर हाथा री फुर्ती देख र उठ बठा जिक यात विरादरी आळा आपर माणी मुहड सू उणरी सरावणा करण लागग्या।

छोर सगळा काम हुसियारी स करया, पण रान्यि खातर आटा गूत्ती वेळा उणरो मन डुळग्यो। महीन बीस दिना री काढ्योडी भूख, आट नै दखता ही चेतन

हुय र लाव नाव करण लागी, पण इतर मिनखा र बठा थका ग्राटो क्यूकर फारीज। छोर मन काठो कर र गूदयोड ग्राट माय सू एक दीयो हुव जितरो ग्राटो तो राख लिया ग्रर बाद बाकी सगळ ग्राट रा एक माटो सारो रोटो बणाय र पुळपुळ म भार दियो।

छोर मृतक र छोटोड भाई न समझायो क ज्यू सुभ काम म सगळा काम जीवणाड हाथ सू हुया कर है त्यू हीज इण प्रेत कम रा सगळा काम डावोड हाथ सू करीजसी। जठ कठ ही टीकी टमका रा काम हुवै, वो सगळो ग्रगती ग्रागळी सू करीज सी। मृतक र छोटोडो भाई इणरी बात रो हकारो भरता थका ग्रापरी घाटकी हलावण लाग्यो।

छार पूतळ न ग्रापर हाथ म उठाय लिया ग्रर मृतक र भाईन कयो क थे इणन धीर धीर थार हाथ सू सिनान करावो। वो सिनान करावण लाग्या। इणर बाद पूतळ न कपडा लत्ता परावणा पागडी बाधणी सुख सेज मे सुवाणणा इत्याद जिका जिका काम छारो भोळावतो रयो मृतक र छाटाड भाई पूरा कर दीया। छेवट बात जिनोइ र ताग ताडण ऊपर ग्रावती ग्रडी। मृतक र भाया भेळप्या पाच रुपिया रो लाट छार र पगा ग्राग मेल र तागो तोडण रा कया पण छारो ग्रडग्या। बोल्या— म्हार ता ग्राज मोतिया गेत वूठा ह ग्रर थे पाच रूपली फैक र टाळणा चावो?

'ह राम राम! सामल रो तो घर पाणी र बाहळ वयग्यो ग्रर इणर मोतिया खत वूठा है। —कनै बठा जिक लोगा खिखर करी।

छार हिम्मत का हारी नी। बोल्या—'थे क्वा जिकी बात ता ठीक ह जजमान! पण म्हान किसा थ व्याव म बुलाय र सीख विनागी देसा? म्हारा ता काम ही प्राणी र लख दोय नोटा पाणी ढाळण रा है।

नागा विचाळ पड पडाय र छेवट बीस रुपिया म तागो ताडाया ग्रर छार नै कागोळ घालण वास्त कयो। छोर तागा तोड दिया ग्रर राटिय न चूर र उण मायसू थोडोसो चूरमो ग्रर दही एक ग्राकपन ऊपर धाल र कागोळ घालण वास्त मृतक र छोटाड भाइ न पकडाय दिया।

मृतक र भाया भेळप्या ग्रापूग्रापरी तरफ सू प्राणी र लार पटिया लिया। खासो मारो सूको रसोइ रो सामान ग्रर मिठाई भेळी हुयगी। मृतक रा छोटाडा भाई जितर कागोळ घाल र पाछा ग्रायग्या। उण ग्रावत पाण सपलडा नियागुर न ग्रापर हाथसू दवो दय र जीमाया ग्रर पग दाब र ग्रासीस ली। छार री छाती फूलीज र सवा गज चौडी हुयगी। जिका लोग ग्राड दिन मुहडा तक नहीं देखणा

दायजै री दाझ

पैंडो अर वरी तो वाढ़्या सू हीज वढ । ठाकर बळवतसिंहजी वहीर हुवण खातर घणी ही ताकड करी, पण लुगाया आळा ढामा टोपा तो निवडता सा निवड । अठीन उठीनै मिळ भिट र वहीर हुवता हुवता, रात पोहर ड्योढ पोहर बीतगी । ऊहाळ री रात हुव भी कितरीक—मुट्ठी भर । भु य पडी मु हड आग बीस-बाईस कोस र अड गड । ठाकर बळवतसिंहजी जे एकलओठी हुवता तो घणी चिंता करै जहडी बात नही ही, व आपर ऊठनै पडछाय'र भाख फाटण सू पला पला गाव मे जाय बडता पण आज तो बीदणी साथ ही अर वा भी भरय खोळ । इण कारण ऊठन पडछावणो तो अळगो रयो, जोर सू टोरीज तक नहीं । अज ताइ बायली पूरी एक महीन री भी तो को हुई नी । नही कर भगवान, पण जे ऊठर हलका सू बाळक लोही भरीज जाव तो काय म हाथ घाल । कवण-कथण आळी बात हुया लोग मूरख तो बताव जिका बताव हीज अर धोळा भाडीज जिका न्यारा । ऊठ आपर मत ववतो जाव ।

खाजू आळ टीव कनै आवता आवता भाख धमगी । ठाकरा र अमल पाणी रो व्यसन । वा चोखो सो अछळेटो देख र ऊठ नै जकाण्यो । बीदणी नै ऊठ रो गोडो दाब र हेठ उतारी । आप चाय रो पाणी उकाळण सारू छाणो बळीतो भेळा करण न सभ्या । जावता बीदणी न कयग्या—म्हाला ? हू छाणो-वळीतो लाऊ जितर थे चूलडी खाद राग्या । बायली न सावळ रलविय मे पळेट र सुवाण दीजो ।

ठाकर तो बीदणी न भोळावण दय'र राही मे रळग्या । बीदणी बायली नै रलविय म पळेट'र एक कानी सुवाण दी । ऊठ आपरो थाक्लो उतारण सारू अछळेट म नस पाधरी कर्या बठा । चूलडी पूरी खादीजो ही कानी, जितर ठाकर सा बळीतो लेय'र पाछा आयग्या । बादणी वासद सिलगा'र चायरी तपली चाढी । ठाकरा, मापरो आट माय सू ठेसरियो काढ र अमल रो मावो कर्या । बादणी चाय आळी तपली गळनो अर तासळा लाय र ठाकरा र कन मल दिया । वा आधी सी तासळी चाय आप लेयली अर बाकी बीदणी नै पलावता बोल्या— इण म थोडी सी चावडी पडी ह, जिकी रो गुटको थे ही लेय लेवो मू कइ थाकेलो उतर जासी ।

अमल पाणी कर र ठाकरां ऊठ रा बारो अर आसण साबळ जचायो अर गोडो दाब र बीदणी न पाछी ऊठ ऊपर चढाई। वा चोखा तर जच र बठगी जद रलचिय म पलेटयोडी बायली न झलाय दी अर आप खुद भी ऊठ री माहरी कूट र नारन आसण जाय चढिया। ऊठ न टिचकारी दय र उठाण्या अर मारग धाल दिया।

चोखा मुहू सानना हुयग्यो। मुय अज ताद मान आठ कास र अड गड बाकी पडी। बीदणी र मगळी रात रा ओझको मू उणरा माथा भर पिनाण आळी आगली घोडी मू टकराय जाव अर कद लारल आमण म बठ्या सुमरजी री छाती सू। वा आसण म बठी बठी फुरानारो भी कर। उणरा आ हालत देख र ठाकर बोल्या— "हाला! थारा पग थकग्या हुव ता बायना न म्हन झलाय दवा। हू उणन कई ताळ राखू जिनर थ पगा न थाडा अठी न उठी न कर र उरळा कर लवा।

बीदणी माचाणी ही थकयोडी ही। रात भर बायला न पगा ऊपर राखण सू उणर पगा म चीमळया सी चालती ही। व बायली न रलचिय म चाला तर पळेट र सुमरजी नैं झलाय दी। बायली अठीन उठी न कजथीजगा सू थाडा रोयो तो खरी पण ठाकरा उणन – 'हुवा बाया! हुवा बाया!' कवता थपड र पाछा जवाय दी।

सूरज भगवान आपरी मसा किरणा न साथ लय र ऊगया। ठाकरा बायली र मुहड उपरला गाभा थाडा सो अळगा कर्या। बायना रा चहरा मोहरा दखता ही रणा र मुहड मू अणधाऱ्यो थुथका घाळाजग्या। बायली काइ है रूपगे डळा।

००

ठाकरां र आपर भी बाई ही। गाग निछार हाथ लगाया लाहा आय नाव ऐहडो उणरो वरण। सीवी सूरत वखाण जहडी। आवरी पाक्या सी चीरखी आख्या। सूवरी चूच सरीखो ताखो नाक। परी आडी माळ अथवा खोर र खूण म उभी न ज कोई दख तो उणरा अर गवरज्यारा ओळा भोळा पड। बाई फक्त चहर महर ही फूठरी हुव ऐहडी नात नहीं वा भागवळी पण ही। उणर भाग सजोग मू हीज ठाकरा न अधराजिया रा गनायत बणण रो मौको मिळ यो। पण आजर जमान म फक्त रूप गुण अर भाग-सजोग न कुण गिण? आज ता लाग चाव कितरा ही सठयोडा हुवा वेटी काळ न तो थूथ थूथ र खावण री हीज भावना राख। ठाकरा र मुहड मू गद ठठो निमकारो निकळ्यो पण बीदणी इण बात कानी क्यू ध्यान दवती? बायली चुपचुपानी दाळेमा र खोळ म निसक सूती।

ऊठ न ज्यू ज्यू गाव नडो आवतो दीस त्यू त्यू उणरा पग ख़नावळा उठ। ठाकरां री मन लहरी भी उणर साथ साथ आगै बधती जाव।

"जान रो बधाईदार हरी डाळी हाथ म लिया अर गळडब्ब तरवार घाल्यो माड र अगवाड आय र बधाई दी—जान आयगी है सा! बधाय ज। बींद राजा हाथी र होद तोरण वादैना।

बधाईदार री बात सुण'र माढ आळा रो मन नव नव ताळ ऊचो कदण लागग्यो। बाई री मा रो हियो पसर र सवा गज चवडो हुयग्या। ढोल नगारा, सहनाई भेर भूगळ इत्याद बाजा री रळी-मिळी गडगडाहट गाव नै ऊचो उठाय लियो। वदूका री जगा मारचग्या रा दडीड हुवै। सामेळै री तयारी हुई। गाव गेर भेळी हुयोडी। जान्या अर माढया स गवाड ऊफण। बींद राजा गवाड र बिचाळ ढालिय ऊपर अगूणो मु हडो कर्यां जठा। उणा र ओळो दोळो छोटी मोटी ठाकर्या रो गरणाटियो मच्याडो। बींद राजा र आग राजपुरोहितजी उत्तराद मु हड बठा शांति पाठ पढ। इतर ही राव सा र कामदार आय र ठाकर बळवतसिहजी र कान मे हाळ सीक कयो—ठाकरा! आपनै रावसा याद फरमाया ह।

राव सा र अचाचूक र तेड मू बळवतसिहजी र पगा र घटया सी वधगी। ठीक समळ र मौक ऊपर बुलावण रा अरथ काइ हुय सक है? फिर भी लूठ रा डोको डागनै फाडै! ठाकर ठर्या वेटी रा बाप। बो जायो र जगन्नाथ ज्यारा हेठ आयाहाथ! ठाकर भागल मना कामदारजी र साथ साथ जानीवास गया। रावजी ढालिय ऊपर विराजमान। एक खवास उणा न हाको पाव। ठाकर पहुचता ही राव साहब मू जहारडा कर्या। रावजी खवासजी न आख री सन न्य र बाहर भज दिया। जानीवास म रया फक्त तीन जणा—रावजा (बेट रा बाप) ठाकर (बेटी रा बाप) अर रावजी रा कामदार।

रावजी आपर हाथरी सन कर'र ठाकर बळवतसिहजी न आपर नडा बुलाया अर होळ सीक कयो—ठाकरां! आपा र ओ सबध एक सजाग ही समझो!'

'हू तो इणनै वरदान ही मानू हू सा!"—बळवतसिहजी लुळनाई र सुर म बोल्या।

"आ बात तो थ कना जिकी ठीक है पण।"

'पण काय री सा! हू म्हारै डोळ सारू ओछो रा उतर्या नी अर लिछमी सी वेटी आपरी थेपड्यां थापण नै दी ही हीज है।"

आ बात ता आप ठीक फरमावा हो सा! पण हमै फक्त गूमसूम म बात पार को पड नी।'

पण जान तो गवाड मे वठी है।"

"गवाड माय सू किसो उठीज कोनी।"

राव साहब री आ बात सुणता ही ठाकर बळवतसिहजी सूना हुयग्या। उणा र मुहड सू बोल तक नही निकळ सक्यो।

टम बहुत ही कम है, सिरदारा ! अबार ता अठ आपा घर घर रा हीज हा, कामदारजी तो आपणा हीज आदमी है। आपन जिको कइ दवणो-लेवणो है, उणरी खुलती कर देवो।'

'खुलनी काइ करू राव साहब ? कोई भी बाप आपरी बेटी न देवण-लेवण म पाछ को राख नीं। म्हैं भी म्हारी सरधा सारू दस-पदर हजार रुपिया नकद अथवा गण गाठ र रूप म देवणा तेवड्या है, जिक राजर चरणा म अपण कर देसू।

इतर मे तो पार को पड नी ठाकरा !'

'तो किया पार पडसी ?'—ठाकर बळवतसिहजी गरभराया।

राव साहब इण बात रो कोई भी उथळा को दियो नी। इणा दानुवा नै चुप बैठा देख र कामदारजी बात चावळी—'ठाकरा ! राव साहब तो आपर मुहड सू आपन काइ कव, माटा मिनख है पण हू आपन घरू सलाह दऊ हू क ज आपन औ ब्याव ढोलर ढम्क करणो हुव तो जोधपुर मे जिकी आपरी हवली है उणनै अबार लगन झलावती बेळा बीद राजा नं सकळप देवो।

हवेली रो नाव सुणता ही ठाकरा र हाथा रा तोता उडग्या अर दब्य सुर म बाल्या—' मालका ! जे हवेली म्हार कब्ज मे नही हुव तो ?'

'तो कामदारजी ! थे फुरती सू जाय र बीन न अठ डेर बुलाय लावो माटर आपा र कन है हीज।'—रावसाहब मून भागी।

कामदारजी अर ठाकर उठ सू साथ माथ हीज उठ्या।

ठाकर बळवतसिहजी र जाधपुर आळी हवेळी साचाणी ही कब्जे म नही ही। उण हवेली र ऊपर पीसा टक्का लय र ही इण ब्याव रो इतजाम कर्‌यो हो। ठाकर कर भी ता काई कर ! आग कूवा अर लार खाड आळी बात हुई। आ बात भी जे महीनो मास पला प्रकासीजती तो भळ ही कइ कारी लागती पण अब ता बात हाथ बाथ को रई नी। ठाकर आपरा भागल मन लिया घर कानी फट्‌या। घर र कन सीक पूगता उणा न घर माय सू रोवा कूक री आवाज आवती सुणीजी। घाव म घाबा। व पग उठाय र घर म बड्या। आग देख तो लोग बनडी न आगण मे लिया बठा है। उणर मुहड सू झाग निकळ अर डील सगळो लीलो टास हुयोड़ा।

श्रो चक्सो देख'र ठाकरो नै सगळी बात समझतां धणी जेज ना लागी नी। बाई समझदार ही। उण जरूर अबार आळी सगळी बातां आपर कान सुणली लखाव है। उणनै घर री राई-रत्ती रो पतो हो। जी री उकराळी उण अमल गिट लियो हुसी। ठाकरां र गोडा तांइ रो सत निकळग्यो। घण लाड कोड सू पाळी पोसी बेटी न श्रो दायजो दिरीज्यो! उणा रो वाको छटग्यो—"ओय म्हारी चिड़कली अे! म्हारी लाडकंवर बाई अे!"

✿✿

अचाचूक री वडक सुण'र वींदणी लारी नै मुहडो फोर'र जोयो—सुसरजी रो खोळो साव खाली। श्रो वृतांत देख र उणरा भी वाका छूटग्या "म्हारी चिड़कली अे!"

बींदणी रो रोज सुण र ठाकरां नै सागी चेता हुयो। व तुरंतां फुरस ऊठ न उठ ही जैकाण'र हेठै उतर्या। ऊठ र पग पग पाछा न्हांठा। कोई पावडा बीसेक गया हुसी कै उणा नै बायली आळो रलक्यो मिग आयग्यो। उणां र मन मे कई ध्यावस आयो। वो खाथा खाथा पावडा भर'र रलक्यि समेत बायली नै उठाई अर चंचेडी झझेड़ी, पण ऊठ र ऊपर सू पड्या पछ उण फूल म बाकी काइ रैवतो!

✿✿✿✿

एक लावारिश लाश

उन्हाळे री रुत। दुपोर री वगत दोढ़ दाय र अड़ेम। अठी उठी। तावड़िय री भाठ एहड़ी पड़ क जे मुट्ठी भर र चिणा जमी उपर उछाळ दिया जाय तो जरूर ही भड़भड़ाय र भजीज जाय। एहड़ बजराग तावड़िय म भी जूनिय गढ़ आळी खाई र आळी दोळी मिनख लुगाया रा गरणाटिया मच्याड़ा। लाग धुक धुक र खाई म देख अर देखता देखता थक जाय जद पाछा टुर वहीर हुव। पण एक जणा उण भीड़ मायसू निकळ र जाव जितर मारग ववता पाच जणा भळ भीड़ म आय मिळ। इण हीज कारण भीड़ द्रोपदा आळी साडी री दाइ लाबी वधती ही जाव।

इण खाइ र उपर जठ जठ भी मिनख लुगाय रो अणचाया मगरिया मड्या, कई न कई चिमत्कार न लेय र मड्या। एक बार पला भी इण तर रा भळा हुयोडी भीड़ मायसू आवत एक आदमी न म्हैं भीड़ भळी हुवण रो कारण पूछ्य। तद उण वतायो क— रात आठ बाग म वठा दाय च्यार जण आपरो रेडियो वजावता हा। रेडिय री आवाज सुण र एक फणधारी काळो नाग उठी न आवतो दीस्यो। रेडिय आळा डरता आपरो रेडियो उठाय र जावण लाग्या। नाग भी फण कर र उणार लार हुयग्या। रेडिय आळा पग सावट्या पण नाग किसो हार मानण आळो हो वो भी उणार लार पड ग्यो। छेवट वात विगड़ती देख र रेडिय आळा आपरो रेडियो खाई म फक दियो। नाग भी रेडिय र लार रो लार खाई म कूदग्यो। व रेडिय अर नाग न देखण सारू आ भीड़ भळी हुयाडी है।'—म्है खुद भी जाय र देख्यो। उण आदमी री वात साठ आना पाव रत्ती खरी निकळी। रेडिय नै फकती वेळा उणरो कवर छिटक र पीपळिय री डाळी म अटकग्यो हुवला जिको अज ताइ पीपळिय री डाळा म अटक्योडो लटकतो हो अर खाई र तळ म एक साफ नूवो ट्रांजिस्टर पड्यो करडाट करतो हो। हा काळियो नाग जरूर उठ हाजिर नही हो पण उणरो उठ नही हुवणो म्हन जरा भी अखर्‌यो कोनी, कारण क नाग साप परळ रा जीव है आपरी मरजी हुव जठ ठहर अर आपरी मरजी हुव जठ जाय।

आज भी जरूर कोई न कोई जोरदार चिमटकार हुसी? नही तो इण तर र तावडिय मे लोग क्यू आपरी खालडी बाळता? हू रतनविहारीजी आळ बाग सू

बाहर निक्ळयो, जितर ही फडा मायली ज्यानकी स्यानणी उण भीड मायसू छट र बाग कानी ग्रावती दीसी। उणर साथ एक लुगाई बीजी भी ही। ज्यानकी र हाथा र लटका सू म्हनै लाग्यो क ग्रा जरूर उण साथली लुगाई नै खाई ग्राळ चिमटकार र बार मे जाणकारी देवती हुसी। तावड सू डरतो हू हडमानजी ग्राळ मिंदर र ग्रगवाड ग्राळ नीबड री छिंया मे ऊभग्यो। ज्यानकी ग्रठी नै हीज ग्रावती ही। जे कोई खास बात हुसी तो उणन पूछ लेसा ग्रर देख ग्रासा, नहीतर कुण खालडी न बाळसी। जितर ज्यानकी ग्रर उणर साथ ग्राळी लुगाई दोनू जण्या नीबड री छिंया मे ग्राय ग्रभी। म्हार मन मे उतावळ सू म्है झट पूछ्यो—'ग्रा भीड काय र खातर भेळी हुई है ए ज्याना ?"

कायरो बताऊ, बाबूजी ! (ज्यानकी म्हनै सदा सू ही बाबूजी र नाव सू हीज ग्रोळख) लोगा रो मन ता बस मे रव कोनी ग्रर पछ नाव सू डरता कुकरम कर !'

'म्हार कई समझ म को बठी नी ?"

'समझ मे बठ जहडी बात ही कोनी, बाबूजी ! कोई राड नाव सू डरती ग्रापरै जायाड न घाटकी मास'र खाइ म न्हाखगी दीस है। छोरो घणा ही फूठरो फर्रो हा पण काई हुव ।'

'छोरो !"

"हा बाबूजी ! छोरो। ग्रो हीज जे केई भली मिनख र पेटसू जलमतो तो ग्राज थाळ्या वाजती, ढोल दम्मामा गुडगुडाईजता ग्रर गुड-नारेळ बाटीजता पण ग्रो निरभागिया केई पापणी र पेट म पड्यो, जिका जलमत न हीज नागण डस ज्यू न्सगी। लोक-लाज री ।"

ज्यानकी रा लारला ग्राखर इतरा फोस हा क हू उणारो लिखणो ग्रठ वाजिब नही समझू। पण उणर ग्राखरा म सच्चाई इतरी ही क म्हार दिमाग मे सूती बरसा पलडी एक वारदात एक दम ताजी हुय र ग्राख्या र ग्राग ग्रायगी।

हू म्हार ग्रौसधालय रो ग्राडो ढक'र घर जावण नै सम्यो हीज हो क बरसा तीसेक र ग्रडगड एक मोटयार हाफ्ळीज्योडो म्हार कनै ग्रायो ग्रर बोल्यो—'बदजी महाराज ! थे थोडा पाछा ग्रसपताळ मे हालो म्हार जरूरी काम है।'

एहडो काइ काम है, कोई हारी-बीमारी ?

थे पला ग्रस्पताळ रो ग्राडो खोलो, पछै सब कुछ बताय देसू।

म्हैं अस्पताळ रो ताळा खोल र आडो खोल्या । म्है आग जाय'र वत्ती चासी जितर वा भी आमग्या अर आवत ही म्हारा पग थाल लिया । बाल्यो-- बापजी ! म्ह ता काळी धार डूबग्या । अब ज काई कारी लागसी तो आपसू हीज लागसी । नहीतर गया मिनखाजमार सू ।"

म्हे उणनै ल्यावस दय र बात बूझी । व जिकी बात म्हार आग प्रकासी उणरो मोटा माटी सार ओ हा क उणर एक मामरी बेटी बन है मोट्यार जवान । उणरो ब्याव आखातीज ऊपर माडयाडो ह । उणरा मामो अर्थात छोरी रा बाप इण ससार म कानी ! छाकरी इज हीज बरस आठवी पास करी है अर वा च्यार पाच महिना र पट सू भी ह । मामला सगा भी सरतर आळा है अर म्हान भी म्हारी बिरादरी म दोय मिनख गूझ है । ज आ बात चवड आयगी तो सात पीढीरो पाणी उतर जासी अर ठिकाणो भो छट जासी । रपिया भला ही कितरा ही खरच पड जावो इण विपदा सू जे गल छूट जाव तो नूव जमार आया समझा ।

वै जितरी भी वाना म्हनै बताई उणा मायली सगळी साळ आना साची ही । एहडी वारदाता आज सू नही घणी पला सू सुरू हुयोडी है । कुती न आपर कण जहड बेट न लोक लाज र खातर नदी मे तिरावणा पड्या । वो म्हार मूहड सामी जावा करयो । म्है सगळी बाता साच विचार र उणर आग हाथ झडकाय दिया । व घणी ही विणती करी लीलड्या मारी अर छोरी री ज्यान वूहो जाव ता भी फिकर कर जहडा बात कोनी बताई । पण हू तो उणर आग साफ नटग्या । वो निसासा नाख र उठग्या ।

भीड रो रोळा सुण र म्हारी विचार धारा टूटी । हजारू लाग भळा हुयाडा हजार तर री बाता कर । कई लाग आज र जमान न दास दव अर कइ लोग आज री भणाई पढाई न । बाता करणियारा भी करीब-करीब दाय पाला बट्याडा हा । एक पख तो मिनखा न दासी वताव जिक बापडी भाळी छोरया न विलमाय र डुबाय देव अर दूसराड पख आळा छोरया खुद तथा छोरयार मायता न दासा वताव क आपड छोरा नै पला ता घुरड घुरड र खावा कर अर पछ सत्या बणण खातर इस्या कुकरम कर । इणा बाना म कितरी साची ही अर कितरी कूडा इणरा निणय करणा कोई हसी मेन नही हा । जितरा मूहडा उतरी ही बाता । खर !

हू भीड न पार कर'र गाई र नडा पटूच्या । ज्यानकी री बात साच निकळी । छाकरा पाणी आळ नाळ र हेठ पड्यो । फूठरा सारा निछार वण । काळा भमर वम । चाखा भरवा गात । एक हाथ सीधा तथा एक पट र ऊपर आयाडा ।

पगा आळौ हिस्सौ एक निजरया आळै पुर म पळैटी ज्योडो। बाकी सगळोडोन उघाडा। म्हार साथ अनेक आल्या उणरो रूप देख देख र विसूर।

पुलिस आळी गाडी न देख र भीड होळ होळ छटण लागगी। दोय च्यार पुलिस आळा भचाभच पाख बणाय'र खाइ म ऊतरग्या। छोरै न झाल र बाहर लाया। उणन देख'र सगळा ऊभा हा जिका री आल्या फाटी री फाटी रैयगी—छोरो साचेलको नहो रबड आळो भाइयो हो, जिको पदाचू केई रमत टाबर र हाथ पाय सूं छूट र गटर म जाय पड़्यो हुसी अर उठ सू तिरतो तिरतो खाइ मे आय पड़्यो हुसी।

✿✿✿✿

बेइलाज

भाग ऊठ सू उतना पाण पाधरो गामली साळ म गयो। वहनां ही डाक्टर हाथ धाळ कूण म माच उपर सुता उणरा जाहायन झाय हाद कर। मांच र मोळा दाळी लुगाया अर मिनखारी गरणाटिया मच्यारा। दाय च्यार लुगाया मा र पगाथिय पगाथिय बठी उणरी जाहायत रा दावा धोयो कर। सामल पानी उणरी मा बठी पासू ढळराव। उणरी राती चूड़ अर गूज्याडी आम्दा न दग र धाइ न अहसला लगावता जज नही लागी--मा जरूर सारी रात राय राय र काढा दीस है। च न गाव माळ गवारूपण सू भी ज्यादा रोस मापरी मा माथ घाई। बाल्या-- मा ! इण र ज तक्लीफ ज्यादा ही ता थान अस्पताळ वुहा जावणा जाईजता।'

काइ बताऊ माया ! पसां तो म्हैं जाणता क काई अलड-बलड खावण पीवण सू पट मे दरद हुवण लागग्यो हुसी ! तळी फाकी लिया आप ही बद हुय जासी। पण म्हा ज्यू-ज्यू दवाई पाणी दिया, ज्यू-ज्यू दरद घटण रा जगा बधता हा गया !"
---बाल्री मा डुसका खावती बताया।

'म्हां ता बडियाजी न पैला ही बैद ल्यो हा कै मो दरद दवाई-पाणी सू मिटण आळा कोनी ? काई दवी-दवता री घूर-लाम रो है पण ।"---भीड मायला कई लुगाई आपर मान रो परचो ल्यिा।

उणरी बात सुण'र चोरू न रोस र साथ साथ हसा भी आयग्यो। बाल्या--हा सा ! चूक ता कोई न काइ हुई है, जण ही दरद हुया अर दास आ हुया क पच पाहरी रात अठ राय राय र काढ दी अर च्यार बाम र छेट अस्पताल ही उठ का लयग्या नी।"

'थ तो भाई ! आज-काल पढ काइ ग्या साक्षात् रामजी ही बणग्या !"---लुगाई आपरी झेंप मिटावण उत्तर वाली।

'भाभी ! म्ह चाव रामजी नही बणया हुवा मिनख ता जरूर बणग्या। राग दोस ता दवाई पाणी सू ही हीज मिट। दवी-दवता इण म काइ कर। ज इण नै राता रात लेय जावता तो क्यू इतरी पीड भुगतणी पडती ?'

'अर भाई ! म्हनै बूढी राड न ता दिनरा ही पूरा सूझ कोनी ! पछ रात रो कुण लय'र जावता ?"---बालू री मा आपरी लाचारी बताई।

"थारै सू नहीं जाईजतो तो काइ वास मुहल्ल मे बीजो कोई आदमी ही कोनी हो ?"—चारु बोल्या।

"आदमी तो रामजी राजी है, भाया ! पण वह बुहारी नै हर जिक र साथ मेलण आळी बात म्हार ता कमती ढूकी। हमैं तू आयग्या थार जच ज्यू कर।"—चारुरी मा कय र निरवाळी हुई।

"चोखा भई ! थार नहीं ढूकी जण ! आज र जमान मे ता लुगाया कलक्टरी कर है अर अठ सहर-सवाड जावण म भी दाक्ला जाईज !'—चोरू कवत-कवत बाघर हाळो, छोटिय नै हलो कर'र कया—'छोटू ! जा लाडो तू आपार छकड ऊपर हाट-पट पाथळियो माइ र बळ्या न जाडला। बळध ज पूरा चर्‌या नहीं हुव तो नीर आळो बोगे साथ घाल लेईज। पछ थे दवर भुजाइ दानू जणा छकड माथ चढ'र माती आळो बगीची ढक जाईजा। म्हार थाडो ठमण ऊपर काम है, जिक नै गळटाय'र हू काई मोटर बस पकड र सहर ढूक जासू। बळधा नै थाडा टार'र लाईज सू बगा सर अस्पताळ म पूगीज जाव।'

चारू तो छोटिय नै भोळावण दय र ऊठ ऊपर चढग्यो। छोटिया, चारू बताई ज्यू साजत कर छकडा जाड लाया। चारु री जाडायत नै लारा सहारो लगाय र छकड ऊपर बठाय दी। छोटिय बळधा नै खचाऊ लय र सहर आळ मारग घाल दिया अर आप भी धुरिय चढ'र बठग्या। बळध, पाणीरा वाहळा हाल ज्यू सहर र मारग मारग हालता जाव।

oo

तांग आळ चोरू अर चोरू री जाडायत नै अस्पताळ आळ मोटाड दरवाज थाग लाय उतार्‌या। थार आपरी जाडायत न महारा लगाय र ऊभी करी अर अस्पताळ र मायलै कानी जावण नै सल्या। चारू आपरा आगलो पग वारण र मायल पासी दिया ही हा जितरै अस्पताळ आळा चौकीदार आडो आय फिर्‌या। बोल्या— अबै अस्पताळ रो टाइम कानी।"

'पण म्हे तो गाव सू चलाय'र आया हा !"—चोरू जोर रा थाया।

'थ भला ही गाव सू आवा अर भला ही सहर सू, कायद रो काम तो कायदै सूं हुसी !'—चौकीदार हाकमी जचाई।

चारूरी जाडायत री दरद र कारण पीडुयां धूजण लागगी। वा कवाड आळो पडको सान'र उठ ही बठगी। चारू वकम मा हुयाडा उठ हीज ऊभा। जितर ही वागवानजी बाग कानी जावता च.रू र निग आयग्या। अ चार र सैंधा मैंधा हा।

उण पाधर पग जाय र बागवानजी मू रामा स्यामा करया अर बताया कै—म्हे तो गाव म हासा दौडी कर र अठ अस्पताळ आया अर अस्पताळ र माय ही लाग वडण री भेद नी।

बागवानजी बोल्या— आह समझग्या ! कारण काळिया मह्नर वठी वळता हुसी ! थै उणर साथ वीड या बनाय लिया पछ वो थान को रोकै नी।"

चारू र गाब म दसाई वीडी रा वडल मौजूद हा। वै ववत ववत उण माय मू दोय वीट या काढ र मुट्ठी म दबाली। चारण र अधविचाळ ऊभ र बोल्यो— जमादारजी ! लो बीडकी तो पीला।

काळिय आपरो हाथ हेठ माड लिया। चारू ऊपर सू दानू बीडया पटक दी। जमादार बाडया लेय'र आपरी टबलडी माथ जाय वठा।

चारू आपरी जोडायत न आपर काध माथ हाथ दराय'र अस्पताळ र माय वेइ यो। बडता ही डाव पासो डाक्टरा आळा कमरा हा। व दानू जणा कमर र आगली बैंच ऊपर जाय र बैठग्या।

टाइम खासो हुयग्यो हो इण खातर अस्पताळ म रोगिया री भीड भी घणी का ही नी। कोई दोय च्यार बीमार लाइन लगाया ऊभा। चोरू भी जाय'र लाइन म ऊभग्यो। साथ च्यार बीमारा र लार उणरा भी नवर आयग्या। वो कमर म वड्यो। बडता ही उणरो जीवणाडा हाथ डाक्टर साहब आपरी मुट्ठी म पकड लिया अर बोल्या— तमार कठ कठ दरद है ?

म्हार तो नही म्हारी जोडायत र पट म है ? —चारू हिम्मत कर र ऊथळो दियो।

तो लाइन में घरवाळी कू ऊभा करणा जोइजता !'

पण बापजी उणसू तो मिनट भर या भी ऊभो को रहज ना ?"

तो घर पर देखाणा।'

'पण पीड घणी है डाक्टर सा ! खराब जैहडी बात कोनी। —चारू गरजं र सुर मे बोल्या।

डाक्टर सा आपर आरया ऊपरल चम्मै न उतार या अर उणरी ऊगा बाजा चस्मा लगायो। जितर डाक्टर सा रा दोय तीन भायला ही ही, खी खी करता उठ आयग्या। डाक्टर उठ र बाथरूम मे वडग्या। चारू उठ हीज ऊभा। उणनै उठ ऊभा देख र आया जिका डाक्टरा समाचार पूछणा सुरू कर दिया। उण सगळी हकीकत माड र बताई। व डाक्टर चारणै र बिचाळै सी रो वठा वच माथ बठो

चारू री जोडायत न बारी म्रारी मू चुक झुर'र देखी। आपापरी मे अंग्रेजी म वाता करण लाग्या। चोरू अंग्रजी री 'ए' भी नही जाण। वा ऊभा-ऊभी डाक्टरा र मुंडा र साम्हा जोव। जितर ड्यूटी आळा डाक्टर पाछो आय'र बठग्या। डाक्टर र भायला चारू री सिफारिश करी। कया—'अ लाग घणी भूख सू चलाय र आया दीस है अर पीड भी ग्रासी बतावै है सू इणनै स्पशल कैस मान र दज करला।"

डाक्टर "अच्छा" कवता उठग्यो अर चोरू री जोडायत री बैंच ऊपर बठी र ही स्टोथसकोप लगाय'र जाच पडताल करी अर पाछ आय'र रजिस्टर मे केस नै दज कर लियो। चोरू नै एक चिट्ट माड'र पकडाय दियो अर बतायो क— डो वाम म 31 नबर री खाट खाली है सू तुम इण न ल जाय'र उणर ऊपर सुवाण दणा अर काई पूछ ता य चिट्ट दखाय दणा।

चोरू आपरी जोडायत नै ऊभी कर'र हाळ हाळ वाड डो म लयग्या अर 31 नम्बर आळ माच ऊपर ल जाय'र सुवाण दी। जितर ड्यूटी आळा डाक्टर इजक्शन भर लायो अर चारू री जोडायत र जावणोड हाथ र बूकिय म लगायग्या।

इजक्शन र लागता ही चारू री जोडायत रा दरद कम हुवण लागग्या अर उणरी आख्या म नीद घुळण लागी। उण नै नीद आवती दख'र चारू बोल्यो क— ज नीद आवती हुव तो थाडी आडतड करन। जितर हू कठ चावा भूगो कर आऊ अर थन भी ज कइ रचता हुव ता बताय दे सू आवता लय आऊ।"

चारू री जाडायत उणरी बात रो काई उथळो नही दय र माच माथ आडी हुयगी। समक रात रो औजको अर इजक्शन रा प्रभाव। इण कारण चारू री जोडायत नै आडी हुवता ही नीद घेरी। चारू उणन पगाथिय पड्यो लूगार आढाय दियो अर आप बाजार कानी टुरग्या।

ㅁㅁ

चोरू होटल आळी बच ऊपर बठना ही हो जितर उणन ठेसण आळा मास्टर जी दीसग्या। वो उठ मू उठ'र बार आयो अर मास्टरजी नै हेलो कर्यो— 'मास्टर जी! आपर ठण्ड वालमी का गरम।'

'अरे भाई! इण जाड म ठड का क्या लेवणा देवणा!'

"एक कप चाय रा पाणी वसी चाहीज।'—चारू होटल आळ छोर नै आडर दियो।

दोनू जणा हाथ मे हाथ लिया होटल म बड्या। मास्टरजी सैंपलडा बूझ्या—"उनक अब किण तर है?"

"ठीक है मास्टर सा ! एक इन्जेक्शन लागता ही आराम आयग्यो। पग ता पीड र कारण सूवो वठीजतो ही को हो नी अर हमैं सूव चित मूवण म भी किणी तर री तक्लीफ कोनी !"

आज-काल रोगा रा इलाज भी नूवा नूवा चालग्या है। पलै तो टाइफाइड वाळं क महिना महिना आर म बद राखना ग्रौर अबार चालता फिरता पाच सात दिना मे मुकम्मिल इलाज हुय जाता है।"

'आ बात तो है हीज मास्टरजी ! पण गाव आळा तो अज ताइ इण बात नैं समझ कोनी। दव भाषा झाडा मन्त्र अर टूणा टमसण करता करता जद थक जाव तद रोगी न केई वद डाक्टर न बताव। पछ जे कारी लाग तो भी बडी मुश्किल सू।'

मास्टरजी धाटकी हत्राय- लाय र चोम्ब री बात री हामळ भरता जाव अर साथ-साथै चायरा घूंटिया भी लवता जाव। चाम्ब भी चाय र गुटक र साथ गाव आळारी मूखता अर भणिया पढिया री विसमता ऊपर सोचतो जाव। नोनू जणा चाय पीय'र निरवाळा हुया। मास्टरजी र थोडा जल्दी ही सू व उठता बाल्या— अच्छा भाइ ! मैं तो अब हालता हू।

"ठीक है आप पधारा। जे गाव रो कोई टवर जाव तो मा न समाचार कराय दीजा क हूमैं दरद वरद तो बिल्कुल ठाक है कदाच एक दोय दिना म छुट्टी दय देसी।"

ᴅᴅ

चोम्ब छोटिय न दाय रुपिया रा न ट काढ'र रिया अर बतायो क— काल जठ सू नीरो लायो हो उठ सू जाय'र लेय आईजे। आटो घार कन है हीज मायन चूल्है ऊपर दोय टिक्कड सक लईज। जितर हू अर थारी भुजाइ भी आय जासा। काल डाक्टर साहब आज छुट्टी देवण रो कयो हा।"

छोटियो बाल्यो— ठीक है भाईजी ! हू बळधा न चराय पाय र तयार-टच राखसू। थे आया अर जाड्या छरड न। पण थोडा वगा ही आईजो सू वखत सर घर पूग जावा।

ठीक है ठीक है !' कवता चोम्ब बगीची सू निवळ'र अस्पताळ कानी टुर-बहीर हुयो।

ᴅᴅ

चोम्ब पाधरै पग अस्पताळ र वाड नी म पहुच्या। आग नेख तो 31 नबर आळो माचो खाव खाली। चाम्ब र काळज म एक मगीड सा उपडयो, पण आ

विचार'र छाती काठी करी क कठी नै ही दिसा फरागत करण नै बूही गई हुसी । वो केई ताळ बाहरला बरामद मे चक्कर काढनो रयो । खासी ताळ हुयगी, पण जोडायत कठी नै ही ग्रावती नही दीसी । वा दौड'र ड्यूटी डाक्टर ग्राळ कमर मे गयो । ग्राज डाक्टर ग्राळी कुर्सी ऊपर एक नूवो डाक्टर बठो । वै उणनै हाथ जोड'र नमस्कार कर्‌यो ग्रर पूछ्‌यो— डाक्टर साहब ! वाड डी मे 31 नबर ग्राळी मरीज दीस कोनी ?"

डाक्टर ग्रापरी टेबल ऊपर पडी बिदामी रग र कागजा री मीटा नै सभाळण लाग्यो । सभाळता सभाळता 31 नबर ग्राळी मीट काढ'र देखी । देख'र चोरू र सामन जोयो ग्रर बतायो क—'उसकू तो मइया ! रात कू ही छुट्टी मिळगी ।

'है छुट्टी मिळगी !"—चोरू ग्रचक बचकावत पूछयो ।

"हा, हा ! छुट्टी मिळगी, हम कोई झूठ थोडा ही बोलता है ।"

पण बापजी ! उण बीमार नै भर्ती तो म्हे करायी ही, पछ छुट्टी कुण दिराय'र लेयग्या ! '—चोरू री जीभ कलराईजण लागी ।

'डाक्टर ध्यान सू कागद ग्राळी सीट न देखी ग्रर बोल्या— तमारा नाव क्या है उसकू तो चोरूराम छुट्टी दराई है । अ पड बिसक दसखत ।'

चोरू खुद मीट गुडोम र सीट नै दखी । दसखत उणर जहडा रा जहडा ! चोरू रो माथा गरणावण लागग्यो ग्रर हाथा पगा म सुन बापरण लागी । वो डाक्टर साहब नै बतावणो चावतो हो कै—चोरूराम ता म्हारो नाव है ग्रर हू उण बामार न छुट्टी दगाय र नही लेयग्या बीमार गई क्ट ? कुण लेयग्यो? पण उणरी जबान स् एक भी सबद नही निक्ळ्‌यो । वैरो जी घुमटीजण लागग्यो । वो उठ सू निकळ र बाहरल बाग मे ग्राय बठा । बाग र बाहरलै पासी एक ग्रखबार ग्राळा ग्रखबार बेच— 'ग्राज की ताजा खबर एक माटयार जवान लडकी री लास पुलिस ग्राळा न ग्रस्पताळ र लारल खाळा म मिली । लडकी र डील ऊपर कोई घाव रा निसान नही है पण उणरा कपडा खून सू लथापथ हुयोडा है । पूरो विवरो ग्रखबार र पाना ऊपर । दस पीसा फक्त दस पीसा मे सगळ सहर री खबरा ।'

चोरू ग्रखबार ग्राळ री सगळी बात सुणी । वो उठ सू उठ र ताग कनै ग्राया ग्रर ग्रखबार री एक कापी दस पीसा म खरीदी । ग्रखबार म उण लडकी रा फाटू भी छप्‌योडो । चारू उणन ध्यान सू देख्या—फाटू उणरी जोडायत रो !

चोरू चमगूगो सो हुयोडो ग्रखबार ग्राळ पाना नै निया थाण नबर 7 कानी टुर-बहीर हुयो ।

oooo

जीवण-दान

सगळ लागा री भीट आपरेशन थियटर कानी लागग्राडी हा। आपरेशन-थियेटर रा बारणा जदपि ढकयोडा हो पण खिडकी ग्राळ कांचां मायकर मायला सगळा दरसाव साफ साफ निग आव। मज र ग्राळा गोळो डाक्टरा अर नर्सां रो गरणाटियो मचयोडा। इलाज शुरू हुया। सपलडो एक नाड ग्राळो इजक्शन पारू र जीवणाइ हाथ म दिरीज्यो। ता पछ एक डाक्टर ऊकळत पाणी माय सू कतरणी काढ र उणर छाती री चामडी वाढणा शुरू करी। आग आग डाक्टर ज्यू-ज्यू फाला री चामडी कतरतो जाव, उणर लार-लार एक नर्स रूई र पिरोळिय सू वगणी रग री कोई दवाई पोनती जाव। जठ कठ काई ऊडा घाव दीस उणर ऊपर एक बाजा नस गुलाबी गाज रो टुकडा रख'र पाटी बाध। इया करता-करता पारू र सगळ शरीर रा फाला कतरीजग्या अर वगणी रगरी दवाई पोतीजी। घडी भर पला कुदण री काज सी दीखण ग्राळी पारू अबार री घडी रामलीला ग्राळी सूपणखा सी दीखण लागगी। फिर भी लाग न ग्रो ध्यावस क--बापडी, जे जीया ऊबर जाव ता भी मोटी बात हुव दोय दिन ससार रो बायरो ता लेव।

पण भगवान न आ बात दाय नहा लागी। कुदरत रा खल कुण लख। अबार नाड ग्राळी भली पारू एकाएक बहोस हुयगी। घर कुटुम्ब ग्राळा रा मुहडा ता उतरग्या होज हा पण उणा र साथ-साथ डाक्टर अर नर्सां रा मुहडा भी पाळा जरू हुयग्या। पण डाक्टरा हिम्मत नहा हारी। तुरत फुरत कोई दवाई इजक्शन-सीरिंज म भरी अर पारू र डावाड हाथ री नाड म लगाय दी अर पग ग्राळ गिट्ट र ऊपर चीरो देय र ग्लूकोज चढावणो शुरू कर दियो। आपरेशन थियटर म लाग्योड कूलर री स्पीड थोडी तेज कर दी। सगळा जणा पारू न होश म आवण न उडीक।

००

अस्पताळ री ऊपरला मजिल म जावण ग्राळी पागथिया री नाळ रा मुहडो आपरेशन थियटर र साम्हा साम हो। पारू र कडम्ब ग्राळा पारू र धणी न नाळ चढ'र आपर कानी आवतो देख्या पण वो आधट क आया हुसा क इतर म उणरा बाप (पारू रा सुसरा) उठ सू उठ'र साम्हा जावण लाग्यो। दोनू बाप-बेटा पाछा नीच ऊतरण लाग्या। ववता बाप पूछ्यो—"काइ हुयो ?

'हेठ बाग म हालो, पछ बतायस।' बेट हाथ सू बाग कानी इसारा करता कयो।

दोनू जणा अस्पताळ र आगल बाग मे जाय बठा। बाप बट कानी सवाल भरी मीट सू जोया। बट अठीनै उठीनै देख्यो। कोई आदमी नड नडास नही दीस्यो, जद बोल्यो— बापजी ! मरग्या।'

'काइ बात हुई ?''—बाप आकळ पडतै पूछ्यो।

'बात हुई भागफूटा री। थाणदारजी साफ साफ कय दियो क मा हत्या मा जाण बूझ'र करी है।'

है हैं पण थाणदार कन इण बात रो काइ सबूत ?''

सबूत है घार कन। वा म्हन दोय जिसा बताई—एक ता तूळ्या आळी डब्बी अर बीजोडी थारी बहू (पारू) री साडी रो बळ्योडो पल्लो।''

'पण इणा सबूता सू क्यूकर पतो चालयो क आ हत्या थारी मा जाण बूझ र करी है।'

बापजी, थे भोळा हो ! आजर जमान म विग्यान कठ रो कठ जाय पहुच्यो है। थाणदारजी म्हन पटी र ऊपर सू लियोडी मा र आगळ्या आळी छाप बताई अर बळण आळी जगा मिळी उण हीज पेटी री तूळी। उणा कयो क लालटण मू पली पथरणा तिलगता अर पछ बळण आळी रा कपडा। पण बळण आळी र कपडा उपर पली किरासिन तल छिडकीज्या है अर पछ लगाईजी है तूळी। लालटण सू आग लागण आळी बात साफ बणावटी है।'

जद ता मरग्या बिना मोत !''

अज ताई तो पूरा का मर्‌या नी, पण !''

तो तो थाणदारजी कइ इसारो कर्‌या है ?'

'हा थाणदारजी इसारा कर्‌या है क थारी मा ऊपर हत्यारा मुकदमा चालसी अर राम कर्‌यो ना फासी नही ता काळ पाणी री सजा जरूर मिळसा।''

बेटे री बात सुण र बाप एक ठडा निस्कारो नाख्यो अर आपरा माथा पकड र बठग्यो। जितर अस्पताळ र माटा दरवाज सू थाणदारजी अर च्यार पाच सिपाही बडता दीस्या। उणा नै देख र बटा बाग माय सू उठ र अस्पताळ कानी टुर बहीर हुयो।

००

इजक्शना अर दवाया र प्रभाव सू पारू नै चेतो हुयग्यो। आ देख'र डाक्टरा अर नर्सा रा चहरा हर्‌या हुयग्या। आपरशन थियटर र बाहरल पासी उट्यार

लोगा रो भी कद जीव जम्या। पाग हमैं चोखी तरै मावचत। डाक्टर साहब पूछ्यो—"क्यू बेटी पारू ! अब तमारै तक्लीफ ता नही है।"

'ना, डाक्टर सा ! बिल्कुल नही। पण हमैं हू कद नाइ ठीक हुय जासू ?"

"बहुत जल्दी ठीक हुय जावोगी बटी ।'

डाक्टर सान्व भाग भी कइ कवना पण थाणदारजी र भ्रचाचूक र ग्राय जावण म उणा न ग्रापरी बात वोटणी पडी। थाणन्दारजी प्रावता ही पारू री भज र जीवण कानली कुर्सी ऊपर जच'र बैठग्या। पला डाक्टर साहब सू अग्रेजी म कई पूछा ताछी करी पछ पारू नैं बतळावता बोल्या – 'क्यू बटी पारू ! थार हमैं किणी तर री दोराई ता कोनी ?'

ना बावो सा ! हमैं म्हार जिल्कुल ठाक है।'

'ठीक है जण घणी ही ग्राछी बात है, बेटा ! काया वस्ट है, दोय दिना म टळ जासी। पण एक बात ता बताय क थार कपडा सिलग्या तद थारा सामूजी कठ हा ?"

सामूजी रो नाव सुणता ही पारू र दिमाग मे सगळी बात सिनमा ग्राळी रील घूम ज्यू घूमगी– ग्राग रो लागणा ग्रर सासूजी रा ग्रोरिय मांय सू बाट्र निकळणा ग्राख खुलता ही एक साथ गीरग्रा। उणर दखता दखता उणर पैरण ग्राळै कपडा सू माच ऊपरला ग्रोढण बिछावण ग्राळा गाभा सिलग्या। धूव र गोट सू उणरो सास ग्रमूजण लाग्यो। उण ग्रारिय माय सू निक्ळण खातर घणा तरळा करिया, पण धूव र घमट घोर हुय जावण र कारण उणन ग्रारिय रो बारणा नही नाधा। उणरा वाको छूग्यो। रोवा डाडो सुण'र ग्राडासी पाडोसी भौता कूद कूद र ग्रागण म ग्राया। उणा पाणी, घूडो ग्रर गाभा लत्ता भिजोय भिजोय'र ग्रोग्यि म फक्या। ग्राग कइ मोळी पडा जितर उण खुद न बेहोसी ग्रामगी। पछ काइ हुया ग्रर काइ नही हुयो इणरा काई पता नही, पण जद ग्रांख खुली तद लोग माच ऊपर सुवाण्या मोटर ऊपर घालता दीस्या। पारू र एक बार तो जचो क बात ज्यू बीती ज्यू री ज्यू थाणदारजी न बताय दव, पण वा थाडी ताळ भळ ठरगी।'

काइ मोच विचार मे पडगी पारू !' थाणदारजी भळ पूछ्या।

काइ बावाजी ?

म्हैं पूछ्या हा नीं क थार कपडां म लाय लागी जद थारा सासूजी कठ हा ?'

'ग्राह ! म्हन तो घ्यान ही का रया भी।" पारू माची बात न गिटती बानी।

"कोई बात नही, बेटा ! तू हमैं ही सवाळ याद करनै मडाय दे ।"

पारू नै आपरी सासूजी रो व्यवहार डाक्ण सू भी ज्यादा खोटो लाग्यो । उणर मुंहड सू विराध म निकळ्या—बाबो सा ! जे सासूजी ही हुवता तो अहडी हालत हुवती हीज क्यू !"

'तो काईं साचाणी ही थे थारी सासू नै उठ कोनी देखी नी !"—थाणेदारजी इचरज भरी मीट सू पारू नै बूझ्यो ।

पारू क्दाच् थाणेदारजी री बात रो विस्तार सू उथळो देवणो चावती ही, पण उणर कठा मे एक जोर रो गुटळको वाज्यो अर उण गुटळक र साथ हीज उणरी आख्या रा कोया ऊपर नैं फुरग्या । थाणदारजी झट पट आपर कागदा ऊपर पारू रा अगूठा लिया अर कुरसी सू उठ र ऊभा हुयग्या । डाक्टर सा स्टेथिसकोप लगाय'र पारू रा फेफडा देख्यो तथा मुडच र कन दाव दाब'र नाड देखी । उणा र मुंहड सू अणचायो ही एक ठडो निस्कारो निकळग्यो । आपरेशन थियेटर म जितरा जणा ऊभा हा, सगळा वाहर आयग्या ।

पारू री लाश उणरै घरवाळा नै भोळाईजी । उणन देखता ही पारू री मा रो बाको छूटग्यो—'म्हारी चिडकली अे मै इण भव म आय'र काईं सुख देख्यो म्हारी पारू बाई अे ।"

रोवती कळपती पारू री वूढी मा रा बोल सुण'र उठ बठा हा जिका सगळा री आख्या आसुवा सू डबडबाईजगी ।

□□□□

चीला रै उण पाररा वोटर

चुनाव रा दिन ज्यूं ज्यूं नडा आवण लाग्या त्यूं-त्यूं चुनाव प्रचार म भी तजी आवणी शुरू हुयगी। भीता ऊपर लिखण रा तथा पोस्टर चपण रा काम ता प्राय पूरो हुय चुक्यो पण फकत बार लिखण तथा पोस्टर चपण र बळ ऊपर तो चुनाव जीतीजण सूं रया। चुनाव र म्गळ म उत्तरणिय आधार न हणार परवाह बीजा भी खासा हथियार जाईजिया कर है ज्यू क—प्रचवार बाजी, पता बाजी भाषण बाजी, माखण-बाजी इत्याद।

जीतगा भाई जीतगा झूपडी वाळा जीतगा" र प्रधायूर र राठ सू म्हारी माय ऊघडी। हू अगाछिया नपट र बा र बाया अर दग्या ता आग स्कलिय छोरा री एक पाळटी झूपडो माळी जीप र लार नारा लगावती बग। म्हें एक छार न नडो बुलाय र पूछ्या— अर, छोटिया! थार अर झूपडी आळा र काइ लेवणो दवणा?"

छारा वानता हा वाल्या— टापर्या सू तो है!"

टापया?

हा टापया काल ताइ गधिप आळा म्हान फकत गोळ्या हीज दिया करता, पण आज सू इणा टापया देवण रो वाथा बाध्या है। आ कय अर छारा ता दौड र आपरी पाळटी गई जिकी गळी म बूहा गया पण टापया अर गाळ्या वाळी वात म्हार भेज मू निकळी कानी। जिक टाबरा न भणण गुणण खातर अहडा लाभ लालच दव सा बात म कइ तुक तो है, पण आज भणाई पढ़ाई री ठोड राजनीति न गळ उतारण रा ओ प्रयत्न देस र भावी कणधारा र चरित्र विकास म कितरा-काइ सहायक हुसी, आ बात तो वखत हीज बतासी।

हू विचारा म मगन हुयोडो अज ताइ बारण र विचाळ हीज ऊभा हा, इतर एक जीप र हरडाट सू म्हारो ध्यान भागो। जीप ठीक म्हारल बारण आग आय र ही ऊभी। उण माय सू दाय आदमी उतर्या। अर हाथ जाडता थका बोल्या— नमस्कार!

म्हैं भी नमस्कार रो उथळो हाथ जोड'र दियो। उणा माय सू एक जणो बोल्यो—"आपरी बस्ती आळा हमकै वोट किण न देवण रा विचार कर है ?"

'हू तो नुवो आदमी हू सा ! इण बस्ती म आया आज छठा दिन ऊग्या है।"

"अच्छा ! तो आप मास्टरजी हो !'

"जी !'

'तो आप भी म्हारै साथ जीप म बठ जावो। इण सू आपन लागा सू सैंधा मैंधा हुवण म मदद मिळसी अर बस्ती आळा री चाल-ढाळ रा भी साफ पतो लाग जासी।

आ बात म्हार भी अगा ढूकगी। हू पटपट पेंटडी टाणा म घाल'र जीप म आय बठो। जीप थोडी सी दूरी जितर मिंदर आगत चौक म खासा सारा आदमी भेळा हुयोड़ा दीस्या। म्हार मायत एक आदमी डाइवर न जीप मिंदर कानी ल जावण रो इसारा करयो। जीप मिंदर कानी मुडी। उणरा हरडाट सुण'र घरा मायला केई आदमी अर छारा भळ निकळ निकळ र बारै आयग्या। जीप नै मिंदर आळ कूण जनै ठोभ दी। म्हे जीप सू कई उतर्या अर कइ नही उतर्या जितर लोगा रो ओळो-दोळो गरणाटियो मचग्यो। बात चीत रा सिलसिला वाला री चचा सू हीज सुरू हुयो।

भाया ! हमकै वोट किण नै देवण रो विचार कर्यो है।' — म्हारला साथी भीट न बतळावता कयो।

वाटा री वात तो थ फत्तीबाई सू करा !'—रळ्य मिळ्य सुर म लोग बोल्या।

फत्तीबाई !"

हा फत्तीबाई ! उण सामली ढूढी म रव है।"

म्हारा पग फत्ती बाई री ढूढी कानी बध्या। सजाग सू फत्ती बाई घर म हीज ही। म्हारला एक साथी थमतिया कनै सी जावत हेला मार्यो—'फत्ती बाई हुसी, घर म ?"

'हा, घर म हीज हू। कुण हुसी ?"

'अ तो म्हे हीज !—बात पूरी हुया सू पैला हो सगळा जणा ढूढी र आगल आगण म जाय पहुच्या। फत्तीबाई सदाच ढूढी म ठामा टोपो करती ही। वा भीज्योडा हाथ ओढणी र पल्ल सू पूछती बाहर आई। ढूढी र क्वळ ही एक टूट्योडी सी माचलडी ऊभी कर्योडी ही। उण बाहर निकळता ही माचलडी नै

उठाय'र आगण र बीचो-बीच लाय'र ढाळ दी । म्हे सगळा जणा उणर ऊपर जच'र बठग्या । फत्ती बाई बात चावळी—'बोलो सा ! क्यू कर पधारणो हुयो ?"

"म्रो ही वोटा र खातर ।"—म्हारल साथी कठ साफ करत कया ।

'कितरा वोट जोईज ?"

आपर कन कितग है ?"

'आप चावो जितरा ही ?'

म्हे चावा जितरा !"

"हा हा ! आप चावो जितरा इण म काई फक थोडो ही है !"

"हा हा ! आप चावो जितरा दियो क म्हारल साथी नैं फत्तीवाई छेकडली ओळी ऊपर इतरा जोर दियो क म्हारल साथी नैं उणरी बात ऊपर विश्वास करणो हीज पड्यो । वो आपर कान र लारली मिजळकी नाड ऊपर खुजाळ करतो बोल्यो— 'अ वोट म्हान क्यू कर मिलसी ?"

"बीज लोगा नै मिळता रया है, ज्यू आपनै भी मिळ जासी ।"

'तो भी कइ मोख तो खुल ही जावणी जाईज ।

'मोख खोलो चाव बद राखो । रातरा गधिय आळा आया हा, व तीन रुपिया धामग्या है ।"

'कितर वोटा रा ?'

"अ ही कोई डयोढ हजार रा ।'

डयोढ हजार वोट ।'—अ अणचाया सबद म्हारल साथी र मुहड सू तिसळ र धीगाणै बाहर आयग्या । वो इणर उथळ री परवाह किया बिना बात नैं सवारतो थको बोल्यो—'तद तो माम धणी न पूछ्यां ही पार पडसी ।

हा, हां ! आप चोखी तर पूछ ताछ कर लो । उम्मीदवार र घर परवार रा ऊदरा तकात राजी हुव तो बात आगी न टोरया । पण राख्या थोडी फुर्ती, हमैं टेम घणा लावो को है नी । —फत्ती बाई ग्राहक पटावण र सुर म बोली।

म्हारलो साथो धाटकी हलावतो थको उठ्यो अर मोटर कानी बहीर हुया । म्हे भी उणर साथ उठ्या । व दानू जणा जीप म जाय बठ्या । म्हनै भी जीप म बठण रो इसारो कर्यो पण म्हारो रवास कोई घणो अळगा तो ही कोनी सू म्है उठ ऊभ ही हाथ जोड'र माफी मागली । जीप धूड उडावती चाल पडी ।

जीप र गया पछ फत्ती बाई बोली—"चाय चढाऊ मास्टरजी ?'

हू साचाणी होज चाय पीय'र पाघरो उठ ढूबयो हो। दुवारा चाय पीवण री कोई मनसा भी नहीं ही। इण कारण म्हे खुलै सब्दां मे चाय नही पीवण रो कय दियो। पण फत्तीबाई भी सोर सास मानण आळी लुगाई थोडी ही। बोली—'पान पत्तो तो चालसी ?"

पान र टुकड खातर हू ना नही कर भक्यो। वा चट्टाई र टुकडै मे पळैट्योडै पाना माय सू दोय सावता पान काढ'र पाणी सू धोया अर काथो-चूनो लगावण खातर कुलडक्या नै सिरकाई। समचै ही एक अधखड सो धोळी पोसाक आळो आदमी ढूढीरी लारली छानडी र माय सू निकळ'र आगणै मे आयो अर आवतो ही बोल्यो—"एक टुकडो वेसी लगाईजे।"

फत्ती बाई तपडिय नै खोल'र एक टुकडो भळ काढ्यो। तीनू पान लगाय'र एक तो आप खद मुहड मे घाल लियो अर एक-एक म्हा दोनुवा नै पकडावती बोली—'थे थोडा बठया ! हू थोडो चौक कानी जाय'र आऊ हू।"

फत्तीबाई चप्पलडी पगा म घाल र मिदर आगलै चौक कानी बूही गई।

००

उणर गयो पछ धोळी पोसाक आळो पान रै पीक रो पिचरको थूकतो बोल्यो—"आप ?"

"मास्टर हू मा !"

'अच्छा ! लारल दिना पळटीज'र आप होज आया ?"—वो आखरा नै पानर साथ चिबळतो बोल्या।

"जी !"

'कितराक टाबर आव है ?

'नाव तो सौ-सवासो माड्या है। अब देखा, हाजरी कितरो काढ रसो ? अबार तो सगळा छोरा चुनाव आळी जीपड्या लार दौडता फिर है।"

गरीब है, बापडा ! इणा नै काई पत्तो कै भणनो गुणनो किसी चिडकली रो नाव है। बहकावण आळा रो आज र जमान म घाटो कोनी ! टाबरा बापडा नै तो दोस ही काड, अज ताई तो इणारा माईत भी पूरा समझ कोनी।"

'पण, आजादी र बाद तो इणा गरीबा री गरीबी मिटावण खातर बहोत-कुछ हुयो है ?'

हा हुया है पण उण सू गरीबां री गरीबी तो है जठैरी जठ पडी है। हां, इणर वह न सू अमीर लोगा आपरो सिट्टो जरूर सेक लियो। आप अज ताइ इण बस्ती मू पूरी तर वाकिफ को दीसो हो नी ? आप कदे ही इण वस्ती र घरा म चक्कर काढ र देख्या क अठ मिनखजमार री काइ हालत हुय रई ह।

पण इण म दोस किण रो ?

दोस ता इणा गरीबा रो हीज ह। ज आपरो भलो बुरो खुद समझण री ताकत वा राख नी। इण बस्ती र लोगा न ही जावो। अ सगळा अठ आवण सू पला सहर र नामी ग्रामी मुहल्ला म बसता हा। पण हुसियार लागा आपरी हुसियारी सू इणा न अठ लाय पटक्या अर इणा री सान मोल आळी जमीना घड़र माल लय र आपर कब्ज म करली।

सरकार तो इणा न पलट बणाय'र बसाया हा, जद क पला अ तगाट्या ताण्या पड्या रया करता।

आप ठाक फरमावा हा, मास्टर सा ! पलट बण्या। नळ बिजळी री सुविधा हुई। पण सहर सू अठ आय र बसणिया री अर पलटा री गिणतकार कर र तो दखा। म्हारी जाण म सौ आदम्या र लार एक भी पलट पूरा पाता नही आव। पाणी र खातर जिक सार्वजनिक नळ है, उणारी हालत आ है क आधो दिन खोटी कर्या, वठ ही एक चुरलडी पाणी हाथ आव जिक सू टाबरा रा कठ आला करणा भी मुस्कल हुव।

सहर री सुविधा अर इण बस्ती री असुविधावां ऊपर चर्चा न्दाव आग भळ चालती पण विचाळ ही म्हारलो साथी जीप पाछी लय र आयग्यो। धाळी पासाक आळा म्हार सू माफी मागता थका पत्तीबाइ न हेला करण न उठ र बाहर गया परा।

धाळी पासाक आळा आदमी विचारां म काफी सुळझ्योडो लाग्यो। गरीबां ऊपर म्हन खुद न भी झुझळ आई। अ आपर भन युर र बार म खुद क्यू नहीं साच ? बाटा आळी जात न टो लवो। बाट व्यक्ति री निजू सपत्ति हुव पण अ लाग थोड स लोभ-लालच म फस र आपरी घणमाला सपनि नै घड र भाव गमाव। जिक नाग,इणान पीसा टक्का दय र बाट खरीद, व आपरा खर्चो ब्याज समत वसूलसी ता ण्णार कन सू नी। ता पछ इणारी गरीबी दूर हुव ता हुव क्यू कर !

धाळी पासाक आळ र साथ साथ पत्तीबाई घर म पूरी बडी ही कानी जिकर म्हारला साथी बाल्या— 'ता मा ! हू बात पक्की कर आया हू।

"पण थे थोडा मौडा आया । जा बाद तो तीन जणा और आयग्या । अब तो सात मात आठ रुपिया र अड गड पहुचगी ।' —फत्ती बाइ लाचारी सी बतावती बोली ।

"सात आठ रुपिया !'

आ भी कोई इचरज री बात ह ! हार जीत तो एक ही वोट सू हुय जाव । एक वोट री फक रया, लाखा रुपिया र ऊपर पाणी फिर जाव !'

जद ता भळ पूछ र आवणो पडसी !

'पूछो भला ही, पण उथलो बगो कर्या । अठ ता पला आसी जिकरी गौरी गाय ब्यासी ।'

✿✿

वोट भरीजण रो टाइम दिनूग साढी सात सू सिंझ्या पाच बज्या ताइ रो राखीज्यो । रोळा रप्पा ता आठ बारै पोहर पला ही वद हुय चुक्या । अब तो बस मायनी मारो चाल । फत्ती बाई रो आगणा मिनख-लुगाया सू ठसाठस भरीज्योडो । थभलिया र बाहरन पामी पाच सात जीपा ऊभी । वोटा रो भाव इक्कीस रुपिया नाइ चढग्यो । फत्ती बाई रा मन इण सू भी ऊचा हा । बा मिनखा र बिचाळ ऊभी आपर हाथा रा पजा छीदा भळा कर । उण आपरा पजा पाच बार छीदा भेळा कर्या अर ऊपर सू एक आगळी अलग । ग्णरो अरथ हुया — इक्यावन रुपिया । अजं सौदो तय नही उठ्या । आपोपरी म कानाबात्या चाल । इतर एक जीप भळ आई । उणमे सू एक नवयुवक वोटर लिस्ट हाथ म लिया नीच उतर्यो । बो पाधरो आगण म आयो अर आवतो ही बाल्यो - भाया ! अ डयोढ हजार वोटर जिका न थ हाथ बमू करणै खातर ताफडा तोडो हो, अ कुण ह ?'

म्हान पता कानी म्हान पता कोनी !' भीड मायसू रळी मिळी आवाजा आई ।

'आप लोगा न पता नहो ? तो सुणो — अ डयोढ हजार वोटर अठरी वोटर लिस्ट म कोनी पण ग्ण लिस्ट म छप्य लागा मायसू जिक जिक लोग फौत हुयग्या ह उणा लोगा रा नाव अर पता ठिकाणा इणा घोट राख्या है अर, उण हीज भूता र बल्ळ अ बाट देय र कमावणो चाव है । फत्ती बाई रो इण म रत्ती भी नाम नही है । इणर भाळापण सू ठग लोगा लाभ उठायो है । म्ह इणा री शिकायत अरज करवादी है अर रामजी कर्यो तो जाच पडताळ आळा भी आवता हीज ह्सी ।

"जाच पडताळ रो नाव सुणता ही धोळी पोसाक आळो सगळां सू पला आगण सू निकळ'र पट्टी हुयो । बीजा लोग भी होळ-होळ खिडग्या । फत्ती बाई भी कठी नै ही वूही गई । आगण मे रयो फक्त हू एक जणो । म्हैं भी स्कूल नडी लेवणी आछी समझी । हू रेल रा चीला पार कर'र स्कूल कानी ढळ्यो हीज हो क लार सू एक रेलगाडी घड़ घडाट करती चीला सू गुजरी । म्हनै धोळी पोसाक आळ री गरीबा री हिमायती चढण रो कारण साफ समझ मे आयग्यो । भेड र ऊपर लाणी कुण छोड ।

हू स्कूल आळी वच ऊपर अकूणी दिया साचतो ही रयो ।

वैराग

बाबैजी नै म्हारो पूरो पतियारो आयग्यो तद वा आपर वैरागपणरी सगळी बात धुर-पेड सू माड र बतावणी पळाई—

बच्चा ! आज र अर आजसू तीस चाळीस बरसा पला रै जमानै मे दिन रात रो फरक पडग्यो। आज ता बेटी र बाप नैं जिको कई देवणा लेवणो हुव, ब्याह र टाकड ऊपर हीज देय दिवाय र निरवाळो कर दब, पण पलड जमान म जे बेटी र बाप वनैं ब्याह आळ टाकडै ऊपर देवण-लवण रा सरतत नहीं हुवतो तो वो मुकलाव वाइ टाळ सकतो। इण खातर मुकलावा ब्याव सू भी बेसी गिणीज्या करतो।

म्हार ब्याह नै भी पाच बरस बीतग्या, पण मुकलावो आग सू आग सिरकता गया। कारण क म्हार ब्याव म तो फकत फेरा ही फरा हुया हा, बाद बाकी लवणा देवणो मुकलाव ऊपर तय राखीज्या। इण बीच म्हारा मामासा रामसरण हुयग्या अर काकोसा फौज म भर्ती हुय र बार गया परा। घर म बडेरा गिणो अथवा मुखियो, फकत हू हो। खुद चलाय'र किया कैवना क मासका ! अब मुकलावो कर देवो तो ठीक रव। अठी नैं काळ ऊपर काळ पडता ग्या इण कारण म्हारा मुमरोजी चावता थका भी मभ नही सक्या। इंया दिन ऊपर दिन निकळता रया।

ब्याव र छठ्ठ बरस सरवाल विरखा हुई। बाजरी, मोठ, तिल गवार इत्याद सगळ धान म साव। अठी नैं म्हारा काकोसा भी छुट्टी लय र आयग्या। बार आवता ही म्हारी मा सा बात टोरी अर बनायो क लूठं टावर नैं घर लय आवण म हीज सार है। आ बात म्हार काकासा रै भी दूकगी अर व म्हार मासर जाय'र भाग्वा सुदी 9 अपात् चादण पाग ऊपर मुकलावो पक्को कर आया।

मुकलाव मे हालण खातर म्हारै काकामा भाई भेळप्पा अर वेनी-डव्या नै कयो पण काम धंधैर कारण सगळा नटग्या। छेवट एक नायार छोकर नैं साथ लभाया। भादवा सुदी 7 नै भगावटरा म्हे दानू जणा ऊठ ऊपर चढ र रवाना हुया। भूंय खासी भळगी ही। मारग म एक पियाणो करणा पड्यो। गाग मवू र दिन मर सोग दिन घरा मागर आळ गांव रै कनै पहूंचग्या, पण तारा हूयां पाड गांवर कनली नाडी ऊपर बैठा रवणो पड्यो। कारण क दिन थका सासर आळ गांव र मांय बड्यो सामुजो मुरग सिधार जाव।

नळान सू म्हे गाव ताइ पाळा ही ज आया । उण दिन मरन रो ऊठ ऊपर चढ्या चढ्या गाव माय कर निकळणो चाखो को गिणीजता नी । म्हे गवाड म पहुच्या जिक सू पना ही म्हार आवणरी खबर सासरिया न पहुचगी । म्हारला जडोडो साळा घर माय सू निकळ र म्हार साम्है आया । रामा स्यामा हुया । साळ वानू ऊठ आळी मारही नाग आळ छ रर रन सू आपर हाथ म लयली । म्ह दानू जणा उणर र र हयग्या । वोटडो आळ आमर वन पहुचता म्हारल साळ म्हान ऊपर जाय र जठणरी मन करी अर आप ऊठ न आसर र लारन पासी थाव म नयग्या । म्हैं नाया आळ छार न मम्वाप र भेल्या क वाररी खूज म जिको गेण गाठ आळो ड वो अर सभाळ आळी नाथळी ह उणा न मभळाय देव ।

✿✿

गावा मे जवाइ आय रा वडा वाड करीज । म्हारा भी वडा काड हुया । वामरा जडा नूता मगळा आय आय र भेळा हुवण लाग्या । ढालण्या गावणा शुरू कर दियो । जीमाजठो ह्या र उपरा त घर म लुगायारा गीत उगरीज्या । छार्या छापर्या भेळी हुय र म्हन तेडण न आइ । म्हार दूरा पाळी पग्रह घाट पोट'र पक्का कर्योडो म ह बोल छोडायता बार माथ टुर बहीर हुया । छोर्या म्हन साथ लेय र घरर लारन पडव ढकी । गावा म रगसाळा क्वो अर भला ही चित्रसाळा क्वा फक्त आ पडवो हाज हुव । पडव न चोखो लीप पोत र मवार्योडो । मायल पासी म्याणकी म एक बिना मीसी रो चिमनी चस । नही घणा चादणा अर नही घणो अधारा । छोर्या छापर्यागा मुहडा ओळखीज । म्हार पडव म पग देवना हा छोर्या वाध्योडा ह वार बाध्योडा ह कवती आडी आय फिरी । म्हार वार छोडावणो कठ हा म् भगाव भडार गोल र छोडाय दियो । म्हारी चरचरी बोनी मुण र बूतरी लुगाया उठ सू ही थथका घाल्या । पडवरा टामण ठूमणा सळ्राय र छाग्या आप आपर थ न मुकाम लागी । पडव म म्हे दो जीव रया हू अर म्हारी जोडायत । केई ताळ ताई म्हे दानू जणा एक बीज र सामन मिनड्या तण र वठ ज्यू वठ्या रया । थाडी ताळ वाद आपम म वोत वतळावण शुरू हुई पण जोडायत र मुहड ऊपर जिकी ग्रमियारी हवणी जाणजती वा म्हार निग म नहा आइ । म्हे मन म विचार्या क माईता मू विछडण र कारण बिलखी पडगी हुसी ।

आपरी भुय र कारण म्हन नीद ता नही आइ पण हू आग्या न जार मू मीच्या नीद आळा मूवं ज्यू मूतो । म्हारी जोडायत दाय च्यार वार पुरा मारा कर्या पण हू सागी जगा मू हाल्या तक नही । उण न आ पक्का धीराज वधग्यो क म्हन गरी नीद आपाडी है । वा माचो छोड र उठी अर हाट मी किवाडीर गाता माय मू

हाथ आडे'र बाहरलो कूटा खाल्या अर बार निकळी । म्है बिचार्यो क पिसाब बिसाब करणन गई हुसी । पण जद वा सामली बाड आळो जुल्टो डाक र बाड सूं बार निकळी, जद म्हार मन म टाभा पड गा क आधी ढळनी रातरा आ कठी नै जाव है ? हूं भी लार रा लार उठ्यो अर उण र पगापग ववण लाग्यो । दा पाधर पग गाव र गोरव बठ एवड म गई । हूं एक माटा बास र लार दापळ'र ऊभग्या । एवड म एवाड़ियो हो । म्हारी जोडायत उण न चचड र जगाण्यां अर उण र साथ खरी खोटी हुई । हूं छाता ऊपर भाठा राख्या आख्या फेवा दखतो रया । वा उठ सूं उठ र पाधर पग पाछी घर कानी टुरी । एवाडियो उठ हीज बठो । म्हार गळ ड्व तरवारडी रो खीला घाल्योड़ा हा हीज । म्हे उण न म्यान बार कर लियो अर उठै सूं ही सीध वाध'र गडगडियो । एवाडिया तारी न जोवण खातर मुहटो फारतो होज हो जितर वावळिया झाटको वया सूं उण रा माथो बूढ सामीरो थोळी मूं मंख छिटक र पड ज्यूं अळगो जाय पड्यो । हूं भी उठ सूं अडफेरी दय र हाल्यो । म्हारी जाडायत पहुंची उण सूं थाडा पला पटव म आय र सूय रया । थोडा ताळ बाद जोडायत भी आयगी ।

ㅁㅁ

एवाडै म गिरझानै उतरती दख'र केई उठी नै भावयो । आग एवाडियजी रा आंतरा आझरा गिरझा लय लय र उड । म्हार सासरिया न खबर हुइ । सगळा उभराण पगा एवाड कानी हाठा । हूं खुद भी उणार साथ गया । गाव गर भळी हुयगी । लोग तर तर री अटकळा लगाव । म्हारी जाडायत भी उण भीड र भळी ऊभी हाठ चाव । म्हे आडी निजर सूं उणन दखी । वा कवती हा क ज ठा ता लाग जाव तो तिक्का कर र चीतहूया नै चिबाय दूं । आ बात सुण र म्हन मुळकावणी छूटी पण हूं उणनै पीग्या । एवाण्यिरी लास न लवण न उणर परिवार आळा आया जद म्हन पता लाग्या क ओ जातरा बळाई हा ।

ㅁㅁ

मदगी बधाइ । उणां बाता न बरस बीतग्या । इण बिचाळ म्हार एक कबरडा भी जलमग्या । माजी सा रामसरण हुयग्या । काकासा लडलडाय र न्यारा जूना हुयग्या । घर म मारो बारा जाडायत रा । घर म उण रा हुकम हाल अर हूं उण न बजाऊं ।

गाव म पाणीरो तगचाई । म्हारै धन वित्त मोकळो सूं महीन म दाय तीन स्यारी तेवाडनी पडती । ऊन्हाळ गी रुत । स्यारी फलावटरी जोड या पाण पड । म्हार वनलो काम कारो घायाडो । हूं मूह सोज्लो हुया काम न लय र हळाया रे

वास गयो । बळ'ई लव ग्राळो । वै जाता ही कोस न गाठ दियो । हू कोस गठाय'र घर ढूको जितर चडड चादणा हुयग्यो । म्हार स्यारी तवाडणरी ऊतावळ, पण साथ ही भूख भी लागयोडी । हू कोस नै थमल ऊपर मेल'र रसोई ग्राळ झूपड मे बड्यो ग्रर सिरावण खातर हाडी माय सू खीचडो रावडी थाळी मे लवण लाग्यो । जितर म्हारो जोडायत भी दुहारो हाथ म लिया झूपड मे बडी ग्रर बडती ही बोली— थारो तो हियो फूटग्या दीस है । बळाया र ग्रठ जाय र ग्राया ग्रर बिना छाटो लिया ही चूल्है ताइ बडग्या ।'

म्हनै उण री बात सुण'र हसी ग्रायग्यो ग्रर लपळको निकल्यो— हू तो बळाया र बास म हीज जाय र ग्रायो हू पण तू तो बळाई ॥"

म्हारी बात पूरी हुई ही कोनी जिक सू पला ही वा बोली—'तो तो उण दिन उणरो मायो । ग्राग उण सू बोलीज्यो कोनी ।

म्हारली तरवार ग्राळो खीला सामली खूटी ऊपर ही टाग्योडो पड्यो हो । वै उणनै उतार र झट नागो कर लियो । हू झूपडिय माय सू निकळ'र बार ग्रागण म ग्राय ऊभो । तरवार रो पळको पडता ही हू उठ सू पड छूटो । वा वरण लाररी लार उडी । पण हू मरदरी जात उण सू कद पकडावतो । उण र भी एडी सू चोटी ताइ लाय लाग्योडी । वै तरवार री फाफ बाही । सजोग री बात, तरवार पूरी फबी कोनी, फकत उण रो पीपळा मौरा विचाळ लाग्या । लागता ही लोही रा तूतिया छूटग्या । हू हासतो ही गयो । हासतो हासतो बहोस हुय'र पडग्यो । जोग सू नाथजी महाराज रो ग्रखाडो रामत करण न जावता हो, उणा र मीट चढग्यो । नाथा पाटा चोपड र घाव ठीक कर्‌यो । थान जे म्हारी बात ऊपर भरोसो नही हुवतो हुव तो ग्रो देखो प्रमाण । नाथजी महाराज ग्रापरी ग्रलफी ऊची कर र घाव रो सनाण वताया । म्हैं देख्यो नाथजी र ठीक मौरार बिच ठीक—विलात भरीज जितरी चिराळी पड्योडी माफ निग ग्राव ।

ᴏᴏᴏᴏ

लूंट

लोगा री कैणावट साव खरी ऊतरी कै 'भोळा ! लोग तो बीघे दोय बीघे म घायोडकै माठा री टवाली खातर घर रा सगळा थाळी ठीकर बजाय बजाय न फोड न्हाख ग्रर हाकर्ला ऊपरे हाकर्ला कर-कर न रोही सगळी नै माथ ऊपर उठाय लेव पण थारो तो सब-कुछ लोगा लट लियो ग्रर थैं म हड सू बुडद तक नहीं काढ्यो ।" पण जद ग्रादमी री खुदरी ग्रातमा ही धोखो देय जाने तद ग्रौर किणी न दोस देवणो ही फिजूल है ।

जद कै उणरी ग्रर म्हारी उमर म फरक खासो हो । हू बीस इक्कीस बरसा री जोध जवान हुयो जितरै उण मस्किल सू पदर पत धाडा देख्या हुसी । तो पण उणरी बात करणै रो ढग अहडो हो कै हजारू ननुनच करण र उपरात भी म्हनै उणरी बात मानणी ही पडती । उण दिन भी छेवट उणरी ही बात सिर रई । रात सू गनायत घर ग्रायोडा बठा । सगाई पताई री बात भी रात ही चावळीजगी । बस फकत दिनूग ब्राह्मण नै बुलाय'र नमचार करणो बाकी हो । कोड र कारण म्हारो मन ग्राज बासा उछळतो हो । ग्रर इण खुसी मे हू उणनै भी सामल करणो जरूरी समझतो । इण हीज कारण भोराभोर हू उणर घर पहुच्यो । साभाग सू उणरा मा बाप मत गयोडा हा, फकत उणसू छोटी बना घर ही । म्हन भोराभोर ग्रायो देख र उण भी सदा ग्राळी दाइ मुळक'र म्हारो ग्रगवानो करी । हू ग्रागण मायल माचे ऊपर बैठग्यो । म्हार चैहर ऊपर ग्रायोडी खसी रा लोकटया वा पढगी ग्रर बोली— ग्राज तो डाढा खुस दीसो हो, काइ कोई खजानो हाथ लागग्यो !'

खजान सू भी देखादा, खाण री खाण हाथ लागण ग्राळी है ।'
लागण ग्राळी है, इणरो काइ मतलब ?'
मतलब समझण री कासिस करो ।"
हू तो कई भी समझी कोनी ।
"बस ता मानली हार ।"
"हा बाबा ! मानली ग्रा ही समझो ।"

म्है उणन सगाई-पताई ग्राळी सगळी बात मांड'र बताय दी । इण बातरै सुणता ही उणरो मु हडो धोळो धप्प हुयग्यो । पळ भर पला ढडाट करण ग्राळो फूल

जाण झोल री लपेट म आय'र मुरझाईजग्यो हुव । उणर चहर ऊपर आयोडी उदासी देख'र म्हार मन म भी एक हूक सी उपडी, दुरभाग री हूक । हू उणर लटक्त मुहड कानी देखतो रयो । उणरा होठ जाण कइ न कइ कवणो चाव, पण उणा री आवाज म्हार ताइ नही पहुच र खुद धणियाणी ताइ ही रयगी । हू इण हालत नै घणी ताळ नही झाल सक्यो । कयो — तो काइ थन आ बात दाय को आयी नी ?"

'पण जरूरत काइ है ?'

जरूरत ता बीज लोगा न हुव ज्यू म्हन भी है ।'

उण आपरो मुहडो थाडो ऊचो कर्यो अर मीट म्हारी आम्या म गुडोवती बोली— 'अर हू !'

उणरी हू' कवण रो लहजो अहडो हो क वो म्हारो काळजो चीर र उणमे गुडग्यो । हू बिध्योडो पछी सिकारी नै जोव ज्य उणन जोवतो वोल्यो— पण थारो तो ब्याव हुयोडो है अर भळ थारी अर म्हारी जात बिरादरी भी तो एक कोनी ।

"इण सू काइ फरक पड है !

'तो काइ तू पलड मोट्यार नै तिलाक देय र म्हार साथ कचेडी मे ब्याव करसी ?'

हमक उणगी आवाज म थोडी तेजी आयगी । बोली—"म्हैं एक बार कय दिया नी क इणा मायली केई भी बात री जरूरत कोनी ।

थनै ता जरूरत कोनी पण थार घर मे तू ही तो बडेरी कोनी अर साथ ही पीहरिया मासरिया नानाणिया दादाणिया भाई भेळपी अर यात बिरादरी मे बीजा भी मिनख है ।'

हा, है ।'

है तद उणारा कानन कायदा मानणा पडसी ।'

आजमू पला ना उणारा कानून कायदा आडा को फिरया नी ।

आज सू पला री बात और है । अ सब नेगचार टाबरपण र नाव खत जासी पण आग पतपोत तो एक म्यान म दोय तरवारा खटणी मुस्किल है अर जे कोई ब्यू-त्यू करन जोरामरदी अडावण री कोसिस भी कर तो समाज आळा इण बात न कद अगेज । सुणी है का नही—राड रडापा काढ पण माधिया भाई काढण देव तदक ।

'म्हार सब कुछ सुण्योडी समझ्योडी है । था भी तो आ वात सुणी हुसी क —मीयो बीबी राजी तो क्या कर मुल्ला, अर क्या कर काजी ।

घणो दळिया दळण म काइ सार हो छेवट म्हनै हार मानणी पडी ग्रर उणन धिगज बधावणो पड्यो क—"ठीक है भई ! थारै ज आ हीज हाडोहाड ढूक्योडो है तो ग्रा ही सही। पण आ नही हुय जाव क धोबी रो कुतियो घर रो रव न घाट रो, मधरवब मे हीज रोवतो फिर।"

"म्रो सरीर साजो-ताजो रसी जितर तो इण बात म किणी तर रो फरक पड कोनी ग्रर जे कदाच् ग्रो सरीर ही नही रव तो बात अलग है—ग्राप मर्‌या जुग परळ हुया कर है।

○○

उणरो परणेत भी म्हार साईनो सा ही हो। ईंया एक-दाय बरसा री ल्होड बडाई जवानी म किसो ग्ररथ राख। रग रूप ग्रर नाक नक्स मे भी उणर ग्रर म्हार कोई खास फरक को ही नी पण कद म कइ खटरो जरूर पडतो। स्वभाव रा सरळ ग्रर सीधा जाण गाय रा ऊपरला दात हुव। केई बार तो उणनै देख र म्हार मन म एक हूक सी उठती क इण तर र भोळ ग्रादमी र साथै विस्वासघात करणो ही खोटो काम है। पण थोडी दर म ही ग्रो विचार खुलो छाड्योडको कपूर उड ज्यू उड जावतो ग्रर उणरी ठोड ऊगतो ईरखा। म्हार ग्रर उणर बिचाळ ग्रो दाळ भात म मूसळचन्द ग्राळ दाइ ग्रायो हीज क्यू।

○○

गाडो गुडकता रयो। लारल दोय-तीन बरसां म म्हारा उणरा ग्रर उणर परणेतरा बूढिया माईत पीपळ रा पाका पान झड ज्यू झडग्या। म्हार घर मे तो बडेरा म्हारा बापजी हा। उणार गुजरता ही बीजाडा भाइ ग्रापूग्रापर दायजै ग्राळा बरतण भाडा लेय र यारा जुदा हुयग्या। उणर घर मे मरद नाव रो उणरो बाप हो तिकोबिनायी जग्या ग्रर भाई उणर हो नही। उणर बना जरूर ही पण व ग्रापूग्रापर सासर म सुबस बहती। लार रई डाकरडी उणरी मा, जिकी ग्राटमा सू लाचार। उणर परणेत र घर म बडेरी मा ही, जिकी नै सौ बरस पूग्या पछ उणरा भी सगळा भाई पाती पाळी लेय र जुदा हुयग्या। ग्रब समस्या उठ खडी हुई क— उण लाचार डोकरी री चाकरी क्यूकर ताब ग्राव। म्हा सगळा जणा मिळ बठ र ग्रौ त कर्‌यो क जितर इण डोकरी न सौ बरस नही पूग, इणरी बेटी इणर कन रय'र टल चाकरी करसी। ग्रर, उठी नै उणर परणेत नै उणर भाया यारो जुदो कर हीज दियो तद वो उठ एकला क्यू हाथ बाळ ग्रठै ग्राय जाव ग्रर इण डोकरी री सेवा-टैल मे मदद करै। इया जवाई ग्रर बेट म फरक ही काइ हुव, बेटी देय र बेटो लेवण री परापरी है।

थोड दिनां बाद उणरो परणेत भी उठै आयग्यो। दिन रो वो आपर काम धंध ऊपर वूहो जाव अर मिझ्या घर आय'र जीमा जूठो कर, जितर काई न कोई जम्म जागण आळो आय बठ। वो बिना टाळमटळ उणर साथ वूहो जाव, जिको सूरज री किरणा र साथ पाछो बावड। म्हनैं भी गावण बजावण रो सोख, सा कई बार हू भी उणर साथ वूहा जावता पण सारठ गाया पछ म्हार सू क्द ही उठ ठरी-जतो कोनी।

ꙮꙮ

कइ दिन उपरांत उण आपरी कूख सू एक बाळक नैं जलम दियो। काई पच्चीस तीस बरसां बाद आगण म नर नावरी छियां पडी ही इण कारण वा आपरी पीड न भूल'र खुसी मे साथ रळावण सार म्हनैं हलो मार्‌या। म्है पडद र मायल कानी थोडो सो मुहडो घाल'र देख्या तो म्हारी आख्या फाटी री फटी रयगी— छोर री घड उपर जाण म्हारो मुहडा चप्योडा हुव। उण छोर न देख र म्हारी भी छाती फूलीज'र पूरी सवागज चौडी हुयगी। छोर र पसवाड सूती लुगाई म्हन लुगाई नहीं लाग र साक्षात् देवी मूरत सी लागी। म्हार मन म आइ क हू इणनैं अबार बाथा म झाल र उठायलू अर जोर जोर सू हेला कर कर लोगां न बताऊ क— लोगां! जे था कदे ही सती रा दरसण नही कर्‌या हुवै तो आवो हू थान साक्षात् सती रा दरसण कराऊ। जिक र दरसणा सू कस्ट्या रा कस्ट छूट सक है अर दुखिया रा दुख दूर हुय सक है। पण, उणरी हालत देख र म्हन मन री बात मन मे ही दाब र राखणी पडी। जितर उण सूती-सूती ही कयो— कर लिया निधरा दरसण।

हा कर लिया।"—म्हार मुहड सू फक्त इतरो ही निकळ्यो अर हू पडदा छाड'र रसाइ म जा वड्या।

दसवैं दिन छोक र रो नाव दिराईज्यो। नाव उपर सगळ बास न जीमायो। गावण बजावण आळा र रुपिया री बरसगी। म्हार अर उणर तो आज सगळा सू वडो खुसी रो दिन हो पण इण खुसी मे उणरो परणेत भी लार नहीं रयो। आज वा पीस री जगां रुपिया लगावतो नहीं सक्यो जदक खर्च वर्च म वो सदा सू ही कमचस हो।

जीमण जूठण अर हातों पोळी रा काम निबट्यां पछ लाग आपू-आपर थान-मुकाम लाग्या। घर म रया फक्त पाच जणा— हू वा उणरा परणेत, परणेत री मासू अर इण जलम्या जिको डावडको। दिन ढळग्यो। म्ह सगळा जणा रसोई आळी आडै री छिया बठा घर बिध री बाता करा। इतर मे व आपरो मा र कान म

भैया—"मा ! तू वाव नै क्य दे नी कै—क तव मू क्यू आगळ्या बाळ आपार अ
हो जीमा जूठो कर लेव। आपाग किसा गेय रोट्या सू खाडा पडै है।'

जदपि आ व त उण आपरी मा र वान म कई ही पण उणर सपसपाह
सू म्हानै भी साफ सुणीजगी। डाक्टरडी वात कवण साम्' जवान उथळी, जितर
वोल्यो—"माजी ! थ विसराय'र क्यू फोडो देखो हो। म्है सब कुछ सुण नियो है
थार सगळा र जच जद म्हार तो रत्ती भर री भी अडकास कोनी उलटो रोजीन
रोजीर र खाचा ताण सू गल छूट जासी।

म्हैं म्हारी घर विखरी रो सगळो सामान लाय'र उणार अठ हाथ दियो
जीमा जूठो अर सूवा उठो उठ हुवण लागग्यो। म्हनै आ जाण र घणा अचभो हुय
क काल ताइ जिक लोग विरोध करण म आगली पात म हा वै हीज आज सगळ
सू मोटा समर्थक बणग्या। म्हन म्हार जीवण री सगळा सू मोटी जत आज ह
लखाइ। सजोग री बात म्हार उण आगण म पग दवता ही एक छोटी सी गुवा
वध र बडा गुवाडा बणग्या। गाडी बळध बोरा पटिया हळ-तागडा कसी कुवा
इत्याद सगळी जिनसा बीजी गुवाड्या आळा सू सिरैकार। गाया भस्या भी टाळवी
उणरी मनत अर म्हारी भ्रकन र ताण घर मे दूध घी री नदिया ववण लागगी
वास मुहल्ल री धणकरी सी लुगाया आपूआपरी कुलड्या टूगा लार लुवाया छाछ
छोट नै उडीकती। वा खद भी दिल री दरियाव—सगळी छछवार्या न पाती आ
छाछ घालती। अटाऊ बटाऊ भी छाछ राबडी धाप र जीमता अर आसीसा दवता
पुण्याई रो परताप—उणर एक नाळै च्यार छोकरा अर दाय छोकर्या जलम लियो
छोरा छोरी जद-कद भी म्हन 'वावो' 'वावो' कय र हेलो मारता म्हार काळज
ठडी लर सी ऊपडती।

वडोडा टावर ज्यू-ज्यू वडा हुवता गया त्यू-त्यू उणारा सगाई-ब्याव भी हुवत
गया। मिनखा माया प्राव। थोड मीक दिना म कच्चोड ढूढ री जग पक्की हुवल
खडी हुयगी। वळध-गाडी री जगा टक्टर आयग्यो। टावरा र भी टावर जलम
लागा। सरकार रो भी पूरो सहयोग मिळ्यो। घर मे रुपिया रा नाळा ववणा सु
हुयग्या।

सुख म दिना र निकळना काई जेज लागती ! टावरा सगळा रा ब्याव-अं
हुयग्या। इण बिचाळै म्ह तीनू जणा डाकरडी रा फूल लेय र गगा परसण नै गया
पाछा आया पछ गगेडा मे चौरासी न्यात करी। देसी घी री मिठाया अर पूडी साग
चोखळ सगळ म इण न्यात री खूब साभा हुई। पण गगा परसण नै गया जद म्हा
उणनै थोडी सर्दी जुकाम लागगी। डाक्टर-वदा री दवाई करी पण रोग घटण

जगा बधतो गयो ग्रर छेवट जावतो उणरा प्राण भी लेवतो गयो । खर, पाकी पान हो झड्या । बेटा पोता, रामजी राजी । चाखा बार बिन करीज्या । त्यात म वा हीज चौरासी ग्रर व हीज जीमण । खच-वच रो हिसाव किताव करीज्या । बाणिया वक्काला री उधारी चुकाईजगी । म्हे सगळा जणा काम सळटाय र बठा खर सल्ला बाता करा । इतर मे ही रसाई माय सू बडोडी बीदणी ग्रापर छोर साथ कवायो क— तू जाय'र बाबजी न क्य द क हुमैं व ग्रापरा सूवा उठो ग्रापर झूपड म हीज राख । पला री बात ग्रोर ही । हुमैं म्हान म्हार टाबरा रा साख-सगपण करणा है ग्रर ।

म्हा सगळा उणरी वातासँ चड्ड सुणली । म्हारला उण भाई भी बीदणी री राग म हीज राग रळाई । म्हैं उणर मुहड सू आ बात सुणी तो म्हारी ग्राख्या र ग्राग अधारो ग्रावण लागग्यो । म्हे मन मे साच्यो—"ल, भोळा ! ग्रब इण घर सू थारो अजळ उठ्यो हीज समझो । भरी पूरी जवानी इण ग्रागण म गाळ दी । ग्रब जावता र कन रया गळ्योडा हाड ग्रर चामडी । इणर उपरात थार कनै काई रयो ! बेटा पोता रो भर्यो पूरा परवार थारो हुवता थका भी थारो को बाज नी । ग्रसलियत ग्राज समझ म ग्राई । जिकी लूट नै तू सामल री समझ्या करतो वा खुद थारी हुई । समझ ग्राई पण ग्राई माडी । ग्रब कोई कारी लागण ग्राळी है नहीं कारण क मसाणा म पड्या लक्कड हेल ऊपर हेलो देवण लाग रया है—ग्रा भोळा ! ग्रा भोळा !!

□□□□

चस्मदीठ गवाह

"वखत भोत माडो आयग्यो" "कळजुग है भई ! कळजुग", "खोटो जमानो", "इण जमान मे मूछ-पाघडी रवणी मुसक्ल है" "वखत तो वापडो बो हो, जिक म तरवर रो पत्तो तक नही हालतो'। "राज राज तो करग्या वापडा राजा, जिका र राज मे भेड रै गळ म कोई सौन रो वाळलो घाल देवतो तो भी कोई हाथ नही लगावतो"। "मिनख तो वापडा व हा, जिका रै मा सो मा अर वैन सो वैन"। "मुक्ळायत रा तो जमाना ही बीतग्या, राड रूड्या भी रुपिया सू कागला उडावतो। "अर भाई ! पलड वखतारो काई वूझो, एक रुपिय र सामान मे बारी भरीजती, बोरी !" "गुड मिठाण चीणी चावळ, दमेदा पतासा, खारक सिघोडा नेजा-पिम्ता आद सू भडळा भरी रवती" इत्याद—छोटा-मोटा फिकरा न सुण'र पैलड वखत री एक अहडी तसवीर उतरती जिक म ग्मळी वाता मे सुख ही सुख, दुख रो ठ ही लाव-लेस ही नही। काइ मिनख अर काइ लुगाई, सगळा जाए देवी देवतावारा औतार हा। आमदनी री तो पूछणी ही काई, जरा सो हाला डोलो कर्‌यो अर खूजा भरीज्या लोटा सू। और, लोट री भी कीमत किसी थोडी, दोय-अढाई रुपिया मे बोरी भर्‌या मोठ गुवार आय जावता। धोतिय री फ्डद रा लागता घण सू घणा नौ दस आना। राज री ठाक इतरी क भला ही सोन रा क्ळसा चौगान म पड्या रैवो, उठावणो तो अळगो रयो, कोई देखतो तक नही। सगळा लोग मौज मस्ती री जिन्दगी जीवता अर मरया पछ लार देवळ चिणीजता। अहड जमान नै जे काई सतजुग नही कवै तो आ क्वणिय री भूल है। पण, क्वणी अर रवणी मे आकास पाताळ रो आतरो भी थोडो गिणीजसी। अ लोग जिक सतजुग री वाता कर वो कोई हजारा वरसा पला नही आयो, बात हुसी कोई चाळीस पताळीस वरसा पलारी।

ᴗᴗ

'अे अे ! नींद ले ली काइ ?'—म्हे जोडायत नै चमेडतां कयो।

'नही तो ! पण हमै ता नींद रो वखत हुयग्या सा नींद तो आसी।'

'एक वात तो सुण।'

'कवो।'

आपारा बडरा आपार वड भाग सू अज तांई जीवता है अर उणा मायसू भी घणकरा सजोड ।"

"हा हा ! है तो !"

ज लोग कव क जमानो तो बापडो वो हो जिक म अ जीया अर आज ! आज तो हाथ न हाथ खाव है ।"

'हा कव तो आ हीज है ।"

पण इणा लोगा आपर जमान मे जिको सतजुग बरतायो उणरा प्रमाण भी अज ताइ मौजूद है ।"

आ बात म्हारी जोडायत र कद समझ म कम आई इण खातर वा विणी ही तर रो जबाब नही दय'र फक्त म्हार मूहड कानी जोवण लागगी । हू बोल्यो— 'काई बात समझ म को आई नी ?"

'थे कवता जावो हू सब समझू हू । थे कोई ससंत्रित तो बोला हा कानी ।"

फलाणा दादोजी जिक घर मे हाळीपो कर तने ठा है क व बिना पोस-टक्कर रात दिन क्यू दोड फलाणकी दादी आपर घर रो सगळो सामान अर गाया भैंस्या लेय'र फलाणी जगां क्यू आय बठी फलाणकी बडिया र टावर मोट्यार मर्‍या पछ कितर वरसा सू हुयो फलाणकी भूवा आपर मोट्यार न छोड'र पीहर न झाल'र क्यू वठी है । अर ।"

'बस-बस ! बद करो बखाण ! म्हन ही काइ सगळ जगत न पत्तो है ।"

तो काई इणा लोगा रो सतजुग ओ ही है ?'

करसी जिक भरसी !'

पण गली ! जिक घर र च्यारूमेर पाखाना ही पाखाना हुव वो घर दुगध सू किया बच सक है ?

मक्कड भवरा र बाहर कर लटूबण सू किसो गुलाब रो फूल काळो पड ज्याव अर जहरील नागा सू भर्‍या रवण आळो चदण रो बिडलो किसा आपरो गुण छाड र जहरीलो बण जाव ! आप आपरा खभीर हुव । आक र कीड नै आक हा मीठो लाग अर आव आळ न आब ।'

जोडायत र इण निश्चय भर्‍य जाव ग हू काई पडूथळा देवतो ! गहस्थ रो गाडो तो ज्यू त्यू कर र खाचणो हीज हो, इण खातर बात न घणी कचोवणी आछी नहीं समझ र सू रया ।

००

'आवो आवो, बारठ बावाजी ! अबक तो घणा दिना सू दरसण दिया।"
—राजपूत थाणदार आपरी खुरसी सू ऊभो हुवतो बोल्यो।

"काई करतो आय र, थाणदार साहब ! म्हनै गिडका काढत नै वरस छव हुयग्या। धन गयो जिको तो गयो इण थाण अर घर र बिचाळ रगडीजता रगडीजता म्हारा खुरिया तक घसग्या अर कमावण खावण सू रयग्या।"

'हू तो अबार हीज आयो हू, बावाजी ! अज ताई पूरा कागज पत्र भी देख्या कोनी, देख र हुसी जिसी कय दमू।"

"कवणो काई है थाणदारजी ! चोरा रा नाव तकायत हू जाणू हू, पण फक्त जाण्यां सू काई हुव ?'

'आ तो थे साची फरमावो हो बावाजी ! फक्त जाण्या सू काई हुव। कानून तो गवाह माग।"

थाणदारजी ! जे काई दठू हुवतो तो इतर धन नै सोरै सास ले जावण थोडी ही देवतो।'

'कानून आंधो है बावाजी ! कोई दठू नही जद म्हे भी किस आधार ऊपर कारवाई करा। आग वधण खातर कोई न काई बहानो तो हुवणो जरूरी है।'

बहाना जोवता जोवता बरस छव तो बीतग्या। आज ताई पू छहलाओ धन किसो जीवतो रयो है जिक नै बरामद कर लेसा !

'अब तो काई उपाय ही कोनी, बावाजी !"—थाणदारजी अकूण्या ताई हाथ जोड दिया। बारठ बावोजी उठ र आपर मारग लाग्या। लार सू एक सिपाही थाणदारजी कनै आयो अर बोल्यो—'साइब ! अ बारठजी कमाइड है। इणा री कोई आठ दस गाया भस्या अर साढ्या काई अगूणिया चोर काढ र लयग्या। बाहर आळा नै चोरा कय भी दियो क आप आयग्या हो तो बारठजी आळा धन थे ले पधारो। पण, बारठजी वाल्या धन आसी जण तो सगळा (कइ बीज लोगा रो धन भी साथ हो) रो आसी अर नही तो बारठजी आळो ही माग जासी। अब आप ही सोचो सगळो धन दय र किसो चोरा न जेळ जावणो हो। पछ बारठजी पावस्या भी पण तद ताई धन लख लागग्यो। उण ही सदमैं सू अ पागल हुयग्या बताया।'

'काचो छातो रै आदम्या सू आट नही अन जद भवरो कळी छाड दव।'
—थाणदारजी सिपाही न समझावता बोल्या।

वडोहुकम !" कय र उण थाणदारजी री वात रो समरथन कियो।

'वालो — जो हू कसू साची साची कसू। ईश्वर म्हारी मदद कर। —

पमवारजी उणरो वाधो झझोडता क्या।

उण लार री लार पूरी ग्रोळी विसरायदी।

'तै उण ग्राळ भोळ वाळक री ज्यान क्यू ली ?

"गळनी हुयगी वापजी ! घर लुगाई बीमार ही ग्रर डाक्टरजी दवारो क्क्रो लिख दिया। म्हार कनै जहर खावण न भी पीसा नही हा तद मरत ग्राव चाव्यो।'

पण जे थन पीसारी हीज जरूरत ही ता तू उण छाक्ररा कडिया ग्रर हासली काढ लेवतो, मार्‌या क्यू ?

'बापजी ! म्है जाण्या छोरो जावतो रया तो पाधरो घर म बडसी ग्रर घर ग्राळा उणन ग्रडोळा देख र ग्राज बीण करसी तद हू किस बिल म लुक्सू।

पण पछ भी पक्डीज तो गयो ही तद जीवहि्त्या करण म किसा सार निकळ्‌यो !

पक्डीजतो तो कोनी ! पण वापजी ! म्हन हाथ रा हाथ पीसारी जरूरत ही दण कारण तलीवाड जावणो पड्‌यो ग्रर तलीवाड ग्राळा धोख सू पक्डवा दिया।

पछ दवाई पाणी कुण लाया ?

दवाई पाणी किण र खातर जोईजती। हू सिझ्या ताइ घर नही पहुच्यो तद सुणी ह क लुगावडी ग्रपडी बिलारती बिलारती ग्रापरा प्राण दे दिया।'

ग्रव ग्राग काइ चाव है ? सफाई म कइ कवणो है ?'

'हा, सफाई म म्हन भौन कुछ कवणो है, वापजी ! ग्रौर ता थार जच जिकी करिया पण एक ग्ररज म्हारी भी याद राखीजो क म्हनै जिको भी डड दियो जाव, उणम म्हारी मौत जरूर हुय जावणी जोइज।

मुलजिम री ग्रा बात सुण र हाकम मुसद्दी पेसकारजी वकील इत्याद सगळा जणा उण र मूढ्‌ड कानी जोवण लागग्या। ग्रदालत कान ताई र खातर उठगी।

□□

इणा पाटळ्‌या म काइ है ? —कोटवाळ साहब तडक र पूछ्यो।

'हिरणिया है, वापूडा। —पोटळ्‌या खोलता-खोलता वनवावरिया वतायो।

'थान पता है वाव र राज म हिरण मारण री मनाई है ?'

पतो है बापजी ! पण म्हानै भगवान जामो ही इसै परवार म दीनो है जिक म हिरण मारणा ही एक मात्र धधा।

"मोल मजूरी कर'र पेट भराई क्यू करो नी।'

कुण लगाव म्हानै मजूरी ऊपर ! म्हे काई एक गोय जणो तो हा कोनी जिको मजूरी ऊपर लाग जावां। पूरो रो पूरो कुनबो है म्हारो ग्रर हिरण मारण र उपरांत म्हे ग्रोर कोई काम भी तो को जाणा नी।"

ग्रर भाई ! काम तो ग्रभ्यास करण सू सीखीज जाव।"

'पण तद ताई म्हे ग्रर म्हारा बाळ-बच्चा काई खाय र जीवा ? म्हानै तो भगवान महाराज ग्रो ही होसो भोळायो है ग्रर म्हे जीसा जितर ता इणनै निभासा ग्रर मर जासा जद बात भला।"

"हालो हालो गाठड्यो उठाय नो ग्रर थाण हालो।'

'क्यू फोडा घालो हो, बापजी ! लारै बूढा ठेरा, लुगायां ग्रर बाळक म्हारी बाट जोवता हुसी। काल सिञ्यारो अजळ कर्‌योडा है बापडा रा। ग्राज भगवान जाण कुदसिय रो समेळो हुयो जिको पलो ता सिकार मोडी हाथ लागी ग्रर ऊपर सू ग्राप लोगा रा डडा।"

'कई भी हुवो थाणै तो चालणा ही पडसी।"

बापजी ! क्यू म्हारै पट र ग्गडो देवो हा। थाण ग्राळा म्हानै गिटै कोनी, पण हिरणिया जरूर खोस लेसी ग्रर म्हे भूख पेट सारी रात तारा गिणसां !'

"छोड दो कोटवाळ सा ! बापडा नै जावण दो। ग्रलगत मानखा जद कद भी हिरणा सू मोटो हुया करै है। बापड टाबरां रा ग्रांतरा कुरळावता हुसी।'

'ठीक है थे ग्रवार ता जावा पण कालै ग्रठ सू लद जाया। ज काल र ग्रठ सिकार करो ता हू रिण ही भाव थानै को छोडूला नी।'—सरपच रु दे दी।

थांरा बचिया जीव। म्हार किसो ग्रठ रो ठेको है। काल दोय पाव देसां। —कचना वनबावरिया ग्राप ग्रापरी पोटळ्यां उठाय र रोही कानी टुरग्या।

oo

थे काई करो हा रे। ग्रठ भळा हय'र।"—ठाकर कडक र बाल्या।

नापूडा ! पट भराई ग्रातर कई खजरा रग करां हा।' लुगाया ग्रर मिनख ग्रघपढय ढांड ग्रर छावडियां ऊपर ग्रोढणिया-खेसला न्हाखता वाल्या।

यो थारो खज है ? थारै सू कमाय'र दोय रोटी रो ग्राटो नी वपराद्ज नी।'

को वपराईज नी जर ही तो थे मुडगा करो जिक नै म्हे ग्रर म्हारा टाबर ग्रमृत कर र ग्रावरा हां। नहीतर म्हे किसा मिनख कोनी ग्रर ग्हानै किसी थार

इण खाड न तो दोनू वखत वूरणो
आळं दाई सुग्या को आव नी पण पेट पापी है।
हीज पड।
'अर ! दोय रुपियां री मण भरी बाजरी आव जिका एक आदमी नै महिनो
भर को खूट नी। तो पछ थे इसो अकरम क्यू करो।"
वापूडा ! थे कवो जिकी बाता तो सोळ आना साची है, पण दोय रुपिया
आट म हुव जद आव नी मण बाजरी। म्हार लुगाया नै तो सारो दिन वसीठा र
घर रो खोडसा करणो पड अर म्हे भी दिन भर धणिया र बाड बेलड अर गाया
टोगडिया रो काम साभा। हमैं थ ही बतावा क मोल मजूरी करा कण अर रोजीन
गावा म मोल मजूरी है भी कठ ! मजूरां नै तो मजूरा री जरूरत कोनी अर पाच सात
गवाडी मातबरा री ह, व मजूरा न ढाब कितराक नै ? म्हार दोनू वासा पूरमपूर सौ
घर है—पाच सौ आदमी।'
उणारी वात सोळ आना साची ही। ठाकर बाल'र काई कवता। आपरी
घोडकी न दडवडाय र गाव नडो लियो।

ꕤ

'आप कठ सू पधार्‌या ?' —घरधणी दोय-तीन ऊजळ धोळिया नै घर म
वडता देख'र बूझ्यो।
'म्ह तो माहतजीरा आग्मी हा। गाव-वास्यां री हैसियत दखण न उणा
म्हान मल्या है।"
"दखो सा चाखी तर।' —कैवता घरधणी भी उणार भेळो भिळ'र आगण सू
सामली साळ मे वडग्यो। सामली साळ र आजू बाजू दाना कानी दोय ओरा हा।
घरविखरी रो सगळो सामान इणां ही ओरां म रया करतो। मोहतजी र आदम्या
आपर खुदर हाथा सू भटळा रा एक-एक बरतण उठाय'र दख्या पण किसैं ही बरतण
मे दाण रो फाका ही को निकळ्यो नीं। वा घरधणी न पूछ्या— घर मे धान को
दीस नी ?"
'आप दखो हीज हो आप किसा कूड कवा।"
इया काम कितराक दिन धिकसी ?'
"आज तीन दिना स तो बराबर धिक है आग री आग देखी जासी।'
थे ता काई ठा' मोटा हो सो धिकाय निकळसा, पण टाबर ।'
"सगळा रो परमातमा वेली है।"
परमातमा काई कया देय-देय'र तो जीमाव कोनी। किण ही बाहर वरतण
न जाचता। इया तो टाबर बिलारता बिलारता मर जासी ?'

'देखा सा ! बुरो मत मानीजो। बोहरा बरतण सब हुवतरा बेली है। उणानै लार कई गु जाईस दीसबो कर तद ताई ता एक बोरी मांग्या साथ ही पाच बोरया भेज द, पण जद उणान इण बात रो पतो लाग जावै के आसामी कन फूटी कौडी ही नही बची है तो पल्ल म तोल्योडो धान पाछो नखाय लेव।'

"आ बात ता हक री हाज है। इया बोहरा आसाम्या नै तोलता जाव तो तोल कितराक दिन ! एक दिन बोहरा खुद नै भी आसाम्या आळी पगत मे बठणो पड।'

"आ तो थे जाणो सा ! म्है ता देखी जिसी आपनै कय दी।'

ΩΩ

म्हार सू पैलडी (विगतकाम अर सकाम) दोनू पीढ्यां भगवान नै प्यारी हुयगी। म्हार साग आळा मांय सू भी खासा थका इण असार ससार नै छोड चुक्या। जिक केई ऊबरिया वै भी खंड वट हुयोडा। केई खुद रडवा हुयग्या तो केई जावता आपरी घरवाळया नै रडापो देयग्या। इणरै परबारू जिके ऊर्या उणा रा डोळ देखण जोगता है—केई रा दात पडग्या, केई नै जाबक सूझ कोनी, केई रा गोडा दूख केई री कमर आटी हुयगी। पण जद कद भी दोय घडी भळा हुय र बठण रो काम पड जाव तो सागण ही म्हार सू पलडी दानू पीढ्या आळी वातां—जमानो खोटो आयग्यो, वखत तो बापडा बो, राज ता करग्या बापड़ा राजा, मुकळायत रो तो वखत ही बीतग्यो।

हू इणां बातां नै सुण सुण'र सोचूं कै अ मिनख किस जमानै री बात कर है ! अ जलम्या जद ता हू इणार आग तयार हा अर तद सू लगाय'र आजाआज ताइ इणार साथ हू।

ΩΩΩΩ

सुपना री लास

लाडकी ज कोई भाठ पत्थर री देवळी हुवती ता उणन ओलभो भी वाजिब हो। पण उणर भी बीज लोगा र हुव ज्यू रा ज्यू हाड मास आळो सरीर हो अर उणर माय हो कवळ काळजिय म बसतो मन। उण आपर मन म अनक सुपना सजोया अर उणा नैं पोळ पपोळ'र बडा करया। आ लाडकी रो दुरभाग ही समझो कै उणरा व फळरा फरस सुपना उणर हाथ सू ही नही गया, जावता काण मरजाद, इज्जत आबरू अर मान सम्मान न भी साथ लेवता गया।

लाडकी बीजी छोर्‌या आळ लाड ढब्बू अथवा गबभू छोरी नहीं ही। वा पूरी पाच बरसा री भी हुई कोनी जिक सू पला ही छोटा मोटा बरत इकासणा करणा सुरू कर दिया। पाच बरसा री छोकरी न कित्या थका कातो न्हाय र पीपळ म पाणी न्हाखण न जावती देख र बास मुहल्ल री लुगाया थुथकारा घालती थकती ही। गवर र दिना लाडकी सगळा सू पला सभती। उणर साइणी छोर्‌या तो गूदडा ही को छोडती नीं पण वा आपरो लाग्यो लय र घर सू बार आय जावती अर—धोर टळती न्लडी अे—गीत उगर दवती। आपसू बडोडी सरवरी री छोर्‌या साथ रवण सू लाडकी र सगळा गीत कठ हुयग्या अर बार-तर बरसा री हुद जितइ वा उणा गीता रो ज्ञान भी चाखी तर समफण लागगी।

डीघो पतळो लळवळियो अऽऽऽ भाया म सिरदार कडी जद कद भी लाडकी न याद आवती उणरो मन रगीन मुपना म रम जावतो। उणन आपरी साथण्या—कोजकी धूडकी छाटकी दुलकी मीरकी इत्यादर गळगळ कठा सू निकळता बीणती भरया सुर याद आय जावता—ऊभा मूत बाड म अऽऽऽऽ खल्ला परया खाय ओ वर टाळी माता गवरज्या अ ऽऽऽ हू थन पूजण आई। वा उणा सगळया र माटयारा री सीबी-सूरत न याद कर कर र आपर मन म तोलती। लाडकी न लागता क माता गवरज्या उणरी सगळी सहेल्या न ओपता वर तूठी है। उणर मन म— डीघा पतळो लळवळियो अे—गीत री कड्या लणोलण उघडती जावती अर उणरो माथा अणचित्या ही गवरज्या र पगा कानी झुक जावतो।

००

अचाचूक रो रोळा सुण र बास महल्ल रा मिनख लुगायी अर टाबर टीकर नाणोराण भळा हुयग्या। लाडकी गवाडर बिचाळ बीफर्‌योडी ऊभी। उणर बार

कर मासू जेठाण्या ग्रर नणदा रो गरणाटिया दियोडो । वा घेरो तोड र वार निकळण खातर खस पण घेरो इसो तरडो क टूट नही । वै दात भीच'र एक घुम्मरी भळ दी । उण सू लटूजियोडकी जेठाण्या ग्रर नणन्दां छिटक'र ग्रळगी जाय पडी । मासू क्न ऊभी विलबिलाट कर । लाडकी खुली तो जरूर हुयगी पण मिनख-लुगाया ग्राळ वड नै तोडण री हिम्मत नही कर सकी । एक वार घसी जरूर ही, पण लोगा उणनै भळ झाल ली । वा परड सू छूटण खातर ताफडा तोडण लागी ग्रर एक दोय जणा र हाथा ऊपर बटकी भी बोढी, पण मिनख ग्राखर मिनख हुव, लुगाई जात उणर करार नै कद पूग । लाडकी त्रियाचरित्र पळाया—रोवती जाव ग्रर म्हनै छोड देवो म्हनै छोड देवो कवती जाव । लोगा पूछ्यो—"तू साम्ही रात जासी कठ ?

कूव म ! लाडकी गे छाटो सा उथळो सुण र लागा रा भी होस घता हुयग्या ।

'परणीज र ग्राई न ग्रज ताइ पूरा सवा महीनो ही को हुया नी ग्रर चाळो भाड दिया, वेटी रा बाप ! कइ ता धरम विचार ।' लाडकी री सासू ग्राम्या माय सू ग्रासू टळकावती वोली ।

धरम ता था राग्या है जिसा हू भी राख दसू । — लाडकी निधडक हुय'र वाली ।

सासू उगरी वात रा कोई उथळो नही दियो । उथळा दवती भी काई ? लाडकी री वात साव कूडी नही ही ।

सासू नै मून झाल्या ऊभी दख र लाडकी भळ वडक दी— 'धरमात्मा ! मून झाल्या क्यू ऊभी है म्हागी वात रो उथळा दे । थान म्हार बापर साथ चज रचता सरम ही का ग्राई नी ।

"चज ! —उठ उभाड सगळ मिनख लुगाया र मुहड सू एक साथ निकळ्यो ।

'हा हा चज ! करीज्यो म्हार साथ ग्रर म्हार बापर साथ । म्हारो बाप वरस म काई महीनो मास ग्रठ रव बाद बाकी रा पूरा दिन परदेस म गाळ । उणा न काइ पतो ग्रठ रा कुण सा गनायत सखरा है ग्रर कुणसा हळक्ट । टाबर टीकरा री जाणकारी तो हुव ही कठ सू । राइजाय नाईड र ऊपर पड पटकी, जिक म्हनै डुबोइ ग्रर म्हार बापर जलम भर ताइ रो साल पदा कर दियो ।

उठ ऊभोड मिनख लुगाया र मुहड सू च च कारा निकळण लाग्या । लाडकी परणीज'र ग्राई जद लोगा न इचरज जरूर हुयो हो क ग्रा फूठरी फररी गवर मरीसी छोरा इण भरतार र लार किण ? पण सहरा म बधती दायज टीक

म्राळी लाय न देय र थई बाप, म्हाऱ्या मीच र अधारो थ'र लिया हुसी, म्रा विचार म्रर लागा म्रापर मन नै ध्यावस दय लियो पण म्राज लाडकी री बाता सू साचा भेद खुल्यो। उण बतायो—'म्हन इण भरतार र लार म्राई तेय र लागो म्हार बारसा टका गिणया हुसी पण म्हारा बाप इतरो गयो गुजर्यो का है नी जिका पीस टकर लोभ म म्रापर काळज रो टुकड़ा इण मारटिय र लार थर देयता। इणारी छाती म भी तो बीस हजार रो धन बाळ यो है।'

लाडकी री बात म्राखर म्राखर साच ही। लाम म्राडो दय ता देव कायरा ? दत्त-दायजो सगळा म्रापरी म्राख्या सू देख्या हा म्रर छारी ही जिकी म्राज सगळा र सामन खुलो ऊभी ही। लाग सगळा मून म्राल्यां ऊभा।

लाडकी बतायो— ज म्हारो बाप इण भरतार ऊपर रीझ भी जावता ता परणावतो किणनै ? हू तो इणन म्हार यभर ही हाथ को लगावण दवती नीं। पण काळा खायग्यो माईड न। उण जिका छोरा म्हार बाप नै म्रर म्हन बतायो वो हजारू छोरा माय मू टाळ जिसो हो—सीधा पतळा गोरो निछोर म्रर परणायो किणन थे खुद ही दख लेवो वा साम्हो ऊभा है जे म्हारा कवणा कूड हुव ता।'

छोरो साचाणी ही चोकी कनल कूण र सहार चिपयोड़ा ऊभा हो। सगळ मिनख लुगाया री मीट एक स थ उणर ऊपर पड़ी। लाडकी री बात म्रावाम्राव सही ही। छोरो फक्त खटरा म्रर काळो ही नही हा नाक-नक्स म्रर काठी भी बेडोळ ही। एकी म्राख म गरडको एक कान खडित दात अरा-परा, फाटयोडी राफा। नाक माय सू सेडो म्रर मुहड माय सू लाळा म्रटल ववती रव। बोली म वार म्राना—बाई कवता राड निकळ। ंहावण धावण री ता बात ही छाडा कद ही सावळसर कुरळो ही क'र नही। कन ऊभ म्रादमी न बास म्राव। तारत सा भभव। लोग-लुगाया र म्रापस म काना बात्या म्रर च च कारा सुरू हुया। राफाराळ सो मचग्यो। सगळा जणा म्रापूम्रापरी दळ।

लाडकी ऊभी ऊभी म्रापर मन सू ही बाली— देख लियो भरतार रो सरुप ! म्रब हू बाणिय री बेटी काय मे हाथ घानू ? म्हन तो इणरो दिस्टाव पड्या ही उलटी म्रावण लाग जाव, म्रर ज कनै म्राय जाव ता जरूर ही दम घट जासी। इण खातर डोकरी मरी तो गई म्रर हिरण हुई तो गई। म्हन तो इया ही मरणो म्रर इया ही मरणो।''—कवता-कवता उणर मन म लर जागी म्रर जोर सू बडक मारी — छाड देवो म्हन छोड दवो।'

हाथ झाल्या ऊभा जिका सू सावळ सभीज्यो कोनी। लाडकी र म्रचाचूक र जोर सू व दोनू जणा दडाक दडाक म्रळगा जाय पड या। लाडकी छूटी हुय र घेर सू

निवळण लागी, जितर ऊभोड लोगा मांय स च्यार पाच जणा भचोभच उणनै झाल ली। लाडकी पाछी पकड मे आवती ही बेहोस हुयगी।

□□

लाडकी परणीजी नै आज दोय बरसा र अडे गड हुयग्या। इण बीच उणर मोटयार मे भी कइ बदळाव आयग्यो दीस है। कद ही चळू पाणी मुहड म घाल'र कुरळो ही नही करणियो छोरो हमैं दिन मे दोय-तीन बार तिरग टूथपेस्ट सू दाता नै साफ कर महिन मे दोय बार चळ छटाव अर रोजीनै दाढी रगड। दिनूग उठतो उठतो ही सिनान करल अर केसा न गरा चोपड'र बाव। कपडा भी टेरीकोट अथवा टेरलिन रा पर। पण ओ सगळो बणाव सिणगार उणर डील ऊपर आपरो ओपरो सो लाग जाण केई खेत आळ आपर खेतरी रुखाळी खातर सूक्याड ठूठ नै गाभा लत्ता पराय र अडवो ऊभो करया हुव।

लाडकी आपर रवय मे घणी कोई फोरसार नहीं करी, बस फकत राळा रप्पा करणा बद कर दिया पण साथ ही फिरा घिरी कइ ज्यादा करदी। सगळा जणा इण बात नै चोखी तर समय-बूझ है क लाडकी रत्ती भर भी कसूरवार नही है पण फिर भी दोस तो लाडकी र माथ ही मढीज। निलज्ज बारखाळी, मापामती हूसरडी इत्याद अनेक टाइटल इण गरीबणी र नाव ऊपर लोगा चेप राग्या है। लाडकी इणा माय सू एक री भी परवाह नही कर। आपर आडास पाडोस म जठ कठ ही कोइ गाभरू जवान दीख जाव कोई न काई बहानो बणाय र उठ जाय पुग अर आपर मर्योडक सुपनै री लास माग। सामल आदमी र कनै भला ही उणरी चीज नही हुव तो वा मत देवो इण बात रा कोई भी गिल्ला लाडकी र मन म नही है। नही गिल्लो है आपर सुपना न मारण रा, पण मिनख जात सू ओ गिल्लो जरूर है क सुपना नही तो सुपना री लास ता उणरी उणन भोळावा, जिक री वा सौ फीसदी हकदार है।

□□□□

अन्तर्दृष्टि

कुनकी न काल ताई आख्यां रैं आग पडी जिनस भी को सूझती नी । उणरी मा उणनैं इण खोटी आन्त र कारण नित हमेस दिखारती । कुनकी नैं मारा वान ताता खीरा सा लागता अर वा आपर मन म भळ वद ही इण तरंरी भल नही हुवण देवणरा मनसोबा बांधती पण थाडी सी ताळ बाद उणरा मनसोबा फक्त मनसोबा ही बण'र रय जावता अर कुनकी साम्ही पडी जिनसर खातर ढढाळा मारती फिरती । कुनकी नैं आपरी इण आदत ऊपर घणी ही झूंझळ आवती पण बात निजोगी हा इण खातर मन मसोस र रह जावती ।

आखावीज र दिन कुनकी र मन मे अणभ जागी । जिकी कुनकी नैं पगां म पडी जिनस भी नही सूझ्या करती उण न आज अूडी सू अूडी मल्योडी जिनस भी मैचडूड दीसण लागगी । कस्तूरिय मृग नैं सुगंधी रो ज्यू अचू भो हुव त्यू हीज कुनकी न आपरी अतर्दृष्टि ऊपर अचू भो हुवण लागो । वा इण बात रा भेद समझ ही नही सकी क रातोरात अणभ जागी तो जागी क्यू कर ।

कुनकी सदा ता सूरज ऊग्या पछ ताइ गूदडा म पडी रया करती पण आज वा आपरी मार साथ री साथ उठ खडी हुई । उण नैं इतरी वेगी उठी देख र मान थोडो इचरज हुया जरूर पण उण भी बोल'र कई कयो कोनी । कुनकी उठती पाण धोळी आळी कु डाळरी उठा लाई । कु डाळी म नही ता धोळी अर न ही मसोतो । उण तुरताफुरत काठलिय म बड'र धोळी री डळ्धा काढी अर कु डाळ म घाल र भिजाय दी । धोळी भीजी जिक सू पला एक ओगणियरो चिल्लो फाड र मसोता बणाय लियो । कुनकी धोळी घिगोळ र आगण र पसवाडची लाका देवणी पळायनी । घररा आगणा खासा बडा हो । आगण री पट्टी पूरी हुई जितर दिन खासो चडग्या । कुनकी री मा जितर राटी साग तयार कर लिया । व चूल्है र कन ही बठी हेला कर्‌यो— कुनकी ! राटा सिकगी, आवरी जीम ले ।

कुलकी मार हेलरो कोई उथळो नहा दियो । वा कु डाळी लेय'र पडव म जाय वडी । उण पडवर आगणार भी च्यारू मर पट्टी देवणी पळायी । ता बाद, बरसाळी, सामनी साळ बाहरली छानडी, आटा पागाथिया आद सगळी जगा पट्टया दय न्हाखी । कन्डा भात वळा हुयगी । कुनकी री मार आ बात समझ म ही

नही माई र भखावट-भखावट सिरावणरै खातर भूकणे माळी कुनकी री प्राज भूख मथू कर बद हुयगी । धोळी माळी कु डाळी नै हाथ मे लियां कुनकी नै उणरी मा मावळ लेवाळमीट हुय र देखी । उण न कुनकी म धीर तो कई परख निजर नही मायो, पण होळी ऊपर जिको लहगो उण र पगार हेठ दबीजता वो गिट्टा सू भी च्यार च्यार माागळ ऊचो चढग्यो दीस्या । उणर मुहड सू भणचायो ही एक ठडो निस्कारा निकळग्यो ।

कुनकी र पटू्या रो काम तो पूरो हु'या, पण हिरमच माळो सगळो'र सगळो काम बाकी पड्या । वा कु डाळी मल र हिरमच माळी कूडी उठाय लाई । उणरी मा चूल्है कन बठी बठी भाधती हुयगी । वा उठं सू उठ'र कुनकी र कन माई भर हिरमच माळी कूडी उणरै कनै मू लवती बोली—'ला मा थारी हिरमच हू घमू, जितर तू जीमल तो कोई बीजो काम उकल ।

कुनकी मारो कवणो मान'र चूल्है कन जाय'र जीमण न बठगो । रोटो रो पलडो टुकडो तोड'र मुहड मे लेवनां ही उणरी मीट पतरी । उणनै साप दीस्या क दोय काळा ऊठ, धाको सजाई सजायाडा उण र गाव भानी अका पडछ बूहा माव है मर उणा दोनुवा ऊपर बेलास करयाडा है । मगल ऊठर मागल मासण मे बठे मोट्यार रो चहरो उणनै सधा-सैधा लाग्यो । वा रोटी रा टुकडा मुहड म लेवणा भूल र उणरो चहरो मोहरा दखण लागगी । गोरो गट्ट रग, गाला र ऊपर थोडी थोडी गुलाबी झळक मोटी मोटी माख्यां, तीखो नाक, गुलाबर फूल सा पतळा होठ, मोती सा चमकता दात मर ऊपरन हाठ ऊपर फूटती मी कवाळा माथ ऊपर बदेजरो फैंटो मर धोळी धप्प जीणरा काट, मोणी धाती मर मखमलर पट्ट री पगरखो देख र कुनकी छकडीकम हुयगी । उणरी मा, हिरमच धस र उणर कनै माय बठी । उणन ध्यान मगन हुयोडी देख र बाली—"कुन्नी ! ल तू ता अज ताई जीमी ही कोनी अर देख म्है थारी हिरमच घस र तयार ही कर दी ।

मारी बोली सुण र कुनकी रो ध्यान टूट्यो । वा वेगा वेगा रोटी रा टुकडा तोड-तोड र पट म म्हाखण लागी । सब्जी म प्राज लूण बद कमती मर मिरचा कड तीखी ही पण मुसकारा करती वा जीमली । बीजा सगळा जणा जोमजूठ र पला ही निरवाळा हुयोडा हा । कुनकीरी मा रसोईरो सामा-सारो करण लागगी अर कुनकी उठती ही हिरमचरी लीका माळा काम माभ लियो । धोळी माळी पट्टार मायल पासो एक हिरमचरी चोक मर प्रारल पासी कटकी जाळी म्वणी पढाई । रसोईर मागली लीका देवती उण मापरी मान कयो-' मा ! मांगण मायलो चौक तो तू धोळी मू चाक द तो ठीक रव ! बेजोडा-गाडी रडो गेडियो मतरजी, गमला

इत्याद हू सगळा पूर देसू अर हा, लापसी आळो बाट भी तो थन तयार करणो है, हमैं दिन कठ–पछलारो दिन भर अऊतियरो धन, जावतो काई जेज लगाब।"

कुनकीर घरमे मा-बाप, बना भाई अर हेतू मुलाकाती कोई बीस आदमी एक पगतणा ऊभा, पण कुनरी र खदर मन म कोई न कोई खामी रवणरी आसका बराबर वण्योडी ही। इणर खातर पावणार हरक कामरी निगराणी वा खुद राखती। ऊठार नीर चार अर गुड फिटकडी सू लगाय'र पावणार पुरसार ताइ, उण पूरी पूरी निगराणी राखी। गीतरण्यान बुलाय'र लावणा अर फूठर सू फूठर गीता नैं गवावण री सगळी जुम्मेदारी तो फक्त उणर हा ऊपर ही। पावणार आवणरी बधाई र साथ ही कुनकी बास मुहल्लरी सगळी गीतार्‌या न भळी कर'र लेय आई। जीमणवाररी बखत उणनैं भळ दौडनो पड्यो पण जवाई जीम्या बाद जद लुगाया पाछी आपर घर जावण नैं सभी तो कुनकी उणा र आडी जाय फिरी अर कवण लागी क हमैं थे घर जासो तो जावो! म्हारी तो फिरती फिरती री टाग्या ही पिणिहारी गावण लागगी। थे जितरी बार फिरासो, थार काम पड्या हू इण सू सात गुणा ज्यावा फिरासू। भळ हमैं जेज ही कितरी क है!

लुगाया र भी कुनकी री बात हाडोहाड ढूकगी। व मगेरण कन सू घिरोळो देय'र पाछी आगणे मे जाय बठी अर 'आबा पाकया आबलीजी नीबूडा झोला खाय' गीत उगेर दियो। कुनकी गीतर आबा, आवली अर नीबूडारा उपमानारा उपमेय खोजण लागी। उणर सरीर मे कपकपी सी छूटण लागी अर डील पाणी पाणी हुयग्यो।

कुनकी दोय च्यार छोर्‌यानैं साथ लेय'र बैनोई नैं तेडण न गई। कोटडी आळै झूपड री मारी माय सू उण झूपड मे बठे मिनखारो जायजा लियो। सगळा जणा हमाळ्ठा करण नैं लागयोडा। उणरा बनोई एक किताब हाथ म लिया बठा। खवासजा बठा-बठा सुपार्‌या भाग। उण झूपडर कवळ जाय र होळ भी क्यो— वनाईजी! हालो थान घर म बुलावै है।'

बनोईजी किताब नैं भेळी कर'र आपर कोट आळी जेब में घाल ली। खवासजी सुपारी किरचा अर खाटी मीठी गोळ्या एक गमछिय म बाघ'र उणार हाथ मे झलाय दी। व उठ सू आळस तोड'र उठया अर पगरखी पर र कुनकी र लार लार टुरग्या।

**

रसोई आळै कनल पडव म जवाई न तेडण री तजबीज करीजी। बूढी ठाडी लुगाया आंगण मे बठी गीत गाव। मोटयार जवान बींदण्या अर छार्‌या छापरया भेळी हुय'र पडव म आय बठी। केई छोरया कुनकी री वडोडी बन न पराय ओढाय र पडव म लेय आई अर जवाई र बरोबर बठाय दी।

लुगाया आगण म बठी—दोया बिच म्हासू उठ्यो न बठो जाय—पहेली गाव। छोर्‌या छापर्‌या जवाई क्नै सू गोदी-तकिया माग। जवाई नै आव जिकी बातरो तो उथळो देय देव अर नही आव उण बात ऊपर भून झाल जाव। इया करती छोर्‌या छापर्‌या मसकर्‌या ऊपर ऊतरती बोली—"बनोईजी, इळायची दवो, डोडा देवो अर थारी मारा गोडा देवो।"

जंवाई तो छोर्‌यारी बात सुण'र चुप्पी साधग्यो, पण कुनकी नै छोरया आळी गोडारी बात ऊपर हसो आया विना नही रयो। उण मन मे विचार्‌यो—छोर्‌या गोडारो काइ माथ मे फोडसी। कोई छारो तो आ बात कंवता तो कइ ओपती भी लागती। जितर अक छारी बोली—"बनोईजी, थे बठो जण थांरो पला पोत काइ टिक ?"

जवाई उथळो देव उणसू पला ही कुनकी इणरा जवाव जाय लियो अर उण र मुहड सू निकळ्यो—"टिक मीट।'

जवाई आपरी मीट कुनकी कानी फोरी। वा पडव मायली घट्टी र ऊपर बठी ही। उणन आपर बनोई री मीट भूखी दीसी। वै आपरी आख्या हेठी न कर ली। जितर एक छोरी बोली—'बनोईजी ! थे थोडा अूभा हुवा देखा म्हारली बन सू कितरा'क डीघा हो ?'

कुनकी री आख्या बनोई कानी गई। वो कठमनो कठमनो अूभो हुयो। छोर्‌यां कुनकी री बन नै भी ऊभी करी, पण वैरा पग सावळ समया कोनी जितर केई छोरी र हाथरा टिल्लो लागग्या अर वा ढील अग बनोई र ऊपर जाय पडी। बनाई उणन आपरी बाथा म झाल'र पाछी सागी जगा बठाय दी। छोर्‌या नै आ एक तमासो लाग्या अर व सगळी हडहड करती हसण लागगी। कुनकी र तो हसता हसता आख्या माय सू आसू तक आवण लागग्या।

००

सगळ गाव मे सोपो पड ग्यो। कुनकी रा भाई भुजायां आपूआपरी जगा जा सता। कुनकी नै पडव कनली छानडी मे जगा लाधी। रात आधी र अडसळै आयगी ही, पण कुनकी री आंख्यां म बट तक नही पड। उणन पडव आळी भीतरै आरपार रो देखाव साफ दीसै। वा मूतियां र मिस उठ र बाड म गई। पडवरी एक छोटी सी मोरी बाडै मे ही। उण मोरी माय सू झाक'र आपरी मीटरी जाच करणी चाही पण कुनकी री बन पडव मायलो दीयो निंदाय दियो। कुनकी नै आपरी बन री इण अणतूती हुसियारी ऊपर घणी ही झूझळ आई।

पडवर माय सू आवती सिसकारारी आवाज सुण'र कुनकी चौक्नी हुयगी। वै आपरो जीवणोडो कान पडव आळी मारी ऊपर माड दियो। हमैं उणनैं सिसकारा आळा सास सचड्ड सुणीजण लागग्या। वा केइ ताळ मास रावया उठ हीज वठी रयी। कुनकी रो काळजो फडक चढग्यो। वा उठ स उठ'र आपर बिछावणा म आय बडी। उण पगाथिय पड्य काबळिय न उठाय'र आपर ऊपर न्हाख लियो अर आख्या नैं काठी भीच र नीद र खातर ताफडा तोडण लागी, पण नीदरी जगा उणरी आम्या मे वसाख र महीन म चू चू करता चिडा, मावणर महीन रा गधिया भादव र महीन ऊ ऊ करता गोधा अर काती र महीन कू कू करता कुतिया, एक र बाद एक ऊभरण लग्या। कुनकी रो सास फदक चढाय अर डील पाणी पाणी हुयग्यो। वैं आपरा पसवाडो फोर र सगळा डील माच आळी ईस ऊपर न्हाख दियो अर तकिय न छाती हेठ देय'र ऊधी पुरगी। पण कुनकी र इतरो करण र उपरात भी पडवर मायलो चिलत सिनेमा आळी रील दांइ उणरी आख्या मे नाचतो ही रयो।

००००

रड़कती फास

चौमास री रुत ! सावण रा महिनो ! कम्मा आपूआपरै खेता मे निदाण गे घघो कर। जिक लागा रा खेत घणा अळगा नहीं हा, व दिन रा खेत म काम कर परा'र सिझ्याग घर आय जावै। सिझ्या रो झुटपुटो। केई लोग जीम जूठ'र निरवाळा हुयग्या अर केई लोग जीमण नै बठा हीज हा इतर म अणूण वास मे रोळो सुणीज्या। लाग जिकी थिति म हा, दौड-दौड र रोळ आळ घर ढूकमा। मिनख, लुगाया अर टाबरा री मगरियो सा मडग्या। इण भीड न देख र गेळा करण आळी बीदणी और घणी विफरगी। उण आपरी कमर र आळा गेळो लपटयोडा आढणिया खान र फक दिया अर आगण र बीचोबीच ऊभ'र नाचण लागगी। नाचती नाचती गावणो भी सुरू कर द—म्हैं कोया थार मार—सनै काय रो दुखडा लाग्यो छोरा रामधनिया—लूहर रमवा म्हे जास्या—जिकै भी गीत री कडी मु हड चढ जाव, उणनै गावण लाग जावै। बीच बीच मे गावणो छोड र हसणा पळाय दव अर हसती हसती रोवण लाग जावै। जिकी बीदणी रो लोगा आज ताइ नख भी उघाडो नही देख्यो, उणनै आज इण रूप मे देख र लोग छकडीकम हुयग्या अर एक-बीज र साम्हा जावण लाग्या। बींदणी री सहर आळी नणद अर सासू उणन झाल पकड र जजमावण री कोसिस कर, पण वा झटको दय र उणान अळगी फैंक देव अर आप पला आळ दाइ नाचणा-कूदणा अर हसणो गावणो सुरू कर द। बीदणी रा अ चन देख र भीड आळी लाग लुगाया मे जितरा मु हडा उतरी ही बाता चाली। केई कया—बाई ! इणनै तो सागियाजी बैठाय दी दीस है।" कोई बोल्यो—'म्हन ता इण म ओपरी छिया पड्याडी दीस है। काई बोली—अर भाई ! थ तो साव भाळा हा ! इणर माथ कर तो बाण बयाडो है। सगळा लाग छेवट इण निरए ऊपर पूग्या क इण म कोई भूत प्रेत अथवा चूडावण रो चाळा है सू फलाणजी झाडागर न बुलवावो तो पलक झपता ही इणनै ठीक कर देमी।

हामट नै कूड भी प्यारी लाग। बीदणी रा सुसराजी भी लोगा री सलाह मान'र झाडागरजी नै बुलावण न गयो।

बीदणी इण दिना मोटयार जवान ही। पण ही दुखियारण। टाबरपण मे मा मरगी। दाद दादी पाळ पोस'र उडी करी। उण दिना बाळ विवाह रो चलो **चलो**

हो । दाद आछो घर गुवाडी देख'र कोई आठ नव वरसा री उमर म इणरो व्याव कर दियो । सासरिया भी घर घराए आळा मिल्या । छोकरो भी मवा गाम सू टाळ जिसो । पण बीदणी र भाग अठ भी साथ नही दियो । व्याव र कोई वरस छव महिना बाद उणन माता तापगी । माता भी इसी क डील ऊपर सूई न भी सचार री जगा नही । पद्रह-बीस दिना बाद माता ता ढळगी पण बीदणी र चहर ऊपर आपरी सनाणी छोडगी । रग उणरो थोडो मावळा पडता ही हो अर ऊपर सू माता आळा वण । बीदणी दखण म भूतणा सा लागण लागगी । छोकरो भी दिनोदिन हुसियार हुवण लाग्या । बीदणी गे चहरोमोरा देख'र बिदकग्या । छोरो बार-त्यूहार भी उणर साम्हो नही जाव । धीर धीर दिन निकळग्या । छोरो बापर लाडलो बेटो । जे दोय च्यार बेटा हुवता ता बाप भी बीजोडा न देख र आपरा जीव धपाय लेवतो । पण उणर तो फकत एक हीज लूतडो । उणरो भी घर सुवस नही वसै तद बाप रा जीव क्यूकर सो रो रव । लोगा छोकर न घणा ही समझायो— र 'काळ-कळूटा रा किसा गाव न्यारा बस । ससार मे रग तो फक्त दाय हीज हुव का काळा का गोरा । जिक मे भळ लुगाई रो काइ रग दखणो अर काइ रप, उणरी ता कूख देखणी जोईज । कव है क बीरबल री मा याडी कटरूप ही । पण, बेटो जलम्या बीरबळ जिक री सोभा समन्द पार ताइ हुई ।'

छोरो बोल र केई न भी कोई जबाब नही देवता । पण, व्यवहार वो सागी हीज । छोर र बाप नै घर खाली रैवण री चिंता व्यापी । आपर गनायता मे घूम्या फिरयो टाबर मागण न । लोग बोल्या—'आप टाबर रा मागा करो जिका तो घणी मोटी बात है । छोकरी पेट दुख परी र मर जाव तद एक गनायत रो घर खोलण मे किण नै एतराज । पण मालका ! पैंडा बठी जिको भी तो केई री बेटी है । इयां उपरोथळी बेटी दिया पला आळी री काइ गत हुव ।

छोर रो बाप कवतो—"मालका ! थे फुरमावो जिकी बात तो सोळ आना खरी है । पण हू आपनै भरामा दिराऊ हू क पला आळी न भी फाटसर गाभो अर बखतसर रोटी बराबर मिळती रसी ।'

पण, मालका ! फक्त रोटी अर गाभा सू तो लुगाई जात री उमर नही पक ! इणर टाळ बीजी बाता भी जोईन्या कर है ।"

बाप इणरो काइ उथळो देव । उणन पतो हा क बेटा तो लाख ही उणनै परोट कोनी । जे परोट तो बार-बार ताणो बेजो करणो हीज क्यू पड । वा किसी लुगाई कोनी । लोग तो आधी लूली बावनी, गूगी लुगाया न भी परोट'र घर बसाय लेव । आधी लूली र किसा आधा लूला टाबर जलम है । पण, आ बात ता कोई मान जद क ।

छोकरै री बाप लाठी अर भीत रै बिचाळै फसै ज्यू फसग्यो। घरै ग्रावै जद घर ग्राळा बटका तोड कै—कठै ही ढग ढाळो कर'र ग्राया ग्रथवा यू ही ज ठेका गिणता ग्रायग्या ग्रर, बाहर निकळै जद गनायत ढबूसा देवै—मालका ! क्यू ढबढसा खावता फिरो। घरै मोट्यार-जवान बीदणी बठी है। थे कवो क घर खाली रयग्यो सू ग्रज ताई किसा ग्रापरो बेटो बहू बूढा हुयग्या। थोडो धीरज राखो। धीरज रो फळ मीठा हुया करै है।

बाप तो काइ ठा धीरज धार'र बठ भी जावतो पण, छोकरै री मा उणनै सोरै सास पाणी रो गुटको भी नही गिटण दवती। तान ऊपर ताना ग्रर मेंएा ऊपर मणा—'थान तो घन सू मोह है। बेटो भला ही कठी न ही जावो। थानै तो महिन रो महिन ब्याज मिल जावणो जाईज।"

छोर रो बाप उणनै समझवण री घणी ही कोसिस करतो पण, उणरै तो चोपड्य घड छाट ही नही लागती। छेवट एक दिन ऊथप'र कयो—'भई ! रुपिया तो लाख खरच कर्या भी लोग टाबर ऊपर टाबर नही देवै। ग्रर ग्रडीकता नै ग्रा पलडी बहू मर क्यूकर जाव। ग्रब थे ही सोचलो क इण मे दोस किणरो है।"

बात साफ हुयगी। पलडी बीदणी र बठा, दूसरी बीदणी भाव ही इण घर मे ग्राव कोनी ग्रर पलडी कोइ गाय ढाढो ता है कोनी जिकी न गळाणो खोल र बाहर काढ देव।

घर सगळै री जवान ऊपर बीदणी बीदणी हुवण लागगी। रडक्ती फास ग्राळै दाइ इणरो पापो नही कट तद ताइ सो रो सास तक नही लिरीज। ग्रर इण काट न काढ फैकणै रो जुम्मो लियो सहर ग्राळी नणद जिकी बरसा ताइ सहर मे रैय'र सगळी बिद्या साझ्योडी।

छोकर रो बाप झाडागरजी न लेय'र ग्रायग्यो। झाडागरजी न भैरू जी रो इस्ट। कपडा सगळा लाल टूल रा पर्योडा। माथै ऊपर खुला केस। लिलाड सगळो सिंदूर सू चरचयोडो। सगळ डील मे तल चकचक। हाथ मे एक ग्रभूभा सोट जिक नै लोग बाग भरूजी रो घाटो कव। झाडागर ग्रावत ही 'ज भरूनाथ री हाक मारी। ता पछ ग्रागण र बिचाळै ऊभी बीदणी री डावोडो हाथ पकड'र बोल्यो—'तू ग्रठ भी ग्राय वळी। म्है थनै कित्तरो बार कयो क 'तू भल घर री बहू-बेटिया नै मत सताया कर। पण, तू सीधी तर मानण ग्राळी कठ। ग्रब बाल थारी काई मनसा है ?"

बीदणी सू बातां करतां देख'र कनला लोग लुगाई इचरज करण लाग्या— देखो अे बाई ! झाडागरजी तो पला सू ही इण नैं जाएा है। झाड मतर नहीं हुव तो लोग इणा न क्यू पूछण लाग्या।"

झाडागरजी री बाता सू कनलै लाग लुगाया नै भलां ही इचरज हुयो हुव, बीदणी ऊपर तो रत्ती भर भी असर नही पड्या। झाडागरजी होठा-होठा म कोई मतर जप। इतर मे बीदणी अचाचूकरी झाडागरजी र कमर मे गफ्फी घालली। झाडागरजी गफ्फी छोडावण रो प्रयत्न कर उण पला बीदणी उर्णान लेय'र जमी अूपर सैंचित पडी अर पडती आपरा पग झाडागरजी री छाती म अडाय दिया। पगा र जोर सू झाडागरजो उथळीज र कोई नोय क पावडा आगा जाय पड्या। व कान फडफडाय र ऊभा हुव उणसू पला बीदणी ऊभी हुय र—म्हैं का या थार सार, गिरधारीलाल म्हैं को'या थार सार—आळा गीत गावण लागगी।

झाडागरजी आपरा झोळी झडा समटण लाग्या। छाकर र बाप हाथ जोड र पूछ्यो— बापजी ! कइ पत्तो पड्यो।'

झाडागरजी रीसा वळता बाल्या— म्हन ता पूरो पता पडग्यो। महिन खड सीरो खाया हाडका पाछा सध तो सध अर जे करक रयगी तो गया उमर भर काम सू। थ थारी बीजी तवड करा। म्हार वस री आ बात कोनी।"

झाडागरजी तो आपरा झोळी-झडा साभ'र बूहा गया। बीदणी रो धमरोळ चाल। इण गाव म जतर मतर मे इणा झाडागरजी सू ऊपर अल्ला। व ही जद हाथ झडकायग्या जद बीजी कारी लगाव तो लगाव कुण। सगळा लोग लुगाई एक-बीज र मु ह्ड साम्हा झाक। घर आळा साळा जणा रोवणखाळा चहरा लिया बठा। इतर भीड म सू कोई एक जणो बोल्यो—'झाडा झपाडा आळा बहम तो काढ लियो ! हमै हू कऊ ज्यू करो तो कदाच् बात बण जाव।

बेट रो बाप बाल्या— तू भी कयद भाई ! जे काई कारी लागणी हुव तो लाग जासी। नहीतर बात विगड्याडी ता है हीज।'

'म्हार विचारा सू तो बीदणी र बादी रो उठाव हुयोडा है। एक बादी सौं भूता जितरो करार राख। इण वास्त आप पाधर पग वदजी न बुलाय लावो। —उण सलाह दीनी।

बट रो बाप पगरखी पर'र वदजी नैं बुलावण सारू जावण न सभूयो जितर सहर आळी बटो आडी आय फिरी— थे काकाजी ! रात रा क्यू वदजी न फोडा घाला हो। इण म तो ओपरी छिया प्रतख दीस है सद वदजी बापडा काइ करसी।

पण सहर आळी वेटी री बात दगी कोयनी। लोगा कैयो— 'बुलाय'र देखावण मे काइ हरज है। बस, फक्त पांच रुपिया फीस रा हीज तो लागसी। वैदजी र देख्या पछ रोग दोख रो तो बहम को रव नीं।"

वेटे रो बाप वैदजी नै बुलावण सारू गया परा। छोरै री मा अर बन अनेक भोमियाजी अर पित्तरजी रा नाव लेय'र सीरणिया पूज बोलण लागी। एक दोय देवी देवता र नाव मोसीवणो भी कर्‌यो। जितर वदजी आयग्या। वा आवता ही मगळा सू पैला नाड देखी, स्टेथिस्कोप लगाय र पेफडा मर सास री निग करी अर पूछ्यो—'सिझ्या री टैम इणन काई जिमायो हा।'

सहर आळी नणद बोली—'खीचडो अर कढी जीमी है सा! पण खीचडा अर कढी ता सगळा ही जीमी ही। कोई इण एक्ली ता खाई कानी।"

'भेळो कुण बैठो हो इणरै।"—वैदजी पूछ्यो।

'भेळो तो कोई को बठो नी। छोरा घापरा पला जीम लिया अर म्हारै आज एक्त ो सू म्हानै जीमणो हो कोनी।"

ठीक है। थोडो गरम पाणी मगवावो।' वदजी बोल्या।

बीन्णी री सासू लोटो लेय'र उठी। चूल्है म खीरा घणा ही हा। पाणी झटपट गरम हुयग्यो।

वैदजी आपरै कनै सू दोय च्यार दवाया काढ'र लोटै आळ पाणी म रळायी अर भीड मांयल एक-दोय मोट्यारा नै बुलाय'र कयो कै ज्यू त्यू करनै ओ पाणी इणर पेट मे पहुचाय देवो।'

खाली ऊभ मोट्यारां नै सेवा करण रो मौको मिल्या। वा नाचती-कूदती बीदणी रा हाथ पग झाल'र कब्ज कर लिया। ता बाद एक जणो लोट मायली दवाई उणनै पावण लागा। सोर सास ता वा कायरी दवाई गिटती। पण जार-धिगाण उण लोट आळो पाणी गरळै नाय नाय'र बीन्णी नै गिटाय दियो। पाणी पट म पहूचतां ही बीदणी नाचा कूदो भूलगी अर उकराडा करण लागी। एक दोय उकराड म तो कइ नही निकळ्यो पण तीजोडी उकराड म खीचडो अर कढी बार आय पड्या। वैदजी आपर कनली बटरी सू उण उळटी नै दखी—खीचड अर कढी र साथ धतूर रा बीज!

वदजी पाच मात वीज घोच सू टाळ'र न्यारा कर्‌या अर सावळ ख परख'र बोल्या—'इणर जीमण मे अ धतूर रा बीज किण रळाया ?"

"भाभी नैं जीमण तो सहर ग्राळी मासी पुरस्यो हो ।"––एक दसेक बरसां री छोरी बोली ।

सहर ग्राळी मामी रो चहरो एकदम धोळो फट्ट पडग्यो । वा तर तर री सोगना खावण लागी क––"म्हैं तो बापजी ! बीज-बीज को रळाया नी । म्हनैं तो जे पतो ही हुव तो म्हारी ग्राख्या फूट जाव ।"

पण सोगन धीजा सू किसी बात छान रवती ! सगळा जणा समझग्या क सहर ग्राळी बन जरूर ग्रापर भाई र भाग मे रडक्ती फास न काढ र फक देवणो चावती, पण फास निकळण री जगा उळटी घणी फसगी ।

❖❖❖❖

सनातन बाड़ अर खेतरो

ड्राईवर घर सू गाडी चालू कर न सीधो अठ आय'र ठैरचा करतो। आज भी अठ हीज आयो। उडीक्ता उडीक्ता पूरा दोय घटा बदीत हुयग्या, पण केई दात तक नही पूछ्या। सम रो फेर! जे भाग ही सकड हुवतो तो भरी पूरी दूकान लाय म बळती ही क्यू? लखपति गिणीजणआळा रात रात मे खाक्पति बणग्या। लाखा री मत्ता बात री बात म मुट्ठी भरी राख बणगी। इण सदमैं सू बापजी काळ करग्या। जिको साखीनाई मे खुद री कार चलाया करतो, उणनैं आज पेट रो दरडो भरण सारू लोगा री गाडी ठरडणी पड। जोर भी काईं करीज! परवार री पाळखेट तो जरूरी है ही। उण री जगा जे कोई काची छाती रो हुवतो तो का तो मर पूरा देवतो अर का परवार र लार धूड बगाय'र सामी मोडो बण जावतो। पण, कैया कर है नी—जे जीव नर तो फेर बसाव घर। गाडी ठरडण सू तो किसो घर बण, पेट खराडा भला ही। कमाई-कजाई र खातर तो कोई न कोई बीजो हीलो करणा पडसी। घर गिरस्थी मे बात बात ऊपर पीसा चाहीज। जद ही स्याणा समझणा क्या है क—सामी मोडा कन ज पीसो लाधँ तो व एक पीस रा, घर-गिरस्थी कनैं जे पीसो नही लाध ता व एक पीस रा। ड्राईवर कदाच् आग भी पीसा पदा करण आळी कोई योजना बणावतो, पण बैंक सू बार निकळती दोय सवारघा हेलो कर'र उण र विचारा म विघन घाल दियो। उणन सावळ सच को पडचो नी क उणनैं हेलो कुण मारचो? वो अठीन वठीन लाणा फोरण लाग्या। इतर दोनू जणा गाडी र नडा आयग्या अर बोल्या— 'विस्माईलपुर चलना है, ड्राईवर सा!"

लाबी भुय र भाड र नाव सू ड्राईवर रो गम खुसी मे बदळीजग्यो। बोल्या —"पधारो सा!"

ᴏᴏ

गाडी कोई चाळीस पचास किलोमीटर री स्पीड म चालती हुमी। दरा मारग। सीधी सडक डाभर री। दोनू सवारिया लारली सीट ऊपर आपरी गुरवत कर। बाता करता-करता, बा माय सू एक जण भावैं ही आपरो मू डो बारी मांय सू बार काढ'र लारीनैं जोयो। उणनैं आपरी गाडी रै लार-लार एक धोळै रग री जीप भावती दीसी। उण आपर माथी नैं भी आख री मन सू आ बात थताई। बीजोड

साथी भी आपरो मूडा बार काढ'र लारी नैं जोया। पलई साथी री बात साची निकळी। वा दोनुवा साथ ही आ बात ड्राईवर नै बताई। सवारिया री बात सुण'र ड्राईवर भी आपरो मूडो बार काढ र लारी नैं जोयो। भेंथी घणी को ही नी। उण जीप म ड्राईवर समेत च्यार सवारियां बठी ही। जिको आदमी जीप चलावतो, वो सगळा मे सठो दीख्यो। सगळा र धाळ रग रा घोळा परघोडा। ड्राईवर गाडी न धीरी घालतो बोल्यो— कोई आपा आळ दाई बवता बटाऊ हुसी।'

पण ड्राईवर रो अदाज गळत नीकळ्या। आगली गाडी र धीर पडता ही लारली जीप भी धीरी पडगी। होळ होळ भेंथी घणी पडण लागी तद आगली गाडी आळा र मन म टाभो पडघा क अै कठ ही कोई लुच्चा लफगा नी हुव! सवारिया रा मूडा उतरग्या। बोल्या— ड्राईवर सा! म्हार कन चालीस हजार री मोटी रकम है। इसी नी हुव क अ आपान दाब र रकम खोस लव। घण सदा ही जीत्या कर। आपा ता हा फक्त तीन सीकिया पहलवान अर ब है च्यार रगरूट।"

ड्राईवर एक्सीलेटर थोडो जार सू दाब र गाडी न तेज करतो बाल्यो—"इया आपा किसा पागल हा जिको इणा सू हाथापाई पर उतरसा? घणा ही बम है ता जगतपुर काई घणो अळगो कोनी। आग थाणो है हीज। जे कोई चोर उचक्का अर का लुच्चा लफगा हुया तो थाण सू डरता आप ही कनारो कर जासी।'

००

थाण दार जी "—सेनू सठ एक साथ अटकता अटकता बोल्या। डर र कारण उणा रा होठ सूखग्या इण कारण साफ बाल नी सक्या। ता बाद उणा आपू आप री जीभ हाठा उपर फेर र थोडा हरधा कर्‍या। इतर थाणदार आपरो चसमो बुसट सू पू छतो बाल्यो— हा हा बालो काइ कवणा चावत हो?

'बापजी! म्हे दानू व्यापारी हा। म्हा आज दिनूग काई दस साढा दस वज्या वक सू चाळीस हजार रुपिया कढाया। इण रुपिया री भुगतावण बिसमार्ईलपुर में करणी ही इण कारण म्हा एक टक्सी भाड करी। म्हे सीधी सडक चाल हा इतर ही एक धोळ रग री जीप म्हान लार आवतो दीसी। पला ता म्हा जाण्या क म्हार आळ दाई ही कोई बवता बटाऊ हुवला। पण जद म्हे गाडी न धीमी घाली तद उणा जीप आळा भी आपरी जीप नैं धीमी करली अर लार भेंथी रख्या चालता रया। तद म्हानैं टाभो पडयो क जीप आळा री मनछ्या जरूर ही खाटी है। म्हान तो बस आपरो हीज आसरो दीख्यो अर म्हे अठ आय हाजर हुया।"

'अब हमकू क्या करणा है? थाणदार आपरा चसमा आख्या माथ सावळ चढावतो बोल्या।

"ग्राप नै ता म्हारी जान ग्रर माल री रिछ्या करणी है, सा !" ग्रा क्वनो-क्वतो वो उठ्यो ग्रर ग्रापर हाथ ग्राळी रगजीन री बग थाएदार ग्रागली मेज र ऊपर धरदी ।

चाळीस हजार सू भर्योडी बग देखता ही थाणदार री ग्राख्या चमकण लागगी पण वो ग्रापरी घूण नीची घाल र इण चमक नै लुकाय ली । थाणदार बंग उठाय र उण री चन खोलता थका हेलो कर्यो—'ग्रबदुल्ला ! ग्रो ग्रबदुल्ला !"

हेल र साथ ही एक डीघो-सो सिपाही कमर मे ग्रायो । बोल्यो—"हुक्म !'

थाणदार बग ग्रबदुल्न नै पकडावता बाल्यो—देखा ! इस बग म चालीस हजार रुपिये है । इसकू ग्रालमारी म जाबते से रख देणा ।"

ग्रबदुल्लो बग लय'र कमरं सू बार निक्ळ्यो इतर ही थाणदार उणन भळै हेलो करयो—"ग्रबदुल्ना ! जरा सा पाछा ग्राणा ! फकत रकम के जाबते से क्या होगा ? इणा सठा की भी ता जाफ्त करणी है ।'

ग्रबदुल्लो सागी पगां ही पाछो घिरग्यो ग्रर हाथ री सन सू उण दोनुवा न ग्रापरं साथ चालण रो इसारो कर्यो । उण सिपाही रा वडा बडा बारं निक्ळ्योडा डोळा ग्रर भरवी मळमूछा देख र एकर तो व दोनू जणा डर्‌या, पण थाण र बारल पासी जीप री हरडाट सुण र बोला बोना उठ र उण सिपाही र लार लार टुर बहीर हुया ।

oo

"पेसकारजी ! इणो ड्राईवर साव रा बयान कलमबद कर लेवो ! —भ्रष्टाचार निरोध कार्यालय र ग्रधिकारी ग्रापरी कुर्सी ऊपर बठां ही हुक्म दियो ।

'ग्रठीनै पधार जावो, ड्राईवर सा ! —पेसकार हेलो मार्‌यो ।

ड्राईवर ग्रधिकारी कन सू उठ'र पेसकार र सामैं जाय बठ्यो । पेसकार ग्रापरा कागद-पत्तर सिलसिलैवार लगावतो बोल्या—"थारो नाव ?"

"कांतिचन्द्र !'

"बाप रो नाव ?"

"विमलचन्द्र !'

"मोजो ?"

"दोलतपुरो !"

'कौम ?"

"बगाली महाजन, मेहता !"

"धधो ?"

"व्योपार ! पण, नही-नही भूलग्यो सा ! आजकाल ड्राईवरी करू हू ।"

"था सवार्या न थारी गाडी म कणासीक बिठाई ?"

"आ ही काई साढी-क दस बजी-सी !"

'थे वा सवार्या न पला सू जाणता ?'

'ऊ हू !"

'थाण कित्ता बजी पूग्या ?'

'कोई बार-साढी बार रो टाक्डा हुसी ।'

'थानै किया ठा पडी क वा र कन चाळीस हजार रुपिया हा ?

"सवार्या खुद ही बताया हो !

थे आ किया कय सको क उण सवारियां री हत्या करीजी है ?'

ल्हासा न हू खुद जगळ म फक र आया हू सा !'

थे उण बारी-बद ल्हासा न खास र न्यो ?'

'ना सा !'

तो थान किया ठा पडी क थोरी म बद ल्हासा था री सवारया री ही ?'

जी इण दस हजार री रकम सू ठा लागी ।

अ रुपिया थानै कुण दिया ?'

जीप चलावण आळ आदमी !'

'उणन पिछाणो हा ?

चहर मोहर सू तो जाणू हू पण नाव पत री जाणकारी कोनी ।'

'उण आदमी न पलोपात कठ दय्यो ?"

'जगतपुर म कलक्टर दफतर र ओळ दोळ !'

भळ कई कवणा है ?'

"बस मन तो फक्त इतरो होज कवणो है क हत्यारां नै जोगतो डड मिलणा चाहीज । नही तो अ ह्ल्यि ह्ल्यि मानख रो जीवणो ही हराम कर देसी !

आछो ठीक है । लेवो करो दसखत ।' कागज अर होल्डर ड्राईवर म झलावतो पेसकार बोल्यो ।

ड्राईवर उण कागजा पर आपरा दसखत कर दिया ।

□□

"सावधान ! तुम सब के सब भ्रष्टाचार निरोध विभाग के जवानां द्वारा घेरे जा चुके हो। जरा सी भी हरकत आपको गोली का शिकार बना देगी।"—भ्रष्टाचार निरोधक अधिकारी आपरी कडक्ती आवाज सू कयो ।

ड्राईवर अर अधिकारी रो अन्दाजो सौ टका सही निकळ यो । जे थोडी-सी भी देरी लाग जावती तो थाण आळा उण बोरीबद ल्हासानै रफा दफा कर देवता ।

अधिकारी रो हुक्म सुण'र उठ ऊभा जिका सगळा आपूआपरा हाथ ऊभा कर दिया। अधिकारी री सिनकार सू साथ आळ जवाना वा सगळा र हाथा मे भचोभच हथकडिया घाल'र जरू कर लिया। ता बाद उणा र सामै ही बोर्‌या रा मूडा खाल'र ल्हासा री ड्राईवर कनै सू सिनाखत करवाई। ड्राईवर उणा नै चोखी तरा ओळख लिया। अधिकारी नै आ बात जाण'र घणो अचूभो हुयो क उण ल्हासा र कठ ही चोट फेट या घाव रो सनाण तक को हो नी। कदाच् उणा री हत्या बिजळी र करेंट सू हुई !

अधिकारी उणा मायल बडोड आदमी कानी हाथ रो इसारो कर र पूछ्यो—"क्यू, ड्राईवर साब ! आन पिछाणो हो ?

हुक्म ! चोखी तर ! इणा हीज आपर हाथा सू मनै बगसीस दी ही।'—ड्राईवर नीची नाड घाल्या कवतो रयो। उणन आ जाण र और भी घणो अचूभो हुयो क जीप चलावती बेळा जिको आदमी साद कपडा म हो, वो सागी ही आदमी अबार थाणदार सू भी ऊपरल अफसर री वडदी म हो।

□□□□

आंटो

रतनसिंह न आपर काना ऊपर विस्वास नहीं हुयो। उण आपर छोटकिय भाई र मुहड सेठा रैं समाचार नै फक्त रल ही समझी। फिर भी उणर मन म गिचर पिचर जरूर पैदा हुयगी। हा आ वात साळ आना खरी है क सेठ ठिकाण री सतपीढियो बोहरो है, पण फिर भी है तो वाणिय रो बटो होज--तुलसी कद न कीजियै वाणपुत्र विसवास--ज सेठ, खोली काढ दी तो घर रा रवा न घाट रा। वनैं वई लुगी-लुगो हो उणनैं तो सेठ र पलड हिसाब किताब म बदाय दिया। हमैं फक्त रैया है *म्हारा हाडका जिका नैं बेच्या टका ही वट कोनी।* पण नहीं इया सेठ क्यू कर सतपीढियो सीर तोड सक है। छोटकियैं भाई नैं दाबर जाण र ही उणा रल करी हुसी।

रतनसिंह र सुरता फुरत सठा र अठ जाय र वात री हक्की नक्की काटण री सोची, पण कोटडी आय-गय मिनखा सू ठसाठस भर्याडी दिन भी राम पुराणी वाकी अर माथ ऊपर धोळा बाधयाडो डवको मारतो काई चोखो लागसी, जाण र वा आपर विचारा नैं कागला नावोळी गिट ज्यू गिटग्यो।

सिझ्यारी जीमणवार सुरू हुई। रतनसिंह रा पिता गाव रा पटायत तो हा होज, साथै ही बहुपरवारा भी। उमर भी भोगती पाई। आपरी वायाडी बाडी न हरी भरी छोड'र च्यार बेटा अर पदरै सोळै पोता र काध चढ'र सुरग सिधार्या। वाया वेट्या, जवाई भाई सगा सोई, हितू मुलाकानी धरमला-पापला र अलावा *बमीरा बूढा ठरा लोग भी काटडो म बणया रव। ठाकरा रो मरणा।* रतनसिंह मोभी बेटो, जिक रा काळजो रुवागज उरळो। बापरो मरण कोई बार-बार थाडो ही हुव जाण'र वा आपर मनरी हुव्व काढ।

सिझ्यारी जीमणवार सळटाय र रतनसिंह पाधरो सेठा री हवली हूक्यो। सेठ उण होज घडी जीमा जूठा कर र चोक सू बाहर आवता हा। रतनसिंह नैं आयो दख र उणा दोय तीन टकारा ली अर आऊकार देवता थका बाल्या--"आवो रतनसिंह ! हए क्यू कर आवणी हुई ?'

'आवण नैं तो कठ वखत हा सेठा ! घर तो भाई-गनायता सू उफण है, पण दुपार था छोटोड भाई साथ जिका रल करी उणर खातर आवणो पड्यो।

"तो थे दुपार आळी बात नै रल ही समझी ?'

"और नही तो काई समझता ।

'वा बात रल नही है, रतनसिह !

"रल नही है तो और काई है, सठा ! म्हार कन जिको लुगो तुगो हो सू तो थान पुराण हिसाब र पट देय दिया अर हमैं कारज आडा दिन फकत च्यार रया है । चौथ दिन तो घर मिनखा रो मगरियो मडसी, उणानै घालसा काई ?'

'वा बात तो थे जाणो, रतनसिह ! म्हार सू तो ताब मे आवती लखावै कोनी । म्हारो सारो बारो हातो जितर धिकाय दियो । हमैं !'

'हमैं काई हुयग्यो ?

छोरा काबू मे कानी, रतनसिह ! आजकाल र वखत नै थे जाणो ही हो ।'

सेठा, क्यू छोरा री आडूणी लेवो हा, छोरा न था पदा करया है थानै वा नही । आपार सात पीढी रा आलण है, उण नै इस मौकै खीली काढ र तोडो मत । जिक म वळ म्हैं म्हारी मरणी मर'र थारो पुराणो हिसाब किताब राई रत्ती अर पाई पाई रो चूक्ती कर दियो । थार सू ताव नही आवतो तो थानै हामळ नही भरणी ही । हू म्हारी सौ मरणी मरतो, पण बापरो कारज तो करतो हीज ।

"थे ठीक क्वो हो रतनजी ! पण हामळ भरया बिना म्हारो पुराणियो करजो क्यू कर आवतो ?

"तो था करजो चूकण खातर ओ तोत रचयो !"

"इया ही समझ लेवो ।

"सेठा ण बात ऊपर एकर भळै चोखी तर सोच विचार लेवो । आपा र सात पीढी रो सीर है अर आवळा भेळी गाडूयोडी है ।'

" ! —सठ मून हुयग्या ।

"सेठा मून मत हुवो । म्हारो बाप ससार मे कोनी । हू धोळो बाधया थारै बारण आयो हू । थे म्हारी नही तो इण धोळ री तो लाज राखो —आ कय र रतनसिह आपरो पोतिया उतार र सेठा र पगा मे मेल दियो ।

'अर ! नही-नही, म्हार सू पार को पडनी, म्है एकर कय दियो जिको कय दियो ।

'सेठा ! फोर अर कवो ।'

फुर फुराव कई कानी रतनसिह ! थे थारी वडी बटो ।"

'तो था ता थारो मतलब सू मतलब सोच्यो ।

"वाणिय रा बेटा हा, मतलब तो पला सोचणो पड़।'

पण म्हारो तो मानखो तिरभड़ कराय दियो।

"पीसा बिना तो मानखो भडसी हीज।"

' पण कालर दिन जिक पीसा थान चुकाया व किसा पीसा को हा नी।'

"था किसा धरमाद रा न्यिा है, रतनजी !'

पण व तो ब्याज पड़ब्याज रा करयाडा पीसा हा जिक बाद म भी चुकाईजता रवता पण ग्राज तो सामान लावण नै नक्द जाईज।

'जिक तो जोईजसी !"

' सावळ सोच लिया, सेठा।

' चोखी तर सोच लियो।'

तो जाऊ हूँमै ।

' नहीतर किसा ग्रठ बठा ही रसो।

रतनसिंह र मन मे वाकी म चाकी रई। उणर ग्राख्या र ग्राग अधारी सी ग्रायगी ग्रर पग मण मण रा हुयग्या, पण उठ बठण म कोई सार नेही दीस्यो, जद निसकारा नाख उठग्यो।

ठाकरा र खरच मे गाव तो सिधरी हो हीज, पण गाव र ग्रोळल दोळल पुग रा मिनख भी मोकळा ग्रायग्या। घर र ग्रगवाड सू लेय र कोटडी ताइ मिनख लुगाया ग्रर टाबर माव ही नही। न्यिग दस वज्या सू सुरू हुई जीमणवार ढळिया र तीन बज्या ताई चालती रई। कई केई जणा ता सात मिठाया र लाभ मे दुबार भी फुरग्या। रतनसिंह खुल दिल सू जीमाव निहोरा कर कर र। जीमा जुठ र साथ साथ भाणा कासा भी निबटावता जाव।

सगळा काम सिध चढया पछ पाघड्या बाधण री बारी ग्राई। राज पुराहितजी थाळ लेय र कोटडी ग्रागल चौक म ग्राय बठा। टीक री पाघ रतनसिंहजी न दिरीजी। राजपुरोहितजी स्वस्तिवाचन मगळ पाठ ग्रर नवग्रह शाति इत्याद करवाया पछ पाघ लेय र उठया पण रतनसिंह पाघ बधावण सू मुकरग्यो। लाग सगळा हाका बाका रयग्या। भाई गगायता, मळ्ढ्या ग्रर चौधरी—कामदारा इण रो कारण पूछ्यो तो रतनसिंह कयो-- म्हार पिता रा कारज सिध चढ्यो कानी।

काइ बात करो हो रतनसिंहजी ! बार दिना ताइ धूपटा उड्या ग्रर मळ खरच म सात सात मिठाया हुइ कारज सिध चढण मे म्हान ता कठ ही कसर दीसी कोनी --लोग बोल्या।

"एक कसर है'—कवतो रतनसिंह उठ सू उठर घर मे गयो। लोग सगळा सूना हुयोडा ऊभा। वँ घर मे जाय'र पाचू सस्त्र बाध्या अर पिछोकड ग्राळी झाक मे बठे ऊठ ऊपर चढी र पीतळिय पिलाण न कस्यो। ऊठ नै खाच'र बाहर लाया तथा गवाड र बिचाळ झकाण'र चढग्यो। लोग सगळा तसबीर लिख्योडा सा ऊभा देख।

रतनसिंह पाधरो सेठा री हवेली ढूक्यो। सेठ दीवानखान मे बठा मुनीमजी न हिसाब किताब समझाव। रतनसिंह र ग्राख्या मे खून चढ्योडो। उण जावता ही सठ न कोकार्यो— सठ बोल देखा थे थारो मतलब काढ्यो'क म्हारो मानखो लियो।'

रतनसिंह न इण सरूप मे देख र सेठ री घिग्घी बधगी अर लुकण खातर झऊपा मारण लाग्यो पण दीवानखान रा सगळा बारणा खुला, लुक कठ ? जितर रतनसिंह री बदूक सू गोळी छूटी जिका पाधरी सेठा र डाडर मे लागी। सेठ उठ हीज पडग्यो। उणर फीफर माय सू सासरा फरडटा सुणीज। मुनीम बापडो बेहास हुय र सेठा र पसवाड पसरग्यो।

रतनसिंह सागी पगा पाछा घिर र कोटडी ढूक्यो। ग्राग गाव-गर नूव ठाकर री बाट जोव। ग्रावते ही हेलो कर्यो— पुरोहितजी ! बापरो कारज हमैं सिध चढ्यो है पाघ घलावो। राजपुरोहितजी तिलक ग्राळो थाळ लेय र उठ्या अर उण माय सू केसरिया पाघ उठाय र रतनसिंह न झलाय दी। रतनसिंह माथ ऊपरलो पोतियो उतार र पाघ रा च्यार ग्राटा देय लिया तथा सगळा जणा सू जुहारडा कर र ऊठ न तडकाय र गाव र बाहर हुयग्या।

□□□□